से यहापर केवल मन्त्र, तंत्र, यन्त्र विद्याही कुछ प्रकाशित कीगई हैं। इस विद्याकी परीक्षा हमने कईबार देखी है अनेक मंत्र तंत्र करने के कारण से हम बहुत से अद्भुत २ कार्य अपनी दृष्टि से देखते हैं अर्थात् मन्त्रसे चोरके मुख में रुधिर निकल आता है जल, चावल राख, उडद, जौ, आदि मन्त्र से पढे जाकर हर एक कार्यपर अपना तेज बल शीघ्र दिखादेते है। हमने यहातक देखा है कि मन्त्र से सांप बिच्छू पकड लेते हैं तथा मन्त्रों से इनका विष उतार देते हैं, मन्त्र से दूर देश की वस्तुतत्काल मंगा देते हैं। और यह विद्या मुसलमान जाति में भी अधिकतासे फैली हुई है और मन्त्र विद्या का प्रचार नैपाल राज्य चीन राज्य भोट राज्य आदिको में भी भली प्रकार से छारहा है परन्तु अब पूर्वसमय की तुल्यतासे न्यूनही है॥

बस हम इतनाही लिखते हैं कि-तंत्र विद्याको मिथ्या प्रतिपादन करने में कोई भीसामर्थ्य नहीहै जिसके कार्य हम नित्यप्रति आस पास होते देखते हैं उसको हम किस प्रकार से झूंठा कहसक्ते हैं। हमको उस विद्या की आंतरीय बातोंको न जानकर उसपर से विश्वास उठाना मूर्खताका काम है। हा परीक्षा करना बुद्धिमानोंका काम है शास्त्र में लिखा है कि (यत्नेकृते यदि न सिद्ध्यति कोत्रदोषः, अर्थात् पुरुषार्थ करनेसे उसकी बिधि अनुसार यत्नकरनेसे जो मन्त्र सिद्ध न होवे तो कोई अपनीही भूल समझना चाहिये यत्रको दोष नहीं देना चाहिये, क्योंकि-कर्तृगुणसाधन वैगुण्यात् पूर्व समयके अनुसार आजकल इसविद्याकाप्रचार अत्यन्तन्यूनसे न्यूनहै और कहीं२वर्ताव थोडा२ देखने में आताभी है पर तौभी थोडानहीं है।पहिले यह विद्या गुप्त थी और अब छिपाये नही छिपती है बहुतसी पुस्तकें मन्त्र शास्त्रकी अनेकानेक यन्त्रालयों में मुद्रित और प्रकाशित हुई हैं और आप सब महाशय दृष्टीगोचर करते हैं परतु आप इस अनुपम (मन्त्रसिद्धि) कोभी अवलोकन करेंगे और अपने मुक्तकण्ठ से इसकी महिमाका भण्डार खोलेंगे कि-वाह ! वाह !! वाह !!! क्याही श्रेष्ठ रत्न है ? बस

अब हमभी विशेष लेखनी उठाना उचित नहीं समझते हैं बुद्धिमान् स्वयं जानलेवेंगे हां हम आशा करते हैं कि मंत्र विद्याका झण्डा दम पर दम विशेषही लहरें लेकर भारतवासियोंकी मनोकामना पूर्ण करेगा।

प्रियवरों! देखो मन्त्र विद्याके बलसे अग्नी प्रज्वलित होजाती है मन्त्र के प्रभावसे भूत, भविष्यत, वर्तमान,तीनोंकालका ज्ञान होजाता है मन्त्र बलसे मनुष्य कालबली को जीत लेता है और मन्त्रके प्रभावसे ही मनुष्य नानाप्रकारकी करामाते दिखाया करता है और मन्त्रके तेज बलसे ही पुरुषकी आकृतियें विलक्षण होजाती हैं और मंत्र विद्याके प्र भावमेंही मारण, वशीकरण, उच्चाटन आदि प्रयोग भली प्रकार किये जाते हैं।

बस हम अपने पाठकोंको यही सुनाते हैं कि—एकवार मंत्रविद्या की अवश्य परीक्षाकरके मन्त्र विद्या को सिद्ध तथा सत्य समझें और निश्चय पूर्वक विश्वास करें और मंत्रविद्या का बतलाना तथा लिखना अत्यंतही कठिन काम है। हमने अत्यन्तही परिश्रम अर्थात् तन, मन, धन से इस अत्यन्त गुप्त विद्यामन्त्र शास्त्र को परोपकारार्थही और आप महाशयों को केवल विश्वासदृढ करने के निमित्तही इस अनुपम (मन्त्र सिद्धि) को प्रकाशित किया है अब परीक्षा करना तथा विश्वास करना आपही सज्जनो का काम है। विलायत में इस विद्याकी बहुतसी पुस्तकें मुद्रित हुई हैं, इस विद्याके लिखने में हमको बहुतसी पुस्तकों के देखने के उपरान्त परिश्रम तथा अनेक२साधुमहात्माओं से भेट तथा व्यय भी अधिकही हुआ है इस कारण यदि इस योग्य अनुपम पुस्तक से भारतवासियोंका कुछभी लाभ वा उपकार होगा तौ मैं अपने परिश्रमको सफलही मानूंगा॥

प्रियवरो! आज कल बहुत से नूतन २ मत और नास्तिक मनुष्योंने अपनी २ कल्पना अनुसार अनेक २ पुस्तकें निर्माण करी हैं उनके . गे हमारे भोलेभाले भारतवासी इधरके रहे न उधर के रहे अर्थात्

बुद्धिःकर्मानुसारिणी मनुष्य जैसी पुस्तक देखेगा उसकी तत्काल वैसीही बुद्धि होजायगी इसकारण प्रथम तौ मनुष्य अपनी आस्तिक बुद्धि करै और नूतन २ मत तथा नवीन २ पुस्तकोंके छोड़नेकी दृढ़प्रतिज्ञा करै तदनंतर वह सावधानहो औरअपनेसनातनधर्मपर आरूढ़ होकर तत्पश्चात् श्रद्धा तथा विश्वास सहित इस पुस्तकका पाठ प्रारम्भ करै अन्यथा नहीं क्योंकि कहा है कि (पढ़ पढ़ाय जो लेत हैं बिन गुरुके उपदेश। फलीभूत नहीं होत है यह प्रमाण सब देश) हम ऊपर लिख आये है कि यह विद्या गुरुलक्ष है बिना श्रद्धा विश्वास परिश्रमके सिद्ध होना अति कठिन है जो पुरुष अतिभक्त तथा ज्ञानी हैं वह पुस्तक द्वारा भी कार्य्य सिद्ध करलेते हैं क्योंकि लिखाहै (विद्यागुरुणांगुरुः) अर्थात् विद्या गुरुओंकी भी गुरु है परन्तु ऐसे सज्जन बहुत कम है जो पुस्तक द्वारा समस्त सिद्धियोंको प्राप्त करसकें।

बस क्या कहो यहएक विचित्र अपूर्व निबन्धहै किसमस्त झगड़ोंको मिटाकर दृढ़युक्ति प्रमाणसे इस बातको सिद्ध करता है कि मनुष्यको किस २ मन्त्रपर विश्वास करना योग्य है इस ग्रंथ का विषय दुराग्रह रहित, साक्षीदृष्टी का कथन समूह मतके सिद्धांत का सार और जगत् के समग्र मन्त्रविद्या ग्रंथों के कर्ता विद्वानों का आंतरीय और गोप्यनीय आशय है॥

मंत्रों का सत्यासत्य निर्णय करना भयंकर ज्वाला में जलतेको अमृत धारा है इस ग्रंथ के पठन श्रवण का अधिकार तौ प्राणीमात्रको है परंतु मैं यह ग्रंथ उसी अधिकारी के प्रति निर्माण करता हूं जिसकी बुद्धि अत्यंत उत्तम और सनातन धर्मानुसार सूक्ष्मा सूक्ष्म गोप्यविद्या की बातचीत समझ सक्ती हो जो २ चमत्कारी विद्या मैंने इस ग्रन्थ में लिखी हैं वह चाहे कहीं २ किसी २ महापुरुषको आती भी हो परंतु अद्यापि इस मंत्रविद्या का आजपर्यंत कोई अन्य भाषा टीका सहित नहीं दृष्टिगोचर हुआ है अतएव इस अभाव के विनाश के कारण इस

प्रत्यक्ष विद्या [मन्त्रसिद्धि] का जन्महुआ है अब पालना करना आप भारतनिवासियों के आधीन है ॥

इस ग्रंथ के आधार व्यवहार करने से मनुष्य निरन्तर सुखके समुद्र में डूबजाता है परंतु प्रसंग से अन्य २ बातेंभी इस ग्रंथ में आजाती हैं कि जिनके न जानने से मनुष्य अनेक २ प्रकार के कष्ट सहाकरता है और २ वृथा २ बातोंमें अपने तन, मन, धन को धूलि में मिलाता है ॥

इस ग्रंथ में हमने सब कुछ लिखदिया है परंतु जिसको फिरभी कुछ संदेह रहे तो हम से स्वयं निवारण करै, इस ग्रंथके गुप्त२ भेदोंको जानना अत्यंत चातुरता का काम है यह बड़ा हर्षका विषय है कि आज फिर सज्जनोंको वही प्राचीन मन्त्र विद्या दृष्टिगोचर होरही है, बस ऐसे सुअवसर में मंत्र तंत्र शास्त्रको लोप हुआ देखकर विचार उत्पन्न हुआ कि इस अनुपम प्राचीन शास्त्र का उद्धार करने के लियेभी सब प्रकार के यत्न करना अत्यंत उचित हैं, यह निर्द्धारित कर बहुत से मनुष्य जहां तहां नियुक्त करदिये कि वह मंत्रविद्या को प्रकाशित करें अब हर्षकी बात है कि यह अत्यन्त कठिन यत्न सफल हुआ कि यह अपूर्व तथा विचित्र पुस्तक रचना कर के जन समुदाय में प्रचारित कियागया है इस पुस्तक में समस्त मंत्रों का सारभाग निचोड़कर भर-दिया है प्रत्यक्ष में क्या प्रमाण है ।

संवत १९४८ में हरिद्वार के कुम्भपर जो मैंने अनेकमत मतान्तर के विषय में कई प्रकार से वाद विवाद होते देखा सिद्धांत उनका यह ही प्रतीत हुआ कि मनुष्य इस सत्यविद्या अर्थात् मंत्रविद्या से बिलकुल शून्य हैं कि जिसके जानने से समस्त प्रकार के वाद विवाद मिटजाते हैं समस्त प्रकार के बड़े २ झगड़े शांत होजाते हैं, बिस में तो उसी दिन यह उमंग उठी थी कि आजसे इस सत्यविद्या का डंका बजादेना चाहिये परंतु यह बीज बहुत शोच विचार के अनंतर अंकुरित और प्रफुल्लित होनेकी संभावना पूर्ण करनेवाला हुआ है ॥

यो मंत्रः सगुरुःसाक्षात् यो गुरुः स हरिः स्वयम् ।
तस्मात्सर्व्वप्रयत्नेन मंत्रदीक्षांसमाचरेत् ॥

जो मंत्र है वही साक्षात् गुरु है, तथा जो गुरु है वोही स्वयं भगवान् है इस कारण सम्पूर्ण यत्नों करके मंत्रादीक्षा गुरुके समीप अवश्यग्रहण करनी चाहिये ।

प्रियवर महाशयगण ! इस अनुपमग्रन्थका ऐसा चमत्कार और तेज विलक्षण है कि आप पढते २ ही विचित्र शक्ति शाली सिद्धि को तुरन्त पहुंच जाओ और जिस अधिकारी को सुनादो वह सर्वस्व आपको सिद्धजानकर तन, मन, धन से सेवाकरने को उपस्थित होजाय क्या यह थोडासा प्रकाश है ! नही यह सूर्य्यरूपी ग्रन्थ अपनी सिद्ध किरणों द्वारा संसारके अविश्वासी मनुष्योंका अंधकार शीघ्रही नष्ट करेगा, बहुत से मनुष्य इस मंत्र विद्या में अपने प्राण हवन करचुके हैं, और बहुत से चातक की नाई हरसमय प्यासेही बनेरहते है, और बहुत मनुष्य तन, मन, धन, से सेवा करनेको तत्पर रहते हैं और बहुतसे नानाप्रकारके क्लेश तथा दुःख उठाते हैं परन्तु हाय इस आर्य्यावर्तके भोलेभाले भाईयोंका दुःख देख मन में अतिदया और करुणा उपजी कि इन बेचारे स्वदेशियोंको कोई ऐसा चमत्कारिक तथा विलक्षण मंत्रविद्याका अनुपम भाषाटीकासहित पुस्तक प्राप्तहो जिससे यह अपनी २ मनोकामना पूर्ण करें और हमको जन्मजन्मांतर तक अपने गद २ कण्ठ से आशीर्वाद देते रहें ।

इस ग्रंथमें हमने अनेक २ टिप्पणी अत्यन्त परिश्रम करके तथा शोध २ कर संयुक्त करी हैं कि जिनके भावार्थको सज्जनजन गुप्तभाव से मनही मन में जानलेवें और प्रायकर उन्हीं २ मंत्र तंत्र, व यंत्रों का सारांश झलकाया है जो प्राणिमात्र सुगमतासे सिद्ध करसकें विशेषता यह है कि जहां २ टिप्पणी सारांश में भी कठिन २ शब्द आगये हैं उनको क्रमसे अंकोंके अनुसार सबसे नीचे टिप्पणी में भिन्न २ आनन्दपूर्वक वर्णन किया है ॥

हे सज्जनों ! आपको ऐसा सुअवसर प्राप्त न हुआ होगा कि ऐसा गोप्य, अलभ्य अगोचर अर्थात् जो हृदय के रुधिर दान करनेसे भी नहीं प्राप्त होसक्ता था और प्राचीन मनुष्य जिस गुप्तरत्नों को बाहरकी हवा नहीं लगनेदेते थे और जिसके बिना हमारे भारतनिवासी सत्यविद्या से शून्य होरहे थे और जिसकी तरफ महाशय चिरकाल से चकोरकी नाई एक दृष्टी कर आशा लगाये बैठे थे और हमने तिसी कल्पवृक्षका बीज चिरकाल से बोरक्खा था परंतु आज उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कृपा कटाक्षसे वह बीज अंकुरित और प्रफुल्लितहोने लगा है सो आशा है कि यह कल्पवृक्ष भारतनिवासियों की समस्त प्रकारकी कामनाओं को शीघ्रही पूर्ण करेगा बस अब प्रत्येक मनुष्यइस ग्रंथ का अवलम्बन करनेपर धर्म अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थोंको प्राप्त होसक्ता है ।

बडे आश्चर्य की बात है कि इस गोप्य विद्या के अनन्त गौरव को प्रकाश करने में अद्यापि कोई महाशय भारत खंड से उद्यत न हुए और आजपर्यंत इस अमूल्य मंत्र विद्या को शुद्धरूप से छापने का परम कर्तव्य पालन न किया वास्तव में यह रहस्य अंत प्रसंशनीय है कि जो हमने इस अत्यंत पुरुषार्थको स्वीकारकर दृढता पूर्वक सब से पहिले करोडपति धनरत्न पूरित भण्डारसे अधिक नामक (मंत्र सिद्धि) को आप अगणित महाशयों की सेवा में अर्पण करनाही मुख्यबुद्धि का श्रेष्ठ कार्य्य समझा है इस विचित्र रत्नकी तुल्यताके सामने सारे संसार रत्न तेजहीन होगये हैं इसकी सत्यता आप को पुस्तक अवलोकन करनेसे स्वयमेव विदित होजायगी ऐसे सुअवसर का त्याग करना पश्चात् विशेष पश्चात्ताप का भागीहोना है बस हमने सबके सुभीते के कारण इस पुस्तक का मूल्य भी अत्यंत अल्पही रखाहै जिसमे धनी निर्धनी सब कोई सरलतापूर्वक पा सके अर्थात् साधुमहात्मा पंडित विद्यार्थी एवम् सर्वसाधारण से केवल दो २) रु० मात्र और राजा महाराजा सेठ साहुकारों से उन के सम्मानार्थ ६) रु०

खा है। कोई भी महाशय इसपुस्तकसे किसी प्रकारका लेख उठ्या न
। क्यों कि इसका सर्व प्रकार का अधिकार ग्रन्थकर्त्ताने स्वाधीनही रक्खा
आर सर्कारी सन् १८६७ के २५ के एक्ट के अनुसार रजिस्टरी
राया है कि कोई मनुष्य इसके मुद्रित कराने का सकल्प न करें जिस
वृथा हानि उठानी न पडे, सूचना देना हमारा परमकर्त्तव्य है। इस
हन, दुस्तर, कठिन ग्रन्थमें जो कुछ निरूपण किया है वह दृष्टी दोष
खकर विद्वानो को विचारना योग्य है अर्थात् जहां कही मूलमें तथा
कि टिप्पणी में कोई अशुद्धि रहगई हो तौ कृपा पूर्वक सूचित करें
के जो दूसरी आवृति में उसत्रुटि को दूरकर दिया जाय।

इस ग्रन्थ में चुनी २ वातो का सारांश वर्णित है ग्रन्थविस्तार होने
भय से बहुतसे लेख निकालदिये गये हैं वस्तएसे प्रभावशाली अद्भुत
लौकिक ग्रन्थका स्वाद ग्रहण करने के लिये किस हृदयका मन
चलेगा परन्तु दुस्तर है प्रथम तो ग्रहस्थी में सैकडो विपत्तियें लगी
हती हैं कभी आपरोगग्रसित कभी बाल बच्चोंको ज्वर खांसी कभी
श पर देश आना जाना, कभी लडके का विवाह कभी लडकी का
द्विरागमन इसप्रकार अनेक काम बने रहते हैं कहांतक लिखें भला अव-
यवहार सिद्धि है तौफिर मंत्रशास्त्र को क्या दोष है? और जो
विधि अनुसार मन्त्रप्रयोग करते भी हैं तौ भी उन के मन एकाग्रनहीं
हते हैं अनेक २ चिन्ता, संकल्प उठते रहते हैं। ऐसी दशा देखते २
मन इस ग्रन्थ को सर्व श्रेष्ठ सर्वांग सुन्दर सर्वप्रकारसे शुद्ध होने का
परिश्रम करनेमें किसीप्रकारकी त्रुटि नही करी है और इसग्रन्थका अच्छा
बुरा होना विद्वान् लोग स्वयंही जान लेंगे क्योंकि-शास्त्रमें लिखा है।

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपिवा।

सुवर्णके खोटे खरेकी परीक्षा अग्नीमें धरने से ज्ञात होजाती है
इस अब मम्म विद्वा यहही प्रार्थना है कि-एक बार इसपुस्तक
को आद्योपान्त अवलोकन करें और हमारे अत्यन्त परिश्रम को सफल करें।

नोट—बहुत से धूर्तो ने ठग २ कर कागज के घोड़े दौड़ा २ मनुष्यों को ठगा है॥

धन्यवादके पात्र।

मुरादाबाद निवासी पण्डित व्रजरत्न भट्टाचार्य्य तथा ... लाला गणेशीलालजी तथा पण्डित हरिशङ्कर शर्म्मा अध्यक्ष पुस्तकालय हरिद्वारको तथा पं० बलदेवप्रसाद मिश्र को मैं हृदयसे धन्यवाद देताहूं कि उन्हों ने भी इस ग्रन्थके शोधने में परिश्रम उठाया है।

जगत् प्रसिद्ध महात्मा कामराज कुलावधूतके उत्तराधिकारी कालिकानन्द भी विशेष धन्यवाद के पत्र है जिन्हों ने मेरे उत्साह द्विगिण किया है।

प्रकाशक—

पंडित-गौरीशङ्कर शर्म्मा

अध्यक्ष-संस्कृत पुस्तकालय

हरिद्वार.



संपूर्ण कामनाओंकी पूर्ण करनेवाली कामधे:

॥ ॐ ॥

श्रीगणेशयानमः ॥

मङ्गलाचरण* ॥

ग्रन्थकर्ताका मंगलाचरण ।

श्रीगंगारानीके चरण ध्यान धरके। हरिद्वार स्थानमें वास करके॥
प्यारी आर्य्यावर्तकी देश भाषा। टीका मंत्र सिद्धिकी में करूंहूं॥
दोहा-गौरीशंकर पदकमल, प्रेम सहित हियलाय।
मंत्र सिद्धि भाषातिलक,बहु विध लिखित बनाय॥

पुराणोक्त मङ्गलाचरण।

दिविभूमौतथाकाशे बहिरन्तश्चमे विभुः।
योविभात्यवभासात्मा तस्मैसर्व्वात्मनेनमः॥१॥

अर्थ—देवलोक भूलोक तथा आकाशके अन्तर बाहरमें जो विभु स्वयं प्रकाश ईश्वर भासित है उस सर्वात्मा को नमस्कार है॥१॥

सनःसनत्सुजातश्चसनकःससनन्दनः ।
सनत्कुमारः कपिलः सप्तमश्चसनातनः ॥ २ ॥

अर्थ—सन, सनत्सुजात, सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, कपिल, सातवें सनातन ॥ २ ॥

दुर्वासा देवलः कृष्णः शुकोदत्तस्तथैवच ।
एतान् मन्त्रविदोमुख्यान् प्रणिपत्यप्रणीयते ॥३॥

अर्थ—और दुर्वासा, देवल, कृष्णद्वैपायन, शुकदेव दत्तात्रेय इन १२ प्रधान मन्त्राचार्योंको प्रणाम करके ॥ ३ ॥

श्रीमद्गुरून्नमस्कृत्य मायाक्षेत्रनिवासिना ।
अपूर्वमन्त्रशास्त्रस्य सिद्धिटीकाविरच्यते ॥४॥

अर्थ—और श्रीमंत विद्याके मुख्य गुरुको नमस्कार करके तथा हरिद्वारमाया क्षेत्रमें नित्य गंगा तटपर निवासकरके इस अपूर्वमन्त्रसिद्धिका सिद्धिदाता नामक भाषाटीका रचना करताहूं ४

ग्रन्थकर्ताका आशीर्वादात्मकवचन ।

यंशैवा समुपासते शिव इति-ब्रह्मेतिवेदान्तिनो ।
बौद्धाबुद्धइतिप्रमाणपटवः कर्तेतिनैयायिकाः ॥
अर्हन्नित्यथजैनशासनरताः कर्मेतिमीमांसकाः ।
सोऽयंवोविदधातुवांछितफलंत्रैलोक्यनाथोहरिः ५

अर्थ—शैव मतानुयायी लोग जिनकी शिव इस नामसे उपासना करते हैं। और वेदान्ती लोग जिसकी ब्रह्म इस नामसे उपासना करते हैं और बौद्ध मतवाले लोग जिनकी बुद्ध नामसे उपासना करते हैं। प्रमाण देनेमें चतुर नैयायिक जिनकी कर्ता

नामसे उपासना करते हैं। शिक्षा करनेमें लगे हुए जैनी लोग जिनकी अर्हन् नामसे उपासना करते है। मीमांसाके माननेवाले लोग जिसको कर्म मानकर उपासना करते है। सो वह त्रिलोकीनाथ विष्णुस्वरूप भगवान् तुम्हारे मनोभिलषित कार्य्योंको शीघ्रसफल करो यह हमारी परमेश्वरसे प्रार्थना है ॥ ५ ॥

॥ अथमन्त्र (प्रशंसा) महात्म्य ॥

अत्यल्पोपियथादीपः सुमहान्नाशयेत्तम :।
मंत्राभ्यासस्तथाल्पोपि महापापंविनाशयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—अत्यन्त छोटा दीपक जिसप्रकार महा अंधकारको नष्ट करदेता है उसीप्रकार किञ्चित्मात्रभी मन्त्राभ्यास महापापको नष्ट करता है ॥ १ ॥

विधूयमोहकलिलं लब्ध्वा मंत्रमनुत्तमम् ।
गृहस्थोमुच्यतेवंधान्नात्रकार्याविचारणा ॥ २ ॥

अर्थ—देह आदिमें अहंकार छोड़कर और सद्गुरुसे उस मन्त्र विद्याको लाभ करके गृहस्थ पुरुषभी ससारके बन्धनसे मुक्त होसक्ता है इसमें कुछ सशय नहीं है ॥ २ ॥

ब्राह्मणश्रमणोवापि बौद्धो वा पतितो पिवा ॥
कापालिको वा चार्वाकः श्रद्धापासहितः सुधीः ॥
मन्त्राभ्यास रतोनित्यं सर्वसिद्धि मवाप्नुयात् ॥३॥

अर्थ—ब्राह्मण, सन्यासी, बौद्ध अथवा पतित पुरुष कापालिक अथवा चारवाक, श्रद्धा सहित यदि मंत्राभ्यासमें तत्पर हों तब निश्चय पूर्वक समस्त प्रकारकी सिद्धिको प्राप्त होसक्ते हैं ॥ ३ ॥

मन्त्रहीनश्च दैवज्ञो नाथहीनं यथागृहम् ॥
शास्त्रहीनंयथावक्त्रं शिरोहीनं च यद्वपुः ॥ ४ ॥

अर्थ—मन्त्रके ज्ञान विना ज्योतिषी और स्वामी के विना घर शास्त्रसे हीन मुख और शिरसे हीन देह यह शोभित नहीं होतेहैं॥४॥

मन्त्रज्ञानात्परंगुह्यं मन्त्रज्ञानात्परंधनम् ॥
मन्त्रज्ञानात्परंज्ञानं नवादृष्टं नवाश्रुतम् ॥ ५ ॥

अर्थ—मन्त्रके ज्ञानसे परे गुह्य, तथा मन्त्रके ज्ञानसे परेधन तथा मन्त्रके ज्ञानसे परे ज्ञान, न देखा है न सुना है ॥ ५ ॥

शत्रुंहन्यान्मन्त्रवले तथा मित्रसमागमः ॥
लक्ष्मीप्राप्तिःमन्त्रवले कीर्त्तिःमन्त्रःवलेसुखम्॥६॥

अर्थ—मन्त्रका बल हो तो शत्रुको नष्ट करै, और मित्रका समागम होय और लक्ष्मीकी प्राप्ति और कीर्त्ति और सुख मन्त्रके ही बल से होता है ॥ ६ ॥

पुत्रप्राप्तिःमन्त्रवले मन्त्रतोराजदर्शनम् ॥
मन्त्रेणदेवतासिद्धिः मन्त्रेणक्षितिपोवशः ॥ ७ ॥

अर्थ—पुत्रकी प्राप्ति तथा राजाका दर्शन तथा देवताकी सिद्धि और राजाका वशमें होना यह समस्त मन्त्रसे ही होते हैं॥ ८॥

सर्वशास्त्रपुराणादि स्मृतिवेदांगपूर्वकम् ।
मंत्रज्ञानात्परंतत्वं नास्तिकिञ्चिद्वरानने ॥८॥

अर्थ—सम्पूर्ण शास्त्र और पुराणादि तथा स्मृति और वेदांग आदि यह समस्त मंत्रशास्त्र से परेतत्व नहीं है ॥ ८ ॥

नाम रूपादिकःसर्वो मिथ्या सर्वेषु विभ्रमः ॥
अज्ञान मोहितामूढा यावत्मन्त्रं न विद्यते ॥१२॥

अर्थ—जब तलक मंत्र का अच्छे प्रकार ज्ञान नहीं होता है तक नामरूपादि भ्रम मिथ्या है और मूढ मनुष्यों को मोहमी तकही है ॥ ९ ॥

मन्त्रज्ञानयुतोयोवै लक्ष्मीःपादतले भवेत् ॥
सर्वत्र च शरीरेऽपि सुखंतस्य सदाभवेत् ॥ १० ॥

अर्थ—जिस मनुष्य को मंत्र का ज्ञान है उसके चरणों के नी लक्ष्मी है और उसके शरीर को जहां वह जाय वहां सुख प्राप्त ता है ॥ १० ॥

प्रणवःसर्ववेदानां ब्राह्मणोभास्करो यथा ॥
मृत्युलोकेतथापूज्यो मन्त्रज्ञानीपुमानपि ॥ ११ ॥

अर्थ—संपूर्ण वेदों में जैसे ओंकार और ब्राह्मणों को जैसा सूर्य ज्य है इसी प्रकार इस मृत्युलोकमें मंत्रज्ञानी पुरुषभी पूज्य है॥ ११॥

एकाक्षरप्रदातारं मन्त्रभेदविवेचकम् ॥
पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यं यद्दत्वाचानृणोभवेत्१२

अर्थ—मंत्रभेदका विवेचन करनेवाला यदि एक अक्षर भी देदे ो पृथ्वी में उसको उसकी द्रव्य नहीं है जिसको देकर अनृणी ोजाय अर्थात् (बदलेका उतारदे) ॥ १२ ॥

एवंप्रवर्त्तितंलोके प्रसिद्धं सिद्धयोगिभिः ॥
शिवेनोक्तंपुरातंत्रे सिद्धस्यगुणगह्वरे ॥ १३ ॥

अर्थ—इस प्रकार यह मन्त्रशास्त्र लोकोपकारार्थ योगिजनों ने संसार में प्रसिद्ध किया और यहही मंत्र शिवजीने सिद्धोंके समूह में तंत्रशास्त्र में कहा है ॥ १३ ॥

संसारसागरंघोरं तर्त्तुमिच्छनियोनरः ॥

मन्त्रनावंसमारुह्य पारंयातिसुखेनसः ॥ १४ ॥

अर्थ—जो पुरुष घोर सागररूप संसारसे तरनेकी इच्छकरताहोय सो मन्त्र रूपी नावपर बैठ के सुख से पार उतर जाय ॥१४॥

धिक्तस्यमानुपंदेहं धिग्ज्ञानंधिक्कुलीनताम् ॥
मन्त्रार्थयोनजानाति नाधमस्ततत्परोजनः ॥१५॥
धिक्प्रागल्भ्यंप्रतिष्ठांच महात्म्यंमानमेवच ॥
मंत्रेयेपांरतिर्नास्ति तत्सर्वंनिष्फलंभवेत् ॥ १६ ॥

अर्थ—जोमनुष्य मन्त्रशास्त्रकापढना पढावना नहीं जानताहै, और न दूसरे से सुना, और न श्रद्धा है और न भावना है सो पुरुष इसलोक में ग्रामसूकर के समान है; जिससे वह मन्त्र नही जानताहै तिससे उसके सिवाय दूसराकोई अधम नही है ॥१५॥१६॥

धिक्तस्यज्ञानमाचारं व्रतंचेष्टातपो यशः ।
मन्त्रार्थपठनंनास्ति नाधमस्तत्परोजनः ॥ १७ ॥

अर्थ—जिस मनुष्यकी प्रीति मंत्रशास्त्रमें नहीं है उसकी हिम्मत, प्रतिष्ठा पूजा, मान, और महात्मा पनेकोधिकार है और उसका सर्वकर्म निष्फल है ॥ १७॥

योऽधीतेसततंमंत्रं दिवारात्रौयथार्थतः ॥
स्वपन्गच्छन्वदंस्तिष्ठन् शाश्वतंमोक्षमाप्नुयात्१८

अर्थ—जो पुरुष निरंतर रात दिन अर्थ सहित मन्त्रको सो तेग बोलते खडे भी पढते रहते हैं वे सनातन मोक्षको प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

येनाधीतंमन्त्रशास्त्रं भक्तिभावेनचेतसा ॥
तेनवेदाश्चशास्त्राणि पुराणानिचसर्वशः ॥ १९ ॥

अर्थ—जिन्होंने भक्ति भावसे चित्त लगाय के मन्त्रशास्त्रका अध्ययन नही किया है उसने वेद शास्त्र और पुराण कुछभी नही पढा है ॥ १९ ॥

योगिस्थानेसिद्धपीठे शिष्टाग्रेसत्यभासुच ॥
यज्ञेचविष्णुभक्ताग्रे पठन्यातिपरांगतिम् ॥ २० ॥

अर्थ—योगी के स्थान में, विंध्येश्वरी इत्यादि सिद्धि पीठ में श्रेष्ट पुरुषों के सन्मुख, साधु सभा में, यज्ञ में और विष्णु भक्त के सन्मुख मन्त्रका पाठ करने से मोक्ष होती है ॥ २० ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्यास्तत्रनोपविशंतिवै ॥
अभिचारोद्भवंदुःखं परेणापिकृतंचयत् ॥ २१ ॥

अर्थ—जिस घर में मन्त्रका पूजन होता है तहां भूत प्रेत पिशाचादिक और दूसरेके किये भये मन्त्र यन्त्रादिक अभीचार प्रयोग भी नही प्रवेश कर सके है ॥ २१ ॥

महापापोपपापानि मन्त्राध्यायीकरोतिचेत् ।
नकिंस्पृशते तंवै नलिनीपत्रंयथापयः ॥ २२ ॥

अर्थ—जो पुरुष नित्य मंत्रका श्रवण पठन मनन करता होय और नहदैव योग से भूल में ब्रह्महत्यादिक महापाप भी करै तो भी जलकर के कमलपत्रवत् लिप्त नही होनेका है ॥ २२ ॥

यस्यांतःकरणंनित्यं मन्त्रपारंगतःसदा ।
सर्वाग्निकःसदाजापी क्रियावान्सचपंडितः ॥२३॥

अर्थ—जिस पुरुष का मन अर्थात् (अंतः करण) सदा मन्त्र में ही रमता होय सो अग्निहोत्री, सदा जपकरने वाला क्रियावान् और पंडित है ॥ २३ ॥

मंत्रपुस्तकसंयुक्तः प्राणांस्त्यक्त्वा प्रयातियः ।

सर्वेकुण्ठमवाप्नोति विश्नुनासहमोदते ॥२४॥

अर्थ—जो पुरुष मन्त्रके पुस्तक युक्त प्राणों को त्यागे है, सो विष्णु लोक को प्राप्त होके विष्णुसमीप आनन्द करे है ॥२४॥

लिखित्वाधरयेत्कंठे बाहुदंडेचमस्तके ॥

नश्यंत्युपद्रवाःसर्वे विघ्नरूपाश्चदारुणाः॥ २५ ॥

अर्थ—मन्त्रको लिख के गलेमें अथवा भुजापर अथवा मस्तक पर बान्धे तौ उसके विघ्नरूप दारुण उपद्रवनाश होंय ॥ २५ ॥

अहंकारेणमूढात्मा मंत्रार्थंनैवमन्यते ॥

कुंभीपाकेसपच्येत यावत्कल्पलयोभवेत् ॥ २६ ॥

अर्थ—जो पुरुष अहंकार मूढतासे मन्त्रके अर्थको नहीं मानता है सो पुरुष मलयंकाल पर्य्यंत कुंभीपाक नरकमें पडता है ॥२६॥

माहात्म्यमेतद्मन्त्रस्य कृष्णेनोक्तंसनातनम् ॥

मन्त्रांतेपठतेयस्तु यथोक्तंफलमाप्नुयात् ॥ २७ ॥

अर्थ—यह श्रीकृष्णका कहाहुआ सनातनमंत्रका महात्म्य इसको मन्त्रपाठके अन्त में पढ़े तो यथोक्तफल प्राप्त होवै ॥ २७ ॥

मन्त्रस्यःपठनंकृत्वा माहात्म्यंनैवयःपठेत् ॥

वृथापाठफलंतस्य श्रमएवहिकेवलम् ॥ २८ ॥

मन्त्र पाठ करके महात्म्यको न बांचे तौ उसके पाठ करनेका श्रम वृथाही है पाठका फल नहीं प्राप्त होनेका है ॥ २८ ॥

मन्त्रमाहात्म्यसद्व्याख्यांकुर्वेप्राकृतभाषया॥२९॥

अर्थ—ग्रन्थका आधेश्लोककरके झलकावे है कि मैंने मन्त्रशास्त्र का महात्म्य सद्व्याख्या करके प्राकृत भाषा में देशोपकारार्थ कथन किया है ॥ २९ ॥

इति मन्त्रमहात्म्यसम्पूर्णम् ।

अथ तांत्रिकगुरुके लक्षण ।

सर्व्वशास्त्रपरोदक्षः सर्व्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् ।
सुवाक्यःसुन्दरःस्वंगः कुलीनःशुभदर्शनः ॥१॥
जितेन्द्रियःसत्यवादी ब्राह्मणःशान्तमानसः ।
पितृमातृहितेयुक्तः सर्वकर्मपरायणः ॥ २ ॥
शान्तोदान्तःकुलीनश्च विनीतःशुद्धवेशवान् ॥
शुद्धाचारःसुप्रतिष्ठः शुचिर्वेशःसुबुद्धिमान् ॥ ३ ॥
आश्रमीध्याननिष्ठश्च तंत्रमंत्रविशारदः ।
निग्रहानुग्रहेशक्तो गुरुरित्यभिधीयते ॥ ४ ॥
मननात्भासतेमंत्रो गुरुस्तस्यप्रयोजकः ॥ ५ ॥

अर्थ—सर्वशास्त्र पढ़ाहुआ पंडित, सर्वशास्त्र में चतुर, श्रेष्ठ वचन कहने वाला, सुन्दर, स्वाङ्ग, कुलीन, शुभदर्शन, जितेन्द्रिय सत्यवादी, ब्राह्मण, शान्तमन वाला पिता माता की भक्ति करने वाला, सदाही पूजाके सर्व कार्य करने वाला मनुष्य गुरु होने के योग्य है जिन पुरुषों ने बाहिरी और भीतरी इन्द्रियोंको दमन कर लिया है तथा जो श्रेष्ठ वंश में उत्पन्न हुए हैं, जो विनय सम्पन्न है, तथा सुक्षित हैं जिन का वेश अत्यन्त शुद्ध है,जिनका आचार परमपवित्र है, जो भली भांति से रूप और प्रतिष्ठावाले हैं, जिनका अंतरबाहर सबपवित्रहै, जोक्रिया में कुशलताको जानते परम बुद्धिमान हैं, जो आश्रमी है जो पर ब्रह्म के ध्यान धारण में सदा समयको बिताते हैं, मंत्र, तंत्रका ज्ञान जिनको भली प्रकार से है, जो शापआदि द्वारा सरलता से नष्ट और वरदान आदि से संवर्द्धिन कर सक्ते हैं उसकोही गुरु कहा जाना

है और मनुष्य को यह उपरोक्त गुण रखने वाला गुरु कोही करना श्रेष्ठ है यदि इसप्रकार उत्तम गुणो वाला गुरु नही मिले तो मध्यमतथा कनिष्ट गुणोवाला गुरु अवश्यकरै ध्यानकरनेही से उद्धार करदेताहै,इसलिये इसका नाम मंत्र है, उसी यंत्र का गुरु प्रयोजकहै इसलिये गुरु करनेकी आवश्यका है ॥१॥२॥३॥४॥५॥

इतिसत्गुरुलक्षण समाप्तम् ॥

अथ तांत्रिक–शिष्यके लक्षण।

अलुब्धः स्थिरगात्रश्च आज्ञाकारी जितेंद्रियः।
आस्तिकोदृढभक्तिश्च गुरौमंत्रेचदैवते ॥ १ ॥
एवम्विधोभवेत्तुशिष्य इतरोदुःखकृद्गुरोः॥ २ ॥

अर्थ—लोभहीन स्थिरगात्र, आज्ञाकारी जितेंद्रिय, ईश्वर में दृढ़भक्तिरखनेवाला,गुरुमंत्रमें परमभक्तियुक्त इत्यादि गुण न रहने से कभी कोई शिष्य होकर तांत्रिक धर्म में दीक्षित नहीं होसक्ता २।१।

शांतेशुद्धेसदाचारे गुरुभक्तयेकमानसे।
दृढचित्तेकृतज्ञे च देयंमन्त्रमनुत्तमम् ॥ ३ ॥

अर्थ—शांत स्वभाव, शुद्ध, उत्तमआचरण, शील, गुरुकीभक्ति में निस्कापन और दृढचित्त ऐसेशिष्यको उत्तममंत्र गुरुउपदेशकरै३

सद्गुरुःस्वाश्रितंशिष्यं वर्षमेकंपरीक्षयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—अपने आश्रित शिष्यकी परिक्षा एक वर्षतक गुरुको करनी चाहिये; परीक्षा सिद्ध होनेपर उसको शिष्य करै ॥ ४ ॥

इति शिष्यलक्षणम्।

मन्त्रशास्त्रकोगोप्यता।

शिवउवाच.

अयंमन्त्रोमयाप्रोक्तो भक्तानांस्नेहतःप्रिये।

गोपनीयंप्रयत्नेन नदेयंयस्यकस्यचित् ॥ १ ॥
एतद्गुह्यतमंगुह्यंनभूतंनभविष्यति ।
तस्मादेतत्प्रयत्नेन गोपनीयंसदाबुधैः ॥ २ ॥

अर्थ—हे प्यारी पार्वती! हमने भक्तोंपर प्रेमकरके मंत्रविद्योंको कहा है सो यत्नपूर्वक गोपनीय है, सामान्य मनुष्योंको कदापि देना उचित नहीं है ॥ १ ॥

अर्थ—इस मंत्र विद्या से अधिक गोपनीय न कुछ भया है न होगा इसकारण से बुद्धिमान् साधकको यत्नपूर्वक इसको गोप्य रखना श्रेष्ठ है ॥ २ ॥

मंत्रसिद्धिःपरंगोप्यं नदेयंयस्यकस्यचित् ।
सप्रमाणैःसमायुक्तस्तमेवकथ्यते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

अर्थ—यह मंत्र सिद्धि परम गोपनीय है अन्य अधिकारीको कदापि देने योग्य नहीं है परंतु प्रमाणयुक्त अर्थात् पूर्वोक्त लक्षण युक्त साधकको अवश्य देना उचित है ॥ ३ ॥

गोपनीयंप्रयत्नेननदेयंयस्यकस्यचित् ।
येनशीघ्रंमंत्रसिद्धि र्भवेद्दुःखौघनाशिनी ॥ ४ ॥

अर्थ—यह मंत्र यत्न से गोपनीय है सबको देना उचित नहीं है परंतु अधिकारीको देना योग्य है इस से बहुत शीघ्र मंत्रसिद्धि होजातीहै और यह सिद्धि दुःखोंके समूहको नाशकरदेनेवाली है ४।

मंत्रविद्यापरंगोप्या नदेयायस्यकस्यचित् ।
सर्वथानैवदातव्या प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ ५ ॥

अर्थ—यह मंत्र विद्या परम गोपनीय है अन्य अधिकारीको कभी न दे यह सर्वथा देनेके योग्य नहीं है यदि कण्ठगत मरण होजाय तौभी देना उचित नहीं है ॥ ५ ॥

इतिमंत्रशास्त्र गोप्यता लक्षण समाप्तम्.

मन्त्रशास्त्रकी सिद्धता।

(शिव उवाच।)

मंत्रसिद्धिंप्रवक्ष्यामि तुभ्यंचममवल्लभे ।
यांप्राप्यसिद्धाःसिद्धिंच कपिलाद्यापरांगताः॥१॥

अर्थ—हे प्रिये पार्वती! इन मंत्रों के बीच में हम इस (मंत्रसिद्धि) को कहते हैं इसको लाभ करके पूर्व कपिल आदिक सिद्धोंको सिद्धि प्राप्त हुई है ॥ १ ॥

सिद्धेमन्त्रमहायत्ने किंनसिध्यतिभूतले ।
यस्यप्रसादान्महिमाम प्राप्येतादृशीभवेत्।२।

अर्थ—हे प्रिय! यत्नपूर्वक मंत्र के सिद्ध होनेसे संसारमें क्या नहीं सिद्ध होता है अर्थात् सब सिद्ध होसक्ता है इसीके प्रभाव से हमारी ऐसी महिमा है ॥ २ ॥

फलिष्यतीतिविश्वासः सिद्धेःप्रथमलक्षणम् ।
द्वितीयंश्रद्धयायुक्तं तृतीयंगुरुपूजनम् ॥ ३ ॥
चतुर्थंसमताभावं पञ्चमेन्द्रियनिग्रहम् ॥
षष्ठंचप्रमिताहारं सप्तमंनैवविद्यते ॥ ४ ॥

मंत्र सिद्धि होनेका प्रथम लक्षण यह है कि उसके सिद्धि में विश्वास हो दूसरे श्रद्धायुक्त हो, तीसरे गुरु पूजारत हो चौथे प्राणीमात्र से समताभाव रक्खे पांचवे इन्द्रियों का निग्रहहो छठे परिमित भोजन करे यह छः लक्षण मंत्रसिद्धि के हैं और सातवां कोई नहीं है ॥ ३ ॥ ४ ॥

वाक्सिद्धिकामचारित्वं दूरदृष्टिस्तथैवच ।
दूरश्रुतिःसूक्ष्मदृष्टिः परकायप्रवेशनम् ॥ ५ ॥

अर्थ—वाक्यसिद्धि, स्वेच्छाचारी, दूरदृष्टी, दूरशब्द श्रवण अतिसूक्ष्मदर्शन, दूसरेके शरीर में प्रवेश करनकी शक्ति यह सम्पूर्ण मंत्र सिद्धिसे होती है ॥ ५ ॥ इतिमंत्रशास्त्र सिद्धता संपूर्ण.

मंत्रशास्त्र में अभ्यास।

अभ्यासासिद्धमाप्नोति भोगयुक्तोपिमानवः।
सकलः साधितोर्थापि सिद्धोभवतिभूतले ॥ १॥

अर्थ—भोग युक्त मनुष्य को भी अभ्यास से सिद्धि प्राप्त होती है और सब प्रकार वांछित फल संसार में सिद्ध होजाते हैं॥१॥

यंयंकामयतेचित्ते तंतंफलमवाप्नुयात्।
निरन्तरकृताभ्यास तंपश्यतिविमुक्तिदम ॥ २ ॥
वहिरभ्यन्तरेश्रेष्टं पूजनीयंप्रयत्नतः।
ततः श्रेष्टतमंह्यतन्नन्यदस्तिमतंमम ॥ ३ ॥

अर्थ—जो पुरुष इसमंत्र सिद्धि को विधिपूर्वक सेवन करते हैं वह अपने चित्त में जो जो वस्तु की इच्छाकरते हैं सो समस्त वस्तु उन को प्राप्त होजाती है और सर्वदा अभ्यास करने से बाहर भीतर श्रेष्ट पूजनीय मुक्तिदाई परमात्मा को देखते हैं हे पार्वती! इस से श्रेष्ट दूसरा यत्न नहीं है यह हमारा मतहै ॥२॥३॥

मन्त्रः पश्यतियोगीन्द्रः शुद्धंशुद्धाचलोपमम।
तत्राभ्यासवलेनैव स्वयंतद्रक्षकोभवेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—जब शुद्ध अचल समान मंत्र सिद्धि योगी देखता है तब अभ्यास बल से आपही उसकी रक्षाहोवैहै॥४॥ इतिअभ्यास

अभ्यासी को करतव्य।

श्रूयतामभिधास्यामि मन्त्रशास्त्रमनुत्तमम्।
धारणाद्यस्यवैदेवि त्रिकालज्ञभवतिध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ—श्री महादेवजी बोले कि हे पार्वती श्रवण करो उत्तमसे

उत्तम जो मन्त्रशास्त्र है जिसके धारण करने से मनुष्य त्रिकालज्ञ होताहै ॥ १ ॥

प्रातरुत्थायशिरसि ध्यात्वागुरुपदांबुजम् ।
आवश्यकंविनिर्वर्त्य स्नातुंयायात्सरित्तटे ॥ २ ॥

अर्थ–हे देवि ! प्रात काल उठके गुरुके चरण कंवल रूपीको विधिवत् ध्यान करके पश्चात् सौच से निवृत्त होकर फिर जहां नदी हो वहां स्नानके निमित्त प्रस्थान करै ॥ २ ॥

श्रोतेनविधिनास्नात्वा मंत्रस्नानंसमाचरेत् ।
स्मार्तसंध्यामंत्रसंध्या कृत्वादेवंविचिंतयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—विधि पूर्वक स्नान करके मंत्र स्नानकरै फिर स्मार्त संध्या तथा मत्र सध्या करै पश्चात् देवता का चिंतवन करै॥३ ॥ इति कर्त्तव्य ॥

अभ्यासीको संगत तथा वार्तालाप ।

अतीवसाधुसंलापं साधुसम्मतिबुद्धिमान ।
करोतिपिण्डरक्षार्थं वह्वालस्यविवर्जितः ॥ १ ॥
त्याज्यतेत्यज्यतेसंगंसर्वथात्यज्यतेभृशम् ॥
अन्यथानलभेन्मुक्ति सत्यंसत्यंमयोदितम् ॥ २ ॥

अर्थ—बुद्धिमान साधक सभा में साधुके समान थोडा और प्रमाण युक्त वाक्य बोले और शरीर की रक्षार्थ थोडा भोजन करै और संगको सर्व प्रकार से त्यागदे कदापी किसी के सग में लिप्तन

१ अंधकार नष्ट करके ज्ञान उदय करने वाला ।
दोहा–अष्टसिद्धि नवनिधि मिलित मिलितमोक्ष सुखखान।
आतमाहूगनहू मिलिन मंत्र सिद्धिकोहि जान ॥

होय हे पार्वती दूसरे प्रकार मुक्ति नहीं होती यह सर्वथा सत्य सत्य कह ते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

गुह्येवक्रियतोऽभ्यासः संगंत्यक्त्वातदन्तरे ।
व्यवहारार्थकर्तव्यो वाह्येसंगोनरागतः॥ ३ ॥
स्वेस्वेकर्मणिवर्तन्ते सर्वेतेकर्मसम्भवाः।
निमित्तमात्रकरणेन दोषोस्तिकदाचन.॥ ४ ॥

अर्थ—साधक संग रहित होकर एकांत स्थान में मंत्र साधन करै यदि संसारी मनुष्योंसे व्यवहार वर्तनेकी इच्छा करै तो अन्तर प्रीति रहित होकर वाह्य संग करै और अपना आश्रम धर्म कर्मभी इसी प्रकार करता रहै केवल निमित्त मात्र कर नेसे कोई दोष नहीं है ॥ ३ ॥ ४ ॥ इति संगत वार्तालापः ॥

मंत्रशास्त्र में गृहस्थी का अधिकार।

गृहास्थानांभवेत्सिद्धि रीश्वराणांजपेनवै ।
मंत्रक्रियाभियुक्तानां तस्मात्संयततेगृही ॥ १ ॥

अर्थ—मंत्र क्रियावान गृहस्थ पुरुषको जप करनेसे सिद्धि प्राप्त होतीहै इस हेतुसे मंत्र साधन में गृहस्थ पुरुष को यत्नकरना उचितहै ॥ १ ॥

यदृच्छालाभसंतुष्ट सन्त्यक्तान्तरसंगकः ॥
गृहस्थश्चाप्यनासक्तः समुक्तोमन्त्रसाधनम् ॥२॥

अर्थ—इच्छा पूर्वक लाभ से संतुष्ट तथा जो इन्द्रियों में आसक्त नहोगा सो गृहस्थी पुरुष भी मंत्र साधन में मुक्त हो सकता है ॥ २ ॥

एवंनिश्चित्यसुधिया गृहस्थोपियदाचरेत् ॥

तदासिद्धिमवाप्नोति नात्रकार्य्यविचारणा॥३॥

अर्थ—इस प्रकार निश्चय बुद्धिसे गृहस्थी पुरुषभी मन्त्राभ्यास करैतो वह अवश्य सिद्धि प्राप्त होजाताहै इसमें किञ्चित्भी संदेह नहींहै॥१॥ इति गृहस्था धिकार.

अभ्यासी (साधक को गुरु कर्तव्य।

यावद्गुरुनकर्तव्यो मुक्तिस्तावन्नविद्यते।

तस्माद्गुरुश्चकर्तव्यो यत्रंसिद्धिः पराप्रिये॥१॥

अर्थ—जबतक गुरु नहीं कियाजाता है तबतक मुक्ति के प्राप्त होने की संभावना नहीं है इसकारण "गुरुका करना परम कर्तव्य है तथा गुरु सर्वसिद्धियों का आधार है" हे प्रिय॥१॥

गुरुःपितागुरुर्माता गुरुर्देवोगुरुर्मनुः।

शिवेरुष्येगुरुस्त्राता गुरौरुष्टेनकश्चन॥२॥

अर्थ—गुरुही पिता है गुरुही माता है गुरुही देवता है गुरुही मित्र है शिवजीके रूठ जाने से गुरु रक्षा करता है परन्तु गुरु के रूठने से कोई भी रक्षा नहीं करसक्ता है॥२॥

गुरौमनुष्यबुद्धिन्तु मंत्रेचाक्षरबुद्धिताम्।

प्रतिमायांशिलाबुद्धिंकुर्वाणोयात्यधोगतिम्॥३॥

हे प्रिये! गुरुको साधारण मनुष्य जानने से तथा मंत्रको

१—गुरु बिन ज्ञान नाहीं गुरु बिन ध्यान नाहीं गुरु बिन आतमा विचार न लहत्व है। गुरु बिन प्रेम नाहीं गुरु बिन प्रीति नाहीं गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत्व है॥ गुरु बिन बास नाहीं बुद्धिको प्रकाश नाहीं भ्रमहू को नाश नाहीं संशयहू रहत्व है। गुरु बिन बाट नाहीं कौड़ी बिन हाट नाहीं सुंदर प्रकट लोक वेदयं कहत्व है॥

सामान्य अक्षर समझनेसे और प्रतिमाको साधारणशिला माननेसे मनुष्य को अधोगति [नरक] प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

मन्त्रत्यागान्भवेन्मृत्युर्गुरुत्यागादरिद्रता ।
गुरुमन्त्रपरित्यागाद्रौरवंयातिनिश्चितम् ॥ ४ ॥

अर्थ—मन्त्रका त्याग करनेसे मृत्यू होतीहै गुरुका त्याग करनेसे दरिद्रता आतीहै गुरु तथा मन्त्र दोनोंका त्याग करनेसे निश्चय पूर्वक रौरव नरक प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्यहारकः ।
उकारोविश्नुव्यक्तस्त्रि तयात्मागुरुः परः ॥ ५ ॥

अर्थ—गकार शब्द से सिद्धिदाता रकार से पाप नाश करनेवाला और उकार से साक्षात अव्यक्त विष्णु [शिव] रूप है इन तीन अक्षर के इकट्ठे होने से गुरु शब्द की उत्पत्ति हुई है ॥ ५ ॥ इतिगुरुकर्तव्य ॥

मन्त्रोंका छिन्न भिन्न ।

छिन्नरुपास्तुयोमन्त्राः कीलताःस्तंम्भिताश्चये, ।
दग्धामन्त्राः शिरोहीनामलिनास्तुनिरस्कृता॥१॥
मन्दावालास्तथावृद्धाः प्रोढायौवनगर्विता ।
भेदिनोभ्रमसंयुक्ताः सत्याहंमूर्च्छिताश्चये ॥ २ ॥
अरिपक्षेस्थितायेचनिर्वीर्याः सत्ववर्जिता ।
तथासत्वेनहीनाश्च खण्डिताः शतधाकृताः ॥३॥
विधिनानेनसंयुक्तः प्रभवन्त्यचिरेणतु ।
सिद्धिमोक्षप्रदासर्वे गुरुणाविनियोजिताः ॥ ४ ॥

अर्थ—जो मंत्र छिन्नरूप हैं, और कीलित हैं, स्तम्भित हैं तथा जो मंत्र दग्ध हैं, शिरोहीन हैं, मलीन है, और जिनका अनादर है और जो मलीन हैं, वृद्ध हैं, प्रौढ हैं, तथा जो यौवन गर्वित हैं, और भेदित हैं तथा भ्रम संयुक्त हैं, सम्राइसे मूच्छित हैं और जो शत्रुके पक्ष में निर्वीर्य हैं, सत्व रहित हैं, खण्डित हैं तथा सौखण्ड होगये हैं यह समस्त विधि पूर्वक मंत्र सिद्धि के साधन करने के कारण गुरु से धारण करै ॥ १ । २ । ३ । ४ ॥

दिक्नियम् ।

वार्तिक—दिशाओं में बैठने की यह रीति है कि शांतिकर्म ईशानकोण की ओर मुख करके करै और वशीकरण उत्तरकोण तथा स्तम्भन पूर्व कोण तथा विद्वेषण नैऋत कोण और उचाट न वायु कोण और मारण कर्म अग्निकोण को मुखकरके करै ।

कालाकाल ।

हेमन्तःशांतिकेप्रोक्तः वसन्तोवश्यकर्मणि ।
शिशिरः स्तम्भनेज्ञेयो ग्रीष्मोविद्वेषणेमतः ।
प्रावृडुच्चाटनेज्ञेयो शरणमारणकर्म्मणि ॥

अर्थ—शान्तिकर्म हेमन्तऋतु में वशीकरण वसन्तऋतु में स्तम्भन शीतऋतु में विद्वेषण ग्रीष्मऋतु में उचाटन वर्षाऋतु में और मारण कर्म शरदऋतु में करना श्रेष्ठ है ॥

१—किसी ऋतु में किसी कर्मकी अत्यन्त आवश्यक्ता हो तो ऋषियों ने एक दिनकी दश २ घटी बांटकर एक ऋतु बनाई दिन के पहिले भाग में बसन्त, दुपहर में ग्रीष्म तीसरे पहर में वर्षा सन्ध्या में शीन रात्री में शरद और प्रातःकाल हेमन्त काल मानना ।

वार और तिथि नियम् ।

शान्ति के काम में दोइज तीज पंचमी व सप्तमी तिथि और बुद्ध बृहस्पति शुक्र सोमवार यह दिन श्रेष्ठ हैं बृहस्पतिवार में अथवा सोमवार में छठ चौथ तेरस नवमी अष्टमी या दशमी तिथि होने से उसदिन पुष्टिकार्य करना चाहिये [जिससे] धन जन और सन्तान की वृद्धि होती रहै उसको पुष्टिकार्य कहते हैं आकर्षण कर्म में इतवार, शुक्रवार यह दो दिन और दशमी एकादशी मावस नवमी व प्रतिपदा यह तिथि उत्तम । शनिवारी या रविवारी पूर्णिमा होने से उस दिन विद्वेषण कार्य का अनुष्ठान करना उचित है ॥

उच्चाटनकर्म में शनिवार और छठ चतुर्दशी अष्टमी तिथि श्रेष्ठ हैं । विशेष करके उच्चाटन कर्म प्रदोष के समय किया जाय तो फल बहुत शीघ्र मिलता है । मारणकर्म में शनि, मंगल, रविवार और कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अष्टमी अमावस्या उत्तमहै । स्तम्भन कार्य में पंचमी दशमी पूर्णमासी तिथि और बुद्ध व सोमवार होना श्रेष्ठ है । शुभ कार्यों में शुभग्रह के उदयकाल में करै और मारणादिकार्य अशुभ ग्रहोंके उदयकाल में करे मारणकार्यमें मृत्युयोग बहुत श्रेष्ठ है ।

अथ मठलक्षणम् ।

मन्दिरंरम्यविन्यासं मनोज्ञंगन्धवासितम् ।
धूपमोदादिसुरभि कुसुमोत्करमण्डितम् ॥

१-तिथि वारादिके साथ मनुष्य की आयु का ज्योतिसवालोंने भली भांति सम्बन्ध रक्खा है इसमें संदेह नहीं है भिन्न २ तिथिवारका अलग २ फल होता है ॥

मुनितीर्थनदीवृक्ष पद्मिनीशैलशोभितं ।
चित्रकर्मनिवद्धंच चित्रचित्रोविचित्रतम् ॥ ३ ॥

अर्थ–सुन्दर रमणीक स्थानवनवाकर गन्ध [खुशबू] धूपआदि से शोभित कर मुनि तीर्थ नदी वृक्ष शैल के निकट शोभायमान चित्र विचित्र से चित्रित करै मन्त्रसाधन में ऐसा स्थान होना श्रेष्ठ है।

अथ भूतशुद्धिः ।

तद्यथारमितिजलधारयावन्हि प्रकारंविचिन्त येत् ततःस्वाङ्के उत्तानौकरौ कृत्वासोऽहमिति जीवात्मानं हृदयस्थंप्रदीपकलिकाकारं मूला-धारस्थितकुल कुण्डलिन्यासहसुषुम्नावर्त्मना मूलाधारस्वाधिष्टान मणिपूरानाहतविशुद्धाज्ञा ख्यपटचक्राणिभित्वा शिरोवस्थिताधोमुखस हस्रदलकमलकर्णिकान्तर्गतपरमात्म निसंयो-ज्य तत्रैवप्रथिव्यंप्रतेजोवाट्वाकाशगंधरसरूपे स्पर्श शव्यनासिकाजिह्वाचक्षुः श्रवणत्वक् । वाक्पाणिपादपायूपस्थप्रकृतिमनोवुद्ध्य हंकार रूपचतुर्विंशतितत्वा निविलीलानी विभाव्यय मितिवायुर्बीजंधूम्रवर्णंवामनासापुटे विचिन्त्य तस्यषोडशवारजपेनवायुनादहे मापूर्यनासापु-टौ धृत्वातस्यचतुः षष्टिवारजपेन कुम्भकंकृत्वा वामकुक्षिस्थकृष्यवर्ण पापपुरुषेण सहदेहं सं-

शोष्य तस्यधात्रिंशद्वाराजपेन दक्षिणनासया वायुंरेचयेत्। दक्षिणनासापुटेरमितिवन्हिवीजंरक्तवर्णंध्यात्वा तस्यषोडशवारं जपेनवायुनादेहमापूर्यनासापुटौ धृत्वातस्यचतुःषष्टिवार जपेनकुम्भकं कृत्वापापपुरुषेण सहदेहंमूलाधारस्थितवन्हिनादग्ध्वातस्य द्वात्रिंशद्वारजपेनवामनासायाभस्मनासहवायुंरेचयेत्।ठमिति चन्द्रवीजंशुक्लवर्णं वामनासिकायध्यात्वातस्य शोडषवारजपेन ललाटेचंद्रनीत्वानासापुटौधृत्वानमिति वरुणवीजस्य चतुःषष्टिवारजपेन तस्माल्ललाटे चन्द्राद्गलित सुधयामातृकावर्णात्मिकया समस्तदेहं विरेच्यलमिति पृथ्वीवीजस्य द्वात्रिंशद्वारजपेनदेहं सुदृढंविचिन्त्य दक्षिणेन वायुंरेचयेत्।

अर्थ—भूतशुद्धि कहते हैं "र" मन्त्र से जलधारा कर के शरीरको घेर वन्हि प्रकार की चिन्ता करे, और अपने अंक में दोनों उठेहुए हाथ स्थापन कर के इस मन्त्र से प्रदीपकी वर्त्ती के आकार से हृदय में स्थित जीवात्माको आधार में स्थित कुल कुण्डलिनी के साथ मिलाकर सुषुम्ना मार्ग में मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपुर अनाहत, विशुद्ध और आज्ञाख्य इस षट चक्र को भेद करके शिर में स्थित नीचे को मुख किये सहस्र दल कमल की पखुडियोंमें परम शिवमें संयोजित करे और तिसमें पृथ्वी आदि

२४ तत्वोंको लीन करके "यं" वायुबीज से वाम नासापुटमें चिन्ता और बीजके १६ बार जप करनेसे देह पूर्ण करके दोनो नासापुट बार इस बीजका चौंसठ बार जप करके कुम्भक करे, फिर बांई कोखमें स्थित काले वर्णके पाप पुरुषके साथ देह सोखकर इसही बीजका ३२ बार जप करके पवनको छोड़े, फिर दक्षिण नासामें "रं" वन्हि बीज ध्यान करके इस बीजका १६ बार जप करके वायुमें देह पूर्ण करके नाकके दोनो छिद्रोंको पकड़कर इस बीजका चौसठ बार जप करके कुम्भक करे और कृष्ण वर्णके पाप पुरुषके साथ देहको मूलाधार स्थित अग्नि से दाह करके इस बीजके ३२ बार जपसे वाम नासिकासे वायु रेचन करे, तदोपरान्त वाम नासिकामें शुक्लवर्ण "ठं" चन्द्र बीजका ध्यान करके इस बीजके १६ बार जपसे ललाटमें चन्द्रको आनयन कर दोनो नासिकाके छिद्र पकड़ "वं" वरुण बीजके ६४ बार जपसे ललाटके चन्द्रमे गलित अमृत द्वारा मातृकावर्णमय समस्त देह रचना करके "लं" पृथ्वी बीजके ३२ बार जपसे देहमें दृढ़ चिन्ता करके दक्षिण नासिकामें वायु रेचन करे ॥

अथदीक्षा प्रकरणम् ।

गुरुर्दिक्षापूर्वदिने स्वशिष्यमभिमंत्रयेत् ।
दर्भशय्यांपरिष्कृत्य शिष्यंतत्रनिवेशयेत् ॥
स्वापमंत्रेणमंत्रज्ञः शिशोः शिखांप्रबन्धयेत् ।
तन्मंत्रंस्वापसमये पठेद्वारत्रयंशिशुः ॥
श्रीगुरोः पादुकांध्यात्वा उपवासीजितेन्द्रियः ।
नागेहिलिद्रयंशूल पाणयेद्रिटईरितः ।
स्वपमानस्यमंत्रोऽयं शम्भुनापरिकीर्तितः ॥ १ ॥

अर्थ—अब दिक्षा विधान कहतेहैं? गुरुको चाहिये किदिक्षा के एक दिन पहिले शिष्यको बुलाय पवित्र कुशादिके बने हुए आसन पर शयन करवाय निद्राके मंत्रसे शिष्यकी चुटिया रोक बांधे और शिष्यका भी उचितहै किशयन कालमें तीनवार इस मंत्रको पढकर उपवासी व जितेन्द्रिय होकर गुरुजीके कमल रूपी चरणोंका ध्यान करते२ शयन करे। "ॐ मिलि मिलि शूल पाण ये स्वाहा। यह निद्रा का मंत्रहै स्वयं महा देवजी ने इस निद्राके मंत्रको कहाहै।

अथ दीक्षाकालः।

मंत्रारम्भस्तुचैत्रेस्यात् समस्तपुरुपार्थदः।
वैशाखेरत्नलाभःस्याज्ज्येष्ठेचमरणंभवेत्॥
आषाढेबन्धुनाशःस्यात्पूर्णायुःश्रावणेभवेत्।
प्रजानाशोभवेद्भाद्रे आश्विनेरत्नसंचयः॥
कार्तिकेमंत्रसिद्धिःस्यान्मार्गशीर्षेतथाभवेत्।
पोषेतुशत्रुपीडास्याग्माघेमेघाविवर्धनम्।
फाल्गुणेसर्वकामाःस्युर्मलमासंविवर्ज्जयेत्॥
चैत्रेतुगोपालविषयंगौत्तम्युक्तत्वात्।
मधुमासेभवेद्दीक्षादुःखायमरणायच॥

अर्थ—अब दिक्षाकाल कहते है। चैत मास में मंत्रग्रहण करने से समस्त पुरुषार्थ सिद्धि को प्राप्त होते हैं वैशाख में रत्नलाभ ज्येष्ठ में मरण अषाढ में बन्धु नाश श्रावण में दीर्घायु भाद्र में सन्तान नाश आश्विन में रत्न संचय कार्तिक तथा अगहन में मंत्र सिद्धि पौष में शत्रुवृद्धि और पीडा माघ मास में मेघा वृद्धि और

फाल्गुण मास में मंत्रग्रहण करने से साधकके समस्त प्रकार के मनोर्थ सिद्ध होजाते हैं। ऊपर कहे महीनों में मलमास हो तो उस मास में मंत्र ग्रहण नहीं करे दीक्षा ग्रहण करने में जो चैत्र को शुभ कहा है सो केवल गोपालमंत्र की दीक्षा में कहा है क्योंकि चैत्र मास में मंत्रग्रहण करने से मरण प्राप्त होता है।

अथ वारनियमः।

रविवारेभवेद्वित्तं सोमेशांतिर्भवेत्किल।
आयुरंगारकेहंति ततोदीक्षांविवर्ज्जयेत्॥
बुधेसौंदर्यमाप्नोति ज्ञानेस्याद्बृहस्पतौ।
शुक्रेसौभाग्यमाप्नोति यशोहानिःशनैश्चरे॥ १॥

अर्थ—अब वार नियम कहतेहैं। रविवारको मंत्र ग्रहणकरनेसे विद्या प्राप्त होतीहै सोम्वारको शान्ति मंगल वारको आयु का क्षय बुद्धवारको सुन्दरताकी वृद्धि बृहस्पति वारको ज्ञान प्राप्त होताहै शुक्र वारको सौभाग्य और शनि वार में यशकी हानि होतीहै॥

वैष्णवे वैष्णवोग्राह्यः शैवे शैवश्चशाक्तके।
शैव शाक्तोपि सर्वत्र दीक्षास्वामीनसंशयः॥ २॥

अर्थ—विष्नु मंत्र ग्रहण करनेमें वैष्णव गुरु होना चाहिये तथा शैव मंत्र ग्रहण करनेमें शैव गुरु होना चाहिये शाक्ति मंत्र ग्रहण करनेमें शाक्त गुरु होना चाहिये तात्पर्य यहहै कि शैव सब प्रकारकी दीक्षा दे सक्ते हैं। इतिदीक्षा प्रकरणम्

अथ छायापुरुष सिद्धिः।

अथातः संप्रवक्ष्यामि छायापुरुषलक्षणम्।

येनविज्ञानमात्रेण त्रिकालज्ञोभवेन्नरः ॥ १ ॥

अर्थ—अब हम छाया पुरुष के लक्षण कहते हैं जिसके जानने से यह प्राणी त्रिकालज्ञ होजाता है।

कालोदूरस्थितस्यापि येनोपायेनलक्ष्यते ॥
तंवक्ष्यामिसमासेन यथोक्तंशंभुनापुरा ॥ २ ॥

अर्थ—दूरस्थित भी काल जिस उपाय करके दृष्टि गोचर हो उसको मैं संक्षेप कर के कहता हूं जैसे पहिले शिवजीने कहे हैं ॥ २ ॥

एकान्तेविजनागत्वा कृत्वादित्यंचपृष्ठतः।
निरीक्षेत् निजांछायां कण्ठ देशे समाहिता ॥३॥

अर्थ—काल ज्ञान के परिक्षक मनुष्य निर्जन एकान्त बन में जाय समान भूमि में सूर्य को पिछाड़ी करके सीधा खड़ा हो फिर अपनी छाया के कण्ठ देश में देखता हुआ सावधानी में परिक्षा करे ॥ ३ ॥

ततश्चाकाशमीक्षेत् ततःपश्यतिशंकरम्। ओं ह्रीं परब्रह्मणेनमः इतिमन्त्रःअष्टोत्तरशतंवारंजपेत् ४।

अर्थ—बराबर (दोघड़ी पर्यंत छायाको देखा करे) फिर उस छायासे दृष्टिको उठाकर आकाशकी ओर देखेतो साक्षात शिवको देखेगा जिस समय छाया देखनेको खड़ाहो तब १०८ बार इस मंत्रको पढ़े "ओंह्रीं परब्रह्मणे नमः„ ॥ ४ ॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं नानारूपधरंहरम्।
षण्मासाभ्यासयोगेन भूचराणांपतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

१—भूत, भविष्यत, वर्तमान्,

अर्थ—इस प्रकार करनेसे शुद्धस्फटिक मणिके समान-अनेक रूप धारण कर्ता शिवको देखे इस प्रकार छः महीने करनेसे संपूर्ण प्राणी मात्रका आधिपत्य होता है ॥ ५ ॥

वर्षद्वयेनहेनाथ कर्ताहर्तास्वयंप्रभुः ।
त्रिकालज्ञत्वमाप्नोति परमानन्दमेवच ॥ ६ ॥

अर्थ— दो वर्ष इस क्रिया के साधन करने से स्वयं कर्ता हर्ता और त्रिकाल के जाननेवाला परमानन्द होवे ॥ ६ ॥

सतताभ्यासयोगेन नास्तिकिंचनदुर्ल्लभम् ॥ ७ ॥

इसीप्रकार बराबर नित्य प्रति साधन करता रहे तो इस संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो साधक को प्राप्ति न हो ॥ ७ ॥

तद्रूपंकृष्यवर्णयः पश्यतिव्योम्निनिर्मले ।
षण्मासान्मृत्युमाप्नोति सयोगीनात्रसंशयः ॥८॥

अर्थ—यदि यह योगी आकाश में उस छाया पुरुषका वर्ण काले रंग का देखे तो छः महीने में निसंदेह मृत्यु हो॥ ८ ॥

पीतेव्याधिभयंरक्ते नीलेहत्यांविनिर्दिशेत् ।
नानावर्णस्वरूपोस्मिन्नुद्वेगोजायतेमहान् ॥ ९ ॥

अर्थ—यदि पीलावर्ण देखे तो रोग उत्पन्न हो लाल देखे तो भय हो और नीलवर्ण की छाया देखे तो हत्या लगे एवं अनेक प्रकारकी छाया देखे तो उस के चित्त में घोर उद्वेग होवे ॥ ९ ॥

पादेगुल्फेचजठरे विनष्टेमृत्युमादिशेत् ।
अर्धवर्षेणवर्षेण क्रमाद्वर्षद्वयेनच ॥ १० ॥

अर्थ—छाया पुरुष के पैर, टकना, और पेट न दीखनेसे क्रम पूर्वक छः महीने वर्ष दिन और दो वर्ष में मृत्यु हो अर्थात् पैर न दीखने से छः महीने में टकना न दीखने से वर्ष दिन में और पेट न दीखने से दोवर्ष में मृत्यु होती है ॥ १० ॥

विनिष्टेदक्षिणेबाहो स्वबन्धुम्रियतेध्रुवम् ।
वामेबाहौतथाभार्या विनश्यतिनसंशयः ॥ ११ ॥

अर्थ—छाया पुरुषका दाहिना हाथ न दीखनेसे अपना भाई मरे और बायां हाथ न दीखने से अपनी स्त्री मरे इस में संदेह नहीं है ॥ ११ ॥

शिरोदाक्षिणबाह्वोस्तो विनाशेमृत्युमादिशेत् ।
अशिरामासिमरणं विनाजंघेदिनेनवा ॥
अष्टभिः कन्धरानाशे छायालुप्तेचतत्क्षणात् ॥ १२ ॥

अर्थ—छाया पुरुष के शिर और दहना हाथ न दीखने से मृत्यु हो यदि कबध दीखे तो १ महीने में मरे और बिना पिंडुरी के दीखे तो एक दिन में मरे कंधा न दीखने से आठ दिनमें मरे और सर्व छाया न दीखे तो तत्काल मृत्यु हो परन्तु यह काल ज्ञानयोगी पुरुषों को होता है अन्यको नहीं ॥ १२ ॥

इतिछायापुरुषसिद्धिसमाप्तम् ।

इतिश्रीनजीबाबादनिवासीपंडितकुंदनलालात्मजपंडितगौरीशंकरशर्म्मा कृतसिद्धिदाताभा० टी०सहितप्रथमखण्ड संपूर्णम् ॥ १ ॥





॥ श्रीगणेशायनम ॥

मन्त्रसिद्धिभाण्डागार।

(द्वितीयखंड)

सर्वजनवशीकरण

वर्णानामुत्तमं वर्णं मन्थस्थानान्तथैवचम्र ।
ओंकारशिरसंचापि ओंकारशिरसन्ततः ॥ १ ॥
अधोभागेचरेफंच दत्वामंत्रंसमुद्धरेत् ।
निरामिषान्नभोक्ता च जप्तव्योमन्त्र उत्तमः ॥ २ ॥

अर्थ--जो वर्गों में उत्तमवर्ण है वोही मंत्र का स्थान है, ओंकार शिरके स्थान में और दूसरे क प व लिखकर अधोभाग में रेफदेकर मंत्र का उद्धारकरै। मांसरहित अन्नको खाकर मंत्र को सिद्धकरै ॥ १ ॥ २ ॥

क्रों भ्रों व्रों अनेन मंत्रेण। असाध्यमपिराजानं पुत्रमित्राश्चबांधवाः॥ येने गोत्रसमुत्पन्नाः पशवो येच सर्वतः ॥ ३ ॥

अर्थ--क्रों मों त्रों इस असाध्य राजा पुत्र मित्र बांधव जो अपने गोत्र में हैं और जो पशु प्राय हैं ॥ ३ ॥

तेसर्वेवशतांयान्ति सहस्राधंस्यजायनात् ।
दृष्ट्वादृष्ट्वा च साध्यागृहीत्वानामतत्रवै ॥ ४ ॥

अर्थ--उक्त मंत्रको ५०० बार जपनेसे यह सब बसमें होजाते हैं । साध्यों के नाम पूछकर या उन्हें देख कर मंत्र को सिद्ध करे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं क्ष्रीं कलिकुण्डस्वामिनि अमृतवक्रे अमुकं जम्भय मोहय स्वाहा ॥ ५ ॥

अर्थ--यह मंत्र २१वार जप लेनेसे सिद्ध होताहै । उक्रान्त पद्मजीठ कुंकुम और तगर इनको समानले खान पान और स्पर्श में देनेसे सर्वजन वशीकरण होताहै ॥ ५ ॥

ओं नमोमहायक्षणी अमुकंवशमानयस्वाहा ॥६॥

अर्थ--१०००० जपनेसे यह मंत्र सिद्ध होताहै । और इसके जपनेसे सर्वजन वशी करण होताहै ॥ ६ ॥

ओं नमःकटविकट घोररूपिणीस्वाहा ॥ अनेन मन्त्रणसप्ताभिमन्त्रितं भुक्तपिण्डं यस्यनाम्नास साहंस्वाद्यते सद्यवमेववश्योभवति ॥ ७ ॥

अर्थ--ओं नमः कटाविकट घोर रूपिणी स्वाहा । इस मंत्रसे ७वार आभि मंत्रित करके भोजन पिण्डको जिसका नाम लेकर बरावर ७दिनतक खाय वोह अवश्य वशमें होजाताहै ॥ ७ ॥

ओंवश्यमुखी राजमुखी स्वाहा । अनेनसप्तधा मुखप्रक्षालनात्सर्ववश्याभवन्ति ॥ ८ ॥

ओंवश्यामुखी राजमुखी स्वाहा। इस मंत्र को पढ़कर ७ बार मुख धोवै सब वश में होजाते हैं॥ ८॥

ओं राजमुखी वश्यमुखीस्वाहा। वामहस्ते तैलं संस्थाप्य अनामिकयात्रिधा आमन्त्र्य पुनर्मूल मंत्रं त्रिधापठित्वा मुखकेशादौ विलेपयेत्। प्रातः काले शय्यायां स्थित्वा तदासर्वेजना वश्या भवन्ति। व्याघ्रोऽपि नखादति॥ ९॥

अर्थ–ओं राजमुखि वश्यमुखी स्वाहा। बायें हाथ में तेल लेकर कन अंगुली से ३ बार अभिमन्त्रित कर फिर मूलिकाको ३ बार पढ़कर मुख और केशादिकों में लगावै प्रातः काल शय्या में स्थित होकर लगावै तब सब मनुष्य वश में होते हैं। उसको व्याघ्रभी नहीं खाता॥ ९॥

ओं चामुण्डे जय जय स्तम्भय स्तम्भय जम्भय जम्भय मोहय मोहय सर्वसत्वा नमः स्वाहा। अनेन पुष्पाण्यभिमन्त्र्य यस्मै दीयते सवश्यो एकचित्तस्थितोमन्त्री मंत्रंजप्त्वायुतत्रयम्। ततः क्षोभयतेलोकान् दर्शनादेवसाधकः॥ १०॥

अर्थ—ओं चामुण्डे जय जय स्तम्भय स्तम्भय जम्भय जम्भय मोहय मोहय सर्वसत्वान नमः स्वाहा। इस मन्त्र से पुष्प अभिमंत्रित करके जिसको दियाजाय वोह वशीभूत होता है

अर्थ—उक्त मंत्र जपनेवाला चित्तको स्थिर करके ३०००० मंत्र को जपकर अपने दर्शनोंही से लोकों को क्षुभित करसक्ता है १०

ओं नमः कन्दर्प शर विजालिनि मालिनी सर्वलोक वशंकरी स्वाहा।

इति मंत्रमुक्त योगस्याष्टोत्तर सहस्रं जपेत्ततः सिद्धिः । कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यामष्टम्यां उपोषितः। वलिंदत्वा समुद्धृत्य सहदेवीं सचूर्णयेत ॥ ११ ॥

अर्थ—ओं नमः कन्दर्पशर विजालिनि मालिनि सर्वलोकवशंकरी स्वाहा । यह मंत्र उक्त योग में १०८ वार जपने से सिद्धि होती है कृष्णपक्ष की चौदस और अष्टमी को व्रत करके वालि सहदेई की जड़ को उखाड़के चूर्ण करके ॥ ११ ॥

ताम्बूलेनतु तच्चूर्णं दत्तंवश्यकरंध्रुवम्
स्नानेलेपेचतच्चूर्णंयोज्यंवश्यकरंभवेत् ॥ १२ ॥

अर्थ—पान में रखकर जिसको दीजाय वोह अवश्य वशीभूत होजाता है । औ इसी का चूर्ण स्नानीय जलमें मिलाकर स्नान कर ने से अथवा शरीर में लेप कर ने से सर्व जन वशाकिरण होता है ॥ १२ ॥

भूताख्यपरमूलंच जलेनसहघर्षयेत् । विभूत्या संयुक्तमेतं तिलकंलोकवश्यकृत् ॥ १३ ॥

अर्थ—शाखोटवृक्ष की जड यलसे घिसकर विभूति के ७ लगावै तौ संसार वशीभूत होता है ॥ १३ ॥

पुष्पेपुनर्नवामूलं करेसप्ताभिमन्त्रितम् । वध्वा सर्वलपूजस्यान्मंत्रस्तस्त्वत्रैवकथ्यते ॥ १४ ॥ ऐरण्डं क्षोभयभगवतित्वंस्वाहा । मंत्रमिममुक्त योगस्य पूर्वमयुत द्वयजपत्ततः सिद्धिः अपामार्गस्यमूलंतु पेषयेद्रोचनेनच ललाटेतिलकंकुर्या दशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १४ ॥

अर्थ—पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को हाथ में सातवार अभिमन्त्रित कर बांधे तो सर्वत्र पूजित होता है। वोह यह मंत्र है ऐं ह्रं क्षोभयभगवतित्वं स्वाहा। इस मंत्र से १०००० जप कर सिद्ध करना चाहिये। चिरचिटे की जड़ को गोरोचन के साथ पीसकर उसका तिलक मस्तक में लगाने से त्रिलोकी को अपने वशमें करसक्ता है

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकंलोक वश्यकृत्।
शिरसाधारयेत्तश्च चूर्णंसर्वंतुवश्यकृत् ॥ १५ ॥

अर्थ—गोरोचन और सहदेई इन दोनों को मिलाकर तिलक लगाने से सबको वश में करसक्ता है। और उसका चूर्ण शिरके ऊपर धारण करने से संसार वशमें होजाता है।

अथ राजवशीकरणम्।

ओं ह्रीं सः अमुकं मे वशमानयस्वाहा। पूर्वमेवं सहस्रं जप्त्वा नेनमंत्रेण सप्ताभिमंत्रितं तिलकं कुर्यात्।

चम्पकस्यतुवन्दाकं करेवध्वाप्रयत्नतः।
संगृह्यभरणीऋक्षे पुष्पर्क्षेविधानतः ॥ १६ ॥

अर्थ—ओं ह्रीं सः अमुकं मे वशमानयस्वाहा। इस मन्त्रको पहले सहस्र वार जपकर फिर सातवार इन, औषधियों को अभिमन्त्रित कर तिलक लगावे। चम्पे के बन्दे बन्दे को यत्नपूर्वक भरणी नक्षत्र में अथवा पुष्य नक्षत्र में विधान सहित हाथ में वांधे तो ॥ १६ ॥

राजालंनरत्नाणादेन मनुष्योवशमानयेत्।

करेसुदर्शनामूलंबध्वाराजाप्रियोभवेत्।

अर्थ—राजा जो दिखाने से उसी समय राजा वश में होजाता है। अथवा सुदर्शन का जड को हाथ में बांधने से राजाका प्यारा होता है॥ २॥

स्त्रीवशीकरण।

पुष्ये पुष्पं च संगृह्य भरण्यांतु फलंतथा। शाखां चैवविशाखायां हस्तेपत्रं तथैव च। मूलेमूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्पतत्क्रमात्। पिष्ट्वाक पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम्। तिलकेस्त्रीव शंयाति यादिसाक्षादरुन्धती। काकजंघावचा कुष्ठंशुक्रशोणितमिश्रितम्। तद्दत्तेभोजनेबाला स्मशानेरोदितिसदा। ओंनमोभगवते रुद्राय ओंचामुण्डे अमुकीं व शमानयस्वाहा॥ १॥ उक्तयोगानामयमेवमंत्रः। प्रामर्मुखन्तुप्रक्षाल्य सप्तवाराभि मंत्रितम्। यस्यानाम्नापिवेत्तोयं सास्त्रीवश्याभवेद्ध्रुवम्॥

अर्थ—पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे के फूल भरणी नक्षत्रमें फल विशाखा में शाखा और हस्त में पत्ते मूल में जड़ लावै। इनको क्रम से ग्रहण कर कपूर मिलाकर पीसे तिसके बाद कुमकुम और गोरोचन मिलावे। इसका तिलक करने से चाहै जैसी स्त्री हो वश में होजाती है यह प्रयोग ऐसा उत्तम है कि-साक्षात् अरुन्धती भी वश में होसक्ती है चौंटली बच कूठ वीर्य और अपना रुधिर

मिलाकर खवादेने से स्त्री सदा स्मशान में रोदन करती है (ओं नमोभगवते रुद्राय चामुण्डे अमुकीं मेवशमानय स्वाहा) ऊपर कहे योग का यह मन्त्र है सातवार मंत्र पढकर अपना मुख सातवार धोने से जिस स्त्री का नाम लेकर जल पिये वोह स्त्री अवश्य वश में होती है॥

ओं नमः क्षिप्रकामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा। कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलेनसमयूतम्। अवश्यायै स्त्रियैदद्याद्दश्याभवतिनान्यथा। ओं हूं स्वाहा अनेनाभिमंत्र्यदद्यात्॥ २॥

अर्थ—मंत्र यह है। ओं नमः क्षिप्रकामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा। काली अपराजिताकी जड़ पान के साथ जो अवश्या (जो वश में नहो) स्त्रीको देता है वोह स्त्री वशमे होजाती है। ओं हूं स्वहा इस मंत्र से उपरोक्त औषधियें अभिमंत्रित कर साध्य साधक का नामलेकर सातवार अभिमन्त्रित करे॥ २॥

साध्य साधक नाम्नातु कृत्वासप्ताभिमंत्रितम्॥ दीयते कुसुमंयस्यै सावश्याभवति ध्रुवम्॥ ३॥

अर्थ—जिस को फूल दियेजायँ वोह स्त्री वस में होजातीहै॥३॥

सुसाधितोह्ययं मंत्रोऽवश्यं फलदायकः। तस्मादेतत् प्रयत्नेनसाधयेमन्त्रमुत्तमम्॥

अर्थ—साधना करने से यह मन्त्र अवश्य मेव फलदेता है इस कारण इस सर्वोत्तम मंत्र की साधना करनी चाहिये॥

ओं हूं स्वाहा। विशाखायांतु वन्दाकं मंगले च

समाहरेत्। हस्ते वध्वतुकुरुतेवशतां वरयोषि ताम्॥

अर्थ—ओं ह्रूं स्वाहा। विशाखा नक्षत्र और मंगलवार में वन्दाकार उसे हाथ में बांधकर श्रेष्ठा स्त्रियों को अपने वश में करलेता है॥

कृष्णोप्तलं मधुकरस्यचपक्षयुग्मं मूलं तथा तगरजंसित काक जंघा। यस्याःशिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं दासी भवेज् झटिति सातरु णं विचित्रम्॥

अर्थ—काले कमल। भौंरे के दोनों पख। पौहकरमूल। स्वेततगर। काकजघा। इन सब का चूर्ण करके जिस के सिरपर डाले वोही स्त्री तुरन्त दासी होजायगी॥

सव्येन पाणि कमलेनरतावसानेयोरेतसा निज भवेनविलासिनीनाम्। वामंविलिम्पतिपदंसह सैवयस्यावश्यैवसाभवतिनात्रविकस्पभावः॥

अर्थ—जो पुरुष * करने के अनन्तर अपने * को बांयें हाथ से * के बांयें तलुए में मलता है वोह * निस्सन्देह उस के वश में होजाती है।

सिंन्धूमाक्षिककपोत मलानि पिष्ट्वा लिंगं वि लिप्य तरुणीरमतेनरोयः। सान्यं न याति पुरु षं मनसापिनूनंदासी दासी भवेदिति मनोहर दिव्यमूर्त्तिः॥

अर्थ—जो पुरुष सैंधानौन सह कबूतर की वीट इन सबको पीसकर अपने * के ऊपर लेप करके * से रमण करता है' वोह * मनसे भी दूसरे पुरुष के पास नहीं जाती और सदा दासीकी समान रहकर उसीको मनोहर दिव्य मूर्ति मानती है ॥

गोरोचना शिशिर दीधित शम्भुबीजैः काश्मीर चन्दनयुतै कनक द्रवैश्च। लिप्त्वाध्वजं परिरम त्यवलां नरोयां तस्याएवहृदये मकुरुत्वमेति ।

अर्थ—गोरोचन कुमुद पारा केशर चन्दन धतूरेका रस इन सबको शिश्नके ऊपर लेपकर जिस स्त्रीसे रमणकरै वोह स्त्री अपने हृदयसे उसे क्षण मात्रकोभी दूर नहीं करती।

पुष्ये रुद्रजटामूलं मुखस्थंकारयेद्बुधाम् ।
ताम्बूलादौ प्रदातव्यं वश्यभवतिनिश्चितम् ॥

अर्थ—पुष्य नक्षत्र में शंकर जटाकी जड़को मुखमें रखकरता म्बूलादिमें जिस को दे वोह स्त्री वश में होता है ॥

तथैवपाटलामूलं ताम्बूलेननु वश्यकृत् ।
त्रिपत्रमार्एडकामूलं पिष्ट्वागात्रेतुसंक्षिपेत् ॥

अर्थ—इसीप्रकार पाटल की जड़को ताम्बूल के साथ देनेसे स्त्री वश में होजाती है। वेल और मजीठ की जड़को पीसकर कणिका मात्र भी उसके ऊपर डालदे ॥

यस्यासावशतांयाति बिन्दुमात्रेणतत्क्षणात् ।
स्वकीयकाममादाय कामदेवंस्मरेत् पुनः ॥
तरुण्याहृदयंदत्तं तत्क्षणात्स्त्रीवशाभवेत् ।
गिलित्वापारदंकिंचित्रम्यतेनायकायदि ॥

प्राणान्तेपिच सानारी तंनरंनविमुंचति ।
कामाक्रान्तेनाचित्तेन मासार्धंजपतेनिशि ॥

अर्थ—वोह अवश्य वश में होजाती है इसमें सन्देह नहीं है अपने * को लेकर कामदेव का स्मरण करै और स्त्री के हृदयमें रखनेसे तत्कालस्त्री वसमें होजातीहै । कुछेक थोडे शोधेहुए पारे को निगळ यदि स्त्रीके साथ रमण करैतो वोह स्त्रीजन्म पर्यन्त उस पुरुषको नहीं छोड़तीहै ।

और कामयुक्त चित्तहो होकर रात्रीके समय जो १५ दिन पर्यंत जप करताहै ।

अवश्यं कुरुतेवश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ।

अर्थ—तौयह अपने स्वाधीन अवश्यही कर लेताहै ।

ऐं पिं स्थां क्लीं कामपिशाचनिशीघ्रं अमुकीं ग्राहय २ कामेनसमरूपेण नखैर्विदारय २ द्राव य२स्नेहेन बन्धय बन्धय श्रींफट् । अयुतं द्वयेन सिद्धिः ॥

अर्थ—ऐं पिं स्थां क्लीं काम पिशाचनि शीघ्र अमुकीं ग्राहय २ कामेन समरूपे नखैः विदारय२ विद्रावय विद्रावय स्नेहेन बन्ध य बन्धय श्रीं फट् । इस मन्त्रको २०००० जप करने से सिद्धि होतीहै ।

नागपुष्पं प्रियंगूंच तगरं पद्मकेशरम् ।
जटामांसीं समंनिस्वं चूर्णयेन्मंत्रवित्तमः ॥

अर्थ—नाग पुष्प प्रियंगु तगर पद्म केशर जटामांसी इनके समान नींमका चूर्ण लेना चाहिये ।

स्वाङ्गन्तुधूपयेत्तेन भजते कामवत्प्रियः।
ओं मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय एभ्य
उपद्रवेभ्यः स्वाहा। धूप मन्त्रः।
पानीयस्याञ्जलीन्सप्तकृत्वाविद्यामिमांजपेत्।
सालंकारांनरः कन्यां लभतेमासमात्रतः।

अर्थ— इस के द्वारा अपने अंग को धूपित करे तौ स्त्री अपने पति को कामदेव के समान मानती है।

अथमंत्र।

ओं मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय संक्षोभय उपद्रवेभ्यः स्वाहा।

अर्थ—अंजुली में जल लेकर इस विद्याका जप करे तौ एक महीने में वस्त्र आभूषणों सहित सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है।

ओं विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिः
सुरूपां सालं कारां कन्यांदेहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।
कन्याग्रहे शालकाष्टं क्षिपेदेकादशांगुलम्।
ऋक्षेतु पूर्वफाल्गुन्यां यस्तांकन्यांप्रयच्छति।

अर्थ—ओं विश्वावसुर्नामगन्धर्वः कन्यानामाधिपतिः सुरूपां सालंकारां कन्यांदेहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा। कन्याकेघर में जिस दिन पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रहो उसदिन ११अंगुलका शाल काष्ठ डालदे तौ कन्या उसे अवश्यही मिलेगी।

अथपति वशीकरण।

खंजरीटस्यमांसन्तु मधुनासहपेषयेत्।
अनेन योनिलेपेन पतिर्दासो भवेद्ध्रुवम्॥

अर्थ—खजरीट (ममोले) का मांसलेके शहतके साथ पीसै फिर इसका लेप जोस्त्री अपनी * में करतीहै उसका पतिदास की समान बशमें होजाताहै।

पंचांगदाडिमंपिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुतम्।
योनिलेपात्पतिंदासं करोत्यापि च दुर्भगा।
कर्पूरदेवदारुंच सक्षौद्रं पूर्वतत्फलम्।

अर्थ—दाडिमके पंचांगको श्वेत सरसोंके साथ पीसकर अपनी * में लेप करनेसे दुर्भगा स्त्रीभी अपने पतिको दासकी समान बशमें कर लेतीहै। इसी प्रकार कपूर देवदारु और शहत यहभी पहलेकी समान फल देताहै।

ओं कामकाममालिनी पतिंमे वशमानय ठः ठः।
उक्तयोगानी सप्ताभिमंत्रिते सिद्धिः।
रोचनामत्स्यपित्तं च पिष्ट्वापि तिलकेकृते।
वामहस्त कनिष्ठायां पतिर्दासो भवेद्ध्रुवम्।

अर्थ—ओं काम काम मालिनी पतिं मे वशमानय ठ ठः इस मंत्रसे उपरोक्त औषधियों को सातवार अभिमन्त्रित करके प्रयोग करै। गैारोचन। मछली का पित्ता। इन दोनों को पीसकर बांये हाथ की कन अंगली से तिलक लगाने से पति निश्चय अपना दास होजाता है

अथ मोहन ।

भृंगराजः केशराजो लज्जाच सहदेविका ।
एभिस्तुतिलकंकृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ।

अर्थ—भागरा । दूसरा भांगरा । लज्जावती । सहदेई । इनका तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकी को मोहित करसक्ता है ॥

तालकं कुटनींचैव भृंगपक्षंसमंसमम् ।
कृष्णोन्मत्तस्यकुसुमं वटिकां कारयेद्बुधः ।
तेनैव तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ।
आदौसप्तस्वराग्राह्याश्चान्ते हुंकारसंयुताः ॥
ओंकारं शिरसिकृत्वा हूं अन्तेफडितिन्यसेत् ।
ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हुं फट् ।
अनेन मंत्रेण कृत्वाताम्बूलभावनां साध्येमुखे
निक्षिपे मोहमायाति तत्क्षणात् ।

अर्थ—हरताल । मैनसिल । और भौंरे के पंख इन सब को बराबर लेकर धतूरे के फूल मिलाकर गोली बनावै । उसी से तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकी को मोहित कर सक्ता है । प्रथम ७ बार स्वर उच्चारण कर अन्त में हुंकार को संयुक्त करै ओं प्रथम लगाके अन्त में फट् लगावै यह मंत्रोद्धार हुआ ।

ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हुं फट् ।

अर्थ—इस मंत्र से ताम्बूल को भावना देकर साध्य को खवावै तो वोह तत्काल ही मोह को प्राप्त होजाता है ।

इतिमोहन समाप्त ।

शुक्रस्तम्भन।

इन्द्रवारुणिका मूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत्।
कटुत्रयैर्गवाक्षीरैः संपिष्ट्वागोलकीं कृतम्॥
छायाशुष्कंस्थितेचास्ये वीर्यस्तम्भकरंनृणाम्।
नीलीमूलंश्मशानस्थं कट्यांबध्वातुवीर्यधृक्॥

अर्थ—जिस दिन पुष्यनक्षत्र हो उस दिन नंगा होकर इन्द्रायण की जड़ को उखाड़कर उसे सोंठ मिर्चे और पीपल के साथ पीसकर गौके दूध में गोली बनावें। और उसको छाया में सुखाले उस में से एक गोली मुख में रखकर * करने से * स्तम्भन होता है॥

अथवा स्मशानमें उत्पन्न हुए नील की जड़को कमर में बांध कर रमण करने से * स्तम्भन होता है॥

कृष्णोन्मत्तत्वचामूलैर्मधुपिष्टैःप्रलेपयेत्।
लिंगंतदारमेत्कांतां स्वभाववद्विगुणांनरः॥
भृंगीविषंपारदंच प्रत्येकंतुद्विगुञ्जकम्।
वराटाक्षंक्षिपेत्तंविंदुः स्थिरःस्याच्छिरसाधृतम्॥
रक्तापामार्गमूलंतु सोमवारेनिमंत्रयेत्।
भौमेप्रातः समुधृत्य कट्यांबध्वातुवीर्यधृक्॥

१—किंचिन्मात्र अहिफेन को दीपक के ऊपर द्रव करके बतासे में रखकर खाने से वीर्य स्तम्भन होता है। अफीम सेवन करनेवालों का प्रायः शुक्र स्तम्भन रहता है।

१—मारणं न वृथाकार्य्यं यस्य कस्यकदाचन प्राणांत संकटेजाते कर्तव्यं मृतिमिच्छता।

अर्थ—काले धतूरे और बच की जड को शहत के साथ पीस कर * के ऊपर लेपकर रमण करने से दूने समय पर्यंत * करसक्ता है ॥

अभ्रक विषपारा इनको शुद्ध करके हरेक को दो २ चौंहट लीं भरले इनके प्रयोग से * स्तम्भन होता है।

चिरविटे की जड़ को सोमवार के दिन निमन्त्रण देकर मगल के दिन सबेरेही उखाड लावै। उसे कमर में बांधकर रमण करने से * स्तम्भन होता है ॥

नागकेसरकर्षंतु गोघृतेपातयेद्बुधः।
भुक्त्वारमेच्चरमणीं तदाविंदुस्थिरोभवेत्॥

अर्थ—एक कर्ष नागकेसर को गोके घृत में मिलाकर भोजन करके स्त्री के साथ रमण करने से शुक्र स्तम्भन होता है।

श्वेतुपुंखाचरणंगृहीत्वा पुष्यार्कयोगे पुरुषस्य कट्याम्। कुमारिकाकर्त्तितसूत्रकेन बंद्धजयस्याशुमनोजवीजं ॥

अर्थ—श्वेत शरफौंके की जड को पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार के दिन ग्रहण करके क्वांरी कन्या के कातेहुए सूत से पुरुषकी कमर में बांध वीर्य का स्तम्भन होता है।

छाग्येडकादुग्धपिष्टं लज्जामूलंप्रलेपयेत्।
हृदयेपादयोर्वीर्यं द्रवते न कदाचन ॥

अर्थ—बकरी और भेडीके दूध में लज्जावन्ती की जड पीस कर हृदय और चरणो में लेप करने से पुरुषका वीर्य स्तम्भन होता है ॥

श्वेतार्कतूलकैर्वर्त्तीदीपः शूकरमेदसा।

यावज्ज्वलतिदीपोऽयं तावद्वीयनमुंचति ॥

अर्थ—श्वेत आक की रुई की बत्ती बनाके शूकर की चर्बी से दीपक बाले तो जबतक दीपक जलता रहैगा तबतक वीर्यपात न होगा ॥

मूलंवाराहकांताया अजाक्षीरेणपेषयेत् ।
लिंगलेपेन चानेन वीर्यस्तम्भनकरंभवेत् ॥

अर्थ—बाराही कन्दकी जडको बकरीके दूध में पीसकर * के ऊपर लेप करने से वीर्य स्तम्भन होता है ।

अथ आकर्षण ।

चतुर्थवर्णमाकृष्य द्वितीयवर्गसंस्थितम् । कृत्वा
त्रिविधहा हांतं तदन्ते हेद्वितीयकम् । अंकार
शिरसंकृत्वा प्रत्यक्षरप्रजायनम् । सहस्रार्धस्य
जापेनफलं भवतिशाश्वतम् ॥

ॐ हां हां हां हें हें ।

अर्थ—चौथे वर्ण से तीसरे को संयुक्त कर ऊपर अनुस्वार लगाके ५०० जप करने से सिद्धि होती है मंत्र यह है ॐ हां हां हां हें हें ।

भक्ष्यद्रव्यंस्वहस्तेन कृत्वामंत्रविभावनम् ।
दीयतेयस्यभक्ष्यंतत् सर्वेषांप्राणिनांशुभे ॥

अर्थ—भक्ष्य द्रव्य को अपने हाथ में लेकर उस में मंत्रकी भावना देके जिस को भक्षण कराओ वोह प्राणी जहां लेजाओ वहां होजायगा ॥

अथ वाजीकरण ।

विदारीकन्द कल्कन्तुघृतेनपयसा नरः ।
उदुम्बर समंस्वादेत् वृद्धोऽपितरुणादते ॥

अर्थ— विदारी कन्दके कल्क को घृतयुक्त दूध के साथ १. तोलाभर पीनेसे वृद्ध पुरुषभी तरुणकी समान रमणकरने में समर्थ होता है ॥

पिप्पलीनां रसोपेतां वस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा ।
भापितो भक्षयेद्यस्तुसगच्छेत् प्रमदाशतम् ॥

अर्थ— बकरे के दोनों अण्डकोशोंको प्रथम जलमें उबालकर दूधसे निकाले हुए घृत में भूनकर अनुमान से उस में सेंधा नौन मिलाके पीपलके चूर्णकसाथ खानेसे अनेक स्त्रियोंकेसाथ रमण करसक्ता है ॥

गो क्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरि नागवलाऽति वलाच । चूर्णमिदं पयसा निशिपेयम् यस्यगृहे प्रमदा शतमस्ति ॥

अर्थ—जिस पुरुषके घरमें सैकड़ों स्त्रियेंहों अथवा जो सैकड़ों स्त्रियोंसे गमन करना चाहै वोह पुरुष गोखरु ताल मखाने शता वर कौंचके बीज नागवाला और खरैंटी इनके चूर्णको रात्री के समय दूधके साथ पान करनेसे सैकड़ों स्त्रियोंको तृप्त कर सक्ताहै

अस्वत्थफल मूलंत्वक् लंगासिद्धं पयोनरः ।
सपीत्वा शर्कराक्षौद्रं कलिंग इव हृष्यते ॥

अर्थ—पीपलके फल जड़ छाल और कन्नी इनको अनुमान

के अनुसार, दूधमें डालकर औटावे, फिर शीतलहो जानेपर मिश्री और शहद मिलाकर बूरा मिलाके पीनेसे चिड़की समान रति करनेमें हर्ष होताहै।

अथ पंचांगशुद्धिः।

पंचांगशुद्धिः विनापूजायानिष्फलत्वात्तन्निरुप्यते। तत्र कुलार्णवे। आत्मस्थानमंत्र-द्रव्य-देवताशुद्धिस्तुपंचमी। यावन्नकुरुतेदेवितस्य देवार्चनं कुतः। पंचशुद्धिंविना पूजा अभिचाराय कल्पते॥ १॥

अर्थ—अब पञ्चाङ्गशुद्धि कही जाती है। पञ्चाङ्गशुद्धिके विना पूजा निष्फल होती है। इस कारण पञ्चाङ्ग शुद्धि कहीजाती है कुलार्णव में लिखा है कि आत्मा, स्थान, मन्त्र, द्रव्य और देवता इन पांचों को पंचांग शुद्धि कहते हैं। जब तलक पचांग शुद्धि नहीं करी हो, तब तलक उसका पूजा में अधिकार नहीं होता है। पचांग शुद्धि बिना करेहुए देवता का पूजन करने पर उस पूजन को देवता ग्रहण नहीं करे हैं वह पूजन अभिचार के अर्थ होता है॥ १॥

सुस्नातैभूतशुद्ध्याच प्राणायामादिभिस्तथा। षडङ्गाद्याखिलन्यासै रात्मशुद्धिरुदीरिता॥२॥

अर्थ—तीर्थादि शुद्ध जल में स्नान करने से, भूत, शुद्धि प्राणायाम और षडङ्ग न्यास करने से आत्मा की, शुद्धिहोती है॥२॥

सन्माज्जेनानुलेपाद्यै र्दर्पणोदरवत्शुभम्। वितान धूपदीपादि पुष्पमाल्यादिशोभितम्॥

पंचवर्णरजोभिश्चस्थानशुद्धिरितीरिता ॥ ३ ॥

अर्थ—जिस स्थान में पूजादि कार्य्य करे, उस स्थान को जल से धोकर तथा गोवर से लीपकर दर्पण की भांति निर्मल करले गेंद चदोवा धूप, दीप और पुष्प माला से उस स्थानको सुशोभित करे तथा पांच प्रकार के रंगो से चित्रित करे, इस को स्थान शुद्धिकहते हैं ॥ ३ ॥

ग्रथित्वांमात्रिकावर्णे मूलमन्त्राक्षरांणिच।
क्रमोत्क्रमातद्विरावृत्यामन्त्रशुद्धिरितीरिता॥४॥

अर्थ—मातृ का वर्णों से अनुलोमविलोम भावसे मंत्रके अक्षरों को पुटित करके दोवार आवृत्ति करे इस प्रकार करने से मन्त्र शुद्धि होती है ॥ ४ ॥

पूजाद्रव्याणि संप्रोक्ष्य मूलास्त्रेश्चविधानतः।
दर्शयेद्धेनुमुद्रादीन् द्रव्यशुद्धिः प्रकीर्त्तिता॥५॥

अर्थ—पूजा की सम्पूर्ण सामग्रीको कुशा के अग्रभाग से मूल और फट इस मन्त्र से प्रोक्षण करके धेनु मुद्रा दिखाने से द्रव्य शुद्धि होती है ॥ ५ ॥

पीठदेवीं प्रतिष्ठाप्यसकली कृत्यमंत्रवित्।
मूलमन्त्रेणमाल्यादीन्धूपादीनुदकेनच ॥
त्रिवारं प्रोक्षयेद्विद्वान देवशुद्धिरितीरिता।
पञ्चशुद्धिंविधायेत्थं पश्चात्पूजांसमाचरेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—साधक पीठ शक्तिकी पूजा करके मूल मंत्रके द्वारा सकली करण मुद्रा करके सकली करण करे और मूल मन्त्र से

माला आदि धूप दीप का मोक्षण करे, इस प्रकार करनेसे देव शुद्धि होती है।

इस प्रकार पचाङ्ग शुद्धि करके देवता का अर्चन करे ॥ ६ ॥

इति पचाङ्ग शुद्धि

॥ अथ कर्ण पिशाचीमन्त्रः ॥

॥ तदुक्त तन्त्रान्तरे ॥

कर्णस्येक्षणलोहितारकगतो नन्ताश्चिकारोवदा। तीतानागत शद्धयुक्तभुवने श्री वन्हि जायान्विता ॥ तारार्द्योमनुरेष लक्षजपतो व्यासेनसंसेवितः । सर्वज्ञं लभतेऽचिरेण नियतं पैशाचिकी भक्तितः ॥ १ ॥

अर्थ—अब कर्ण पिशाची मन्त्र कहा जाताहै ।—तन्त्रान्तर में लिखा है कि" ॐ कर्ण पिशाचि, वदातीता, नागतह्रीं, स्वाहा। इस मन्त्र का एकलक्ष जप करके व्यासजी ने शीघ्र सर्वज्ञता प्राप्त करी है ॥ १ ॥

कहयुग्मं कालिकेच गृन्हयुग्मं तथैवच । पिंडंपिशाचिस्वाहेति नृपाणः कथितःप्रिये ॥२॥

अर्थ—कर्णपिशाच का दूसरा मंत्र यथा-कह, कह, कालिके गृह्ण गृह्ण पिंडं पिशाचि स्वाहा ॥ २ ॥

ध्यानं यथा–कृष्णां रक्त विलोचनां त्रिनयनां खर्वांच लम्बोदरीं । वन्धूकारुण जिह्विकां, वरकराभीयुक्‌ करामुन्मुखीं । धूम्रार्चिर्जटिलां

कपाल विलसत् पाणिद्वयां चञ्चलां। सर्वज्ञा शवहृत्कृताधिवसतीं पैशाचिकींतानुमः॥ ३॥

अर्थ— कर्णपिशाची का ध्यान यथा—कर्ण पिशाची देवी का शरीर कृष्ण वर्ण है, तीनों नेत्रों की आभा रक्तवर्ण है, आकार खर्व (छोटा) है, उदर (पेट) बड़ा है, और जिह्वा बन्धूक पुष्प की नाईं अरुण वर्ण है। देवी जी के एक हाथ में वरमुद्रा दूसरे हाथ में अभयमुद्रा है और अन्य दोनों हाथों में दो नर कपाल हैं। शरीर में से धूम्रवर्ण ज्वाला निकल रही है, देवी का मुख ऊपर को उठा हुआ है शिर पर जटा विराजमान है और चञ्चल प्रकृति है। कर्णपिशाची देवी सम्पूर्ण विषयों को जानने वाली है और शव के हृदय पै वास करती है इस प्रकारकी आकृति वाली देवी को नमस्कार करताहू॥ ३॥

अथपूजा—निशायामार्द्धरात्रौ च हृदिन्यस्यपि शाचकींदग्धमीनंवर्लींदत्वा रात्रौसम्पूज्यसंजपेत्॥ ४॥

अर्थ—अब उक्त देवता की पूजा पद्धति कही जाती है। साधक आधीरात के समय देवी का हृदय में ध्यान करके दग्ध मत्स्य वलिप्रदान पूर्वक पूजा और जप करै॥ ४॥

ओंकर्णपिशाचि दग्धमीनवलिंगृन्हं गृन्हमम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहेति दग्धमीन वलिंदद्यात्५

अर्थ—ओं कर्णपिशाच इत्यादि इस ऊपर लिखे मन्त्र से दग्ध मीन बलि देनी चाहिये॥ ५॥

रक्तचन्दन बन्धूक जपापुष्पादिकं चयत्।

अमृतं कुरुदेवेशि स्वाहेति प्रोक्षयेज्जलैः ॥ ६ ॥

अर्थ—लालचन्दन, बन्धूक, पुष्प जवा पुष्प, आदि पूजा की सम्पूर्ण सामग्री को "ओं अमृतं कुरुकुरु स्वाहा" इस मंत्र से जल के द्वारा प्रोक्षण करना चाहिये ॥ ६ ॥

पूर्वान्हेकिंचितुजप्त्वा मध्यान्हेएकभक्तम् निरामिषं भुक्त्वरात्रा वपितद् संख्यंजपेत् अन्यत् किंचिन्नभुक्तव्यं तांबूलादिकंविना जपरूपदशांशंतर्पणम् । ओंकर्णपिशाचींतर्पयामिस्वाहा। एवं क्रमेण लक्षमेकं पुरश्चरणंकृत्वा दशांशं होमयेत् । तद्भावे दशांशंतर्पणंकृत्वा वरंप्रार्थयेमूलं रक्तचन्दनेन लिखित्वा यन्त्रोपरिइष्ट देवतां पूजयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ—दिनके पहिले भाग में किंचित जप करके दूसरे भाग में मांस रहित एक अन्न का भोजन करे और रात्रि में भी पहिले की तरह जप करे। ताम्बूलादि के सिवाय और कुछ भोजन नहीं करे। रोज़ जितना जप करे, उस से दशांश संख्या "ओं कर्ण पिशाची तर्पयामि स्वाहा" इस मंत्र से तर्पण करे। इसप्रकार एक लक्ष जप करके दशांश संख्या होम करने पर इस मंत्र का पुरश्चरण होता है। होम करने की समर्थ नहीं हो तो दशांश तर्पण करकेही वर प्रार्थना करे। फिर लालचंदन से मूलमंत्रको लिख कर यंत्र के ऊपर लिखकर इष्टदेवता का पूजन करे ॥ ७ ॥

अथासिद्धि लक्षण मुच्यते ।—गगने हूं कारादि

श्रवण दीर्घाग्नि शिखारूपसन्दर्शनात्। सिद्धि र्भविष्यतीति ज्ञात्वा तथा विभ्रमाचरेत्॥ ८॥

अर्थ--मंत्र सिद्धि का लक्षण कहा जाता है।--पूर्व कथनानुसार पुरश्चरण करने पर जो आकाश में हूकारध्वनि सुनाई देवे और दीर्घाकार अग्निशिखा दीखे, तो मंत्र सिद्धि होगई ऐसा निश्चय करके उसके योग्य कार्य्य करे॥ ८॥

मंत्रांतरम्। प्रथवं मायो कर्णपिशाचि में कर्णे कथयहूंफट् स्वाहेति। प्रदीपतैलं पायो देर्दत्वा रात्रौलक्षं जपेत्॥ ततः सर्वज्ञो भवति। नास्य पुजाध्यानम्॥ ९॥

अर्थ--कर्ण पिशाची का अन्य मंत्र यथा ओंह्रीं कर्णपिशाचि में कर्णे कथय हू फट् स्वाहा। रात्रि के समय दीपक का तेल पैरों में मलकर उक्त मंत्र का एक लक्ष जप करे। इस प्रकार करने पर साधक सम्पूर्ण वार्त्ताओंका जाननेवाला होजाता है। इसप्रकार करनेसेही यह मंत्र सिद्ध होजाता है इस मंत्र में ध्यान पूजादिका प्रयोजन नहीं है॥ ९॥

तारंकामबीजंजयादेविस्वाहा। अस्यापिऋष्यादिन्यासा देरभावः। पूर्वं लक्षं जपत्वागृहगोधिकां निपात्य, तदुपरि जयादेवीं यथा शक्ति संपूज्य, तावत् जपेत् यावत् साजीवति, ततः सिद्ध्यति। सिद्धिस्तु मनसादि प्रश्ने कृतेसा आयाति, ततस्तस्याः दृष्टेसर्वं भूत भविष्यादिकं पश्यति॥ १०॥

अर्थ—कर्णपिशाची का मन्त्रांतर यथा। ओं ह्रीं जयादेवि स्वाहा। इस मंत्र में ऋष्यादि न्यास नहीं करने होते हैं। पहिले उक्त मंत्र का एक लक्ष जप करके एक गृह गोधिका (छपकली) को मार उसके ऊपर जयादेवि की यथाशक्ति पूजा करे। तथा जब तलक वह गृह गोधिका जीवित नाहो, तब तलक जप करना चाहिये। जब देखै कि गृह गोधिका जीवित होगई तो जानके कि मंत्रसिद्धहोगया इसमंत्रकी सिद्धि होजाने पर साधक जब अपने मन में किसी प्रश्न को करता है उसी समय देवी साक्षात् आकर उस प्रश्न का यथार्थ उत्तर देती है। तथा साधक उसके पृष्ठ में सम्पूर्ण भूत और भविष्यत विषय लिखाहुआ देखता है॥ १०॥

इति।

निद्रालुः।

श्मशान् मृताक्षिपेत् गेहे कृष्णगोमूत्र मृत्तिकाम।
एवं निद्रावली मायासंक्षेपात् कथयामिते॥११॥

अर्थ—निद्रावली माया संक्षेपसे कहतेहैं। श्मशानसे कृष्णवर्ण गोमूत्र मृत्तिका लाकर जिसके घरमें फेंकदी जाय तो वहां के सब मनुष्य सोजायँगे॥ ११॥

अथादृश्योपायकरणम्।

कथयाम्य धुनाभद्रे अदृश्यभाव मौषधम। दण्ड
काकस्यरुधिरः पितंज जम्बुकस्य च॥ १२॥

अर्थ—हे भद्रे! अब अदृश्य भावकी औषधि कहताहूं। दण्ड काकका रुधिर और गीदड़का पित्त॥ १२॥

भल्लूक पेचकस्यासि वाम दक्षिणयोरपि । एषां
पिष्ट्वा समंचैव वटिकां कारयेत्ततः ॥ १३ ॥

अर्थ--भालूके बायें तरफकी हड्डी और उल्लूके दाहिनी तरफकी हड्डी इन सबको सममाग पीसकर गोली बनावें ॥ १३ ॥

छायायां कारयेत् शुष्कं अंजनं तत्प्रदापयेत् । या
वन्मात्रं हितं नेत्रे अदृश्यो भवति सुंदरी ॥ १४ ॥

अर्थ--हे सुन्दरि छायामें सुखाकर उसका अंजन देवी जब तक वह अंजन नेत्रमें रहेगा तबतक वह किसीको न दीखेगा १४

पादयोः स्तनयोरेवं युक्तियोज्यं प्रयोजयेत् । चि
ताग्नि खंजरीटस्य विष्ठाफेणं हयस्य च ॥ १५ ॥

अर्थ--उक्त अंजनको केवल नेत्रोंमेंही नहीं बरन दोनों पैरों के दोनों स्थानोंमें भी लगाना चाहिये। अथवा चिताकी अग्नि खंजरीटकी विष्टा घोडे के झाग ॥ १५

शोभांजनमयं नेत्रे नर एतस्य धूपितः । अदृश्य
स्त्रिदशैः सर्वैः किं पुनर्मनुजैःप्रिये ॥ १६ ॥

अर्थ--हे प्रिये ! और सैंजनेके बीज इन सब वस्तुओंका नेत्र में अञ्जन देनेसे उसको देवता लोगभी नहीं देख सकते फिर मनुष्यकी तो बातही क्या है ॥ १६ ॥

अथादृश्यानिधिदर्शनोपाय ।

कनकधुस्तूरकं मूलं तथा ससदलस्यच । मुक्त
केशेन चोत्पाट्य मूलंचैव बलाहकम् ॥ १७ ॥

अर्थ--पीले धतूरे की जड, कमल की जड, नागरमोथा की जड, बाल खोले हुये उखाडकर ॥ १७ ॥

तावन्मुखेन संधृत्य सर्व संदृश्यते नरैः।
पातालतलपर्यन्तं यत्र यत्र स्थितोनिधिः ॥ १८॥

अर्थ—मुख में रखने से मृत्तिका के मध्य में पाताल पर्यंत जिस स्थानमें जो धातु रहै वह उसको दीखती हैं ॥ १८ ॥

इतिनिद्रा.

अथ यक्षणी साधना।

ईश्वर उवाच।

अथातःसंप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनांसुसाधनम्।
यस्यसिद्धौमनुष्याणां सर्वेसिद्धन्तिहृच्छयाः॥१॥

अर्थ-ईश्वर बोले। इसके उपरान्त सुंदर प्रकार का यक्षिणी का साधन कहता हूं जिसके सिद्धि होने से मनुष्योंकी सकल कामना सिद्धि होती है ॥ १ ॥

आषाढपूर्णिमायांतु कृत्वाक्षौरादिकाःक्रियाः।
सितेज्ययोरमौढ्येतु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ २ ॥

अर्थ—आषाढ शुक्लपूर्णिमा के दिन क्षौरादिक करके गुरुशुक्र के उदय में मनुष्य यक्षिणी का साधन करे ॥ २॥

प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेंदुदलान्विते।
मासमात्रप्रयोगोयं निर्विघ्नेन विधिंचरेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—श्रावण कृष्णपक्ष प्रतिपदासे चंद्रबल देखकर एक मासका ये प्रयोग है सो निर्विघ्नता से साधन करना ॥ ३

निर्जने विल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम्।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

अर्थ-- निर्जन वन में जाकर बिल्ववृक्ष के नीचे षोडशोपचार रुद्रपाठयुक्त शिवजीकी पूजा करै ॥ ४ ॥

त्र्यंबकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ।
दिवसेदिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥

अर्थ—(ओंत्र्यंबकं यजामहे०) इस मंत्र का पांचहजार जप प्रतिदिन करना और प्रतिदिन कुबेर की पूजनभी करना ॥ ५ ॥

मंत्र--यक्षराजनमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरुते नमः ॥६॥

अर्थ—यह मंत्र कुबेर का है इसका प्रतिदिन अष्टोत्तरशत जप करना ॥ ६ ॥

इतिमंत्रंकुबेरस्य जपेदष्टोत्तरंशतम् ।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ ७ ॥

अर्थ—ऊपर कहेहुए कुबेर के मंत्रका प्रतिदिन अष्टोत्तरशत जप करना दिनको मौन धारण करना हविष्यान्न भोजन करना और ब्रह्मचर्य से रहना ॥ ७ ॥

रात्रेस्तुमध्ययामौविनिद्रोमितभोजनः ।
बिल्ववृक्षंसमारुह्य जपेन्मंत्रमिमंसदा ॥ ८ ॥

अर्थ---रात्री की मध्य के दो पहर में निद्रारहित थोडा भोजन करके बिल्ववृक्षके ऊपर बैठके इस मंत्रका जप करना निरन्तर ॥

मंत्र--ओं क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वै श्वर्यप्रदात्र्यैनमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं स्वाहा ॥

इतिमंत्रस्यचजपं सहस्रत्रयसंमितम् ॥
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥ ९ ॥

अर्थ—ऊपर कहे हुए मंत्रका जप तीन हजार बिल्ववृक्षके ऊपर पढके आलस्य रहित मासपर्यंत करे ॥ ९ ॥

मध्वामिषबलिंतत्र कल्पयेत्संस्कृतंपुरः ॥
नानारूपधरा यक्षी कचित्तत्रागमिष्यति ॥ १० ॥

अर्थ—मद्यमांस बलिदानके वास्ते नित्यही पास रखलेवे कारण कि अनेक रूप धारण करके यक्षिणी कौन से काल में कौन दिन आजायगी ॥ १० ॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः ।
यस्मिन्दिने बलिंभुक्त्वा वरंदातुंसमर्थयेत् ॥११॥

अर्थ—कैसाभी रूप धारणकर यक्षिणी आवे तो उसकू देखकर भय नहीं करना केवल जप में चित्त लगाये रखना जिस दिनके विषे बलिकूं यक्षिणी ग्रहण करके वरदान देने कूं समर्थ हो ॥ ११ ॥

तदा वरान्वै वृणयात्तांस्तान्वैमनसेप्सितान् ।
धनमानयितुंब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ॥ १२ ॥

अर्थ—उस समय मनमें इच्छा होय सो वरदान माँगलेवे धनके लाने के वास्ते मांगलेवे अथवा त्रिलोकी की कान में वार्त्ता कहने के वास्ते मांगलेवे ॥ १२ ॥

भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ॥
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥१३॥

अर्थ—अथवा भोग भोगने के वास्ते मांगलेवे अथवा नृत्य देखने के वास्ते मांगले तथा कोई प्राणी के लाने के वास्ते मांग लेवे तथा स्त्रीकूं लाने के वास्ते मांगलेवे ॥ १३ ॥

राजानं वा वशीकर्तुं मायर्विद्यायशोबलम् ।
एतदन्यद्यदिप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥ १४ ॥

अर्थ—राजाकूं वशीकरण करणेकूं मांगे अथवा आयु विद्या यश बल के वास्तें मांगलेवे उपरोक्त कहेहुए मांगे अथवा और जो कुछ इच्छा होय सो साधन करने वाला मांगलेवे ॥ १४ ॥

चेत्प्रसन्ना यक्षिणीस्यात्सर्वं दत्ते न संशयः ।
अशक्तस्तुद्विजैः कुर्यात्प्रयोगंसुरपूजितम् ॥ १५ ॥

अर्थ—जो यक्षिणी प्रसन्न होगई होय तो मांगेहुए वर देगी इसमें संदेह नहीं है ॥ आप करनेकूं अशक्त होवे तो ब्राह्मणों से करालेवे ये प्रयोग सुरपूजित है ॥ १५ ॥

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेद्व्रतम् ।
नित्यंकुमारिका भोज्याः परमान्नेनवैत्रयः ॥ १६ ॥

अर्थ—अथवा ब्राह्मणों को संग लेकर व्रत, को साधन करे परमान्न करके नित्यप्रति तीन कन्याकूं भोजन करावे ॥ १६ ॥

सिद्धेधनादिके नैव सदासत्कर्म चाचरेत् । कुकर्मणिव्ययं चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति, नान्यथा ॥१७॥

अर्थ—यक्षिणी प्रसाद से सिद्धहुए धनादिकों करके सदा सत्कर्म करें कदाचित् कुकर्म किया तो सिद्धि जाती रहेगी यह सत्य है ॥ १७ ॥

गुप्तेन विधिना कार्य्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे वहुविघ्नानि जायंते नात्र संशयः ॥ १८ ॥

अर्थ—ये प्रयोग गुप्त विधिसे करना प्रकाश करके कदाचित् भी नहीं करना प्रकाश करने से वहुत विघ्न उत्पन्न होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ १८ ॥

प्रयोगश्चानुभूतोयं तस्माद्यत्नवदाचरेत्।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥ १९ ॥

अर्थ—ये प्रयोग अनुभव किया है इसलिये यत्नवान् होकर करे निर्विघ्न विधान करने से उत्तम सिद्धि प्राप्त होगी ॥ १९ ॥

गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मैकस्मै न दापयेत्।
दुर्जनस्पर्शनाद् विद्या भवत्यल्पफलायतः ॥ २० ॥

अर्थ—ये महानतंत्र गुप्त रखना जिस किसी को नहीं देना कारण कि दुष्ट के स्पर्श करने से विद्या अल्पफल दायक होजाती है ॥ २० ॥

इतियक्षणीसाधनम्।

अथ उच्चाटन।

मंगलवारे रात्रौ स्मशानागारं कृष्णवस्त्रेण कृत्वा रक्तसूत्रेण सम्वेष्ट्य यस्यगृहोपरिक्षियेत् सप्ताहाभ्यंतरेतस्योच्चाटनंभवति।

अर्थ—मंगल की रात्री को स्मशानसे काले वस्त्र में लपेटकर अंगार लावै और लाल सूत्र में लपेटकर जिसके घर में डाले सात दिन में उसका उच्चाटन होता है।

पंचांगुलं चित्रकस्य कीलंग्राह्यंपुनर्वसौ।
सप्ताभिमंत्रितंगेहे खनेदुच्चाटनंभवेत् ॥

अर्थ—पुनर्वसु नक्षत्र में चित्रक की पांचअंगुल की कील ग्रहण करै सात बार मंत्र पढकर जिसके घरमें डालदे उसका उच्चाटन होजायगा।

ओंलोहितमुखेस्वाहा।अस्याष्टोत्तरसहस्रजपेन पुरश्चरणम् ॥

अर्थ--ओं लोहित मुखे स्वाहा। इस मंत्र को १०००८ बार जप करने से सिद्धिहोती है। येही इस का पुरश्चरण है ॥

भरण्यामंगलैकन्तु उलूकस्यास्थिकीलकम्।
सप्ताभिमंत्रितं यस्यनिखनेदुच्चाटनंभवेत् ॥

अर्थ—भरणी नक्षत्रमें एक अंगुल उल्लूकी अस्थि लेकर सात बार मंत्र पढकर जिसके घर गाड़दे उसका उच्चाटन हो जाता है। मन्त्र यह है

ओं दह दह हन हन स्वाहा।
काकोलूकस्यपक्षांस्तु हुत्वाह्यष्टोत्तरंशतम्।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनंभवेत्।

अर्थ—ओं दह दह हन हन। कौवे और उल्लूके १०८ पंख लेकर जिसके नामसे मंत्र पढकर हवन करे उसका उच्चाटन निश्चय होता है।

मंत्र यहहै—ओंनमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय अमुकं सपुत्रबान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हूं फट् स्वाहा ठः ठः।

अर्थ—ओं नमो भगवते रुद्राय हुं दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्र बान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्र मुच्चाटयोच्चाटय हूं फट् स्वाहा ठः ठः।

लेपयेत् काकपित्तेन कील मंगुल सम्भवम्।
निखनेद्यस्यभवने तस्यचोच्चाटनंभवेत् ॥

कौएके पित्तसे एक अंगुल कीलको लिप्त करै और उसे लिप्त

कर उसे लिखें जिसके द्वारपर डालदे उसका उचाटन होजाताहै

ओंह्रीं दण्डिन दाण्डिन महादण्डिन्नमोऽस्तुते ठ. ठ.

नरास्थिकीलकं द्वारे निखन्याच्चतुरंगुलम्।
मन्त्रयुक्तमरेर्द्वारे सत्य मुच्चाटनंभवेत् ॥

ओंह्रीं दाण्डिन् दण्डिन् महादण्डिन् नमोऽस्तुते ठः ठः मनुष्य की ४ अंगुल अस्थिपर उक्त मंत्र पढकर जिस शत्रुके द्वारपर गा ढ़दे उसका उच्चाटन अवश्य होताहै।

इति उच्चाटन.

श्रीराममंत्र प्रयोगः।

अगस्त्यसंहितायाम्।-षड्वर्णब्राह्मणादिनांत्रया णांपञ्चवर्णकं। अन्येषांदेशिकेन्द्रेणवक्तव्यंता रकंविना ॥ १ ॥

अर्थ—अगस्त्य संहिता में लिखा है कि, ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य इन तीन वर्णों का उक्त छःमकार के मंत्रों को जप करने का अधिकार है और शूद्रको ओं रामायनम: इस मन्त्र को छोडकर अन्य पांच प्रकार के मंत्रों को जपने में अधिकार है ॥ १ ॥

मंत्रांतरं। जानकीवल्लभायाथ भवेत्पावकवल्ल भा हूमादिरेषकथितो रामचंद्रो दशाक्षरः ॥ २॥

अर्थ—श्रीरामचन्द्रजीका और मंत्र कहाजाता है।-हूं जानकी वल्लभाय स्वाहा" यह श्रीरामजीका दश अक्षरका मंत्र है ॥ २ ॥

तथाच।-जानकीवल्लभंङेंतं वन्हिजायाहूमादि कं। दशाक्षरोऽयंमन्त्रःस्याद्वशिष्ठः स्याहृषिर्वि राट्। छन्दश्चदेवता रामोसीतापाणिपरिग्रहः।

आद्यंबीजंद्विठः शक्तिःकामेनांगात्क्रियामता३॥

अर्थ—इसके वशिष्ठमी ऋषिहैं, विराटछन्द, रामचंद्र देवता, ह्रूंबीज और स्वाहा शक्ति है। जिससमय इसमंत्रकी पूजाकरे उस समय ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यांनमःइत्यादिरूपसे कराङ्गन्यास करना चाहिये ३.

शिरोललाटभ्रूमध्येतालुकन्ठेपुहृद्यपि। नाभ्यु रुजानुपादेषु दशार्णान्विन्यसेन्मनोः ॥ ४ ॥

अर्थ—मस्तक में ह्रूँ नमः, ललाट में जां नमः, भ्रूमध्य में नं नमः, तालु देश में ह्रीं नमः, कण्ठ में वं नमः, हृदय में छुं नमः, नाभि में भां नम, जंघा में स्वां नमः, और दोनों पादों में हां नमः, इस प्रकार मंत्र न्यास करके ध्यान करे॥ ४ ॥

जातीप्रसूनैर्जुहुया दिन्दिराप्राप्तयेनरः।
जातीप्रसूनैर्जुहुयाच्चन्दनाम्भःसमुक्षितैः ॥
राजवश्यायकमलैर्धनधान्यादिसम्पदे ।
नीलोत्पलानांहोमेन वशयेच्चइदंजगत् ॥ ५ ॥

अर्थ—अब श्रीराम प्रयोग कहाजाता है। साधक धन प्राप्ति के निमित्त चमेलीके पुष्पोंसे होमकरे। जो चमेली के पुष्पोंमें चंदन लगाकर होम करते हैं, राजा उनके वश में होता है कमल पुष्प से होम करनेपर धन धान्यादि ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। नीलकमल से होम करनेपर पृथ्वी मंडलके सम्पूर्णहीजीव वशमें होते हैं॥ ६ ॥

बिल्वप्रसूनैर्जुहुया दिन्दिराप्राप्तये नरः ।
दूर्वाहोमेनदीर्घायुर्भवेन्मंत्रीनिरामयः ॥ ७ ॥

अर्थ—लक्ष्मीप्राप्ति के निमित्त बिल्वपुष्पसे होम करे। दूर्वा द्वारा होम करने से साधक का रोग दूर होता है और आयु बढ़ती है ॥ ७ ॥

इति राममंत्र प्रयोग

इतिश्रीनगीनावादनिवासीपंडितकुंदनलालात्मजपंडितगौरीशंकरशर्म्मा कृतसिद्धिदानामा० टी०सहित द्वितीयखण्ड संपूर्णम् ॥२॥



॥ श्रीगणेशायनम ॥

मन्त्रसिद्धिभाण्डागार।

(तृतीयखंड)

अथ मारण प्रयोग।

ईश्वर उवाच।

अथात.कथयिष्यामि प्रयोगंमारणाभिधम् ॥
सद्यःसिद्धिःकरंनृणां शृणुष्वावहितोमुने ॥ १ ॥

अर्थ—महादेवजी बोले-हे मुने! अब तुम्हारे प्रति मनुष्योंको शीघ्र सिद्धि करने वाला मारण नाम प्रयोग कहता हूँ ॥ १ ॥

मृत्तिकारिपुपादाभ्यां पुत्तलीक्रियतेनरः ॥
चिताभस्मसमायुक्तं मध्यमारुधिरंतथा ॥ २ ॥

१—मारण मोहन स्तंभ विद्वेषोच्चाटन वशम्।
आकर्षण यक्षिणी च रसायन कर तथा ॥ यह नव प्रयोग हैं।

अर्थ—शत्रुके चरण तले की मट्टी लाकर मनुष्याकार पुतली बनावे चिताभस्म मिलाय बीचकी अँगुलीका रुधिर मिलावे अथवा उस पुतली की मध्यमा अँगुली में रुधिर भर देवे ॥ २ ॥

कृष्णवस्त्रेणसंवेष्ट्य कृष्णसूत्रेणवन्धयेत् ॥
कुशासनेसुतमूर्तिर्दीपंप्रज्वालयेततः ॥ ३ ॥

अर्थ—फिर उस पुतली को काले कपडे से लपेट काले सूत से बांध देवे और कुशासन पर मूर्त्ति को सुलाय दीपक प्रज्वलित कर देवे ॥ ३ ॥

अयुतंप्रजयेन्मंत्रं पश्चादष्टोत्तरंशतम् ॥
मंत्रराजप्रभावेन माषांश्चष्टोत्तरंशतम् ॥ ४ ॥

अर्थ—दशहजार मन्त्रजपे पश्चात् एकसौआठ मंत्रजपे मन्त्रराज प्रभाव पूर्वक अर्थात् मंत्र पढता जाय और एक सौ आठ काले उडद लेकर ॥ ४ ॥

पुत्तिकामुखमध्येच निक्षिपेत्सर्वमापकान् ॥
अर्धरात्रिकृतेयोगे शक्रतुल्योपिमारयेत् ॥ ५ ॥

पुतली के मुखमें सब उडद छोड देवे आधीरात को यह योग इन्द्रके समान शत्रुको मार देता है ॥ ६ ॥

प्रातःकालेपुत्तलिकां स्मशानांतेविनिःक्षिपेत् ॥
मासैकेनप्रयोगेण रिपोर्मृत्युर्भविष्यति ॥ ६ ॥

अथ शत्रुमारण मन्त्र।

ओं सर्वकालक संहाराय अमुकस्य हन हन क्रीं हूं फट् भस्मी कुरु स्वाहा।

अर्थ—प्रातःकाल उस पुतली को स्मशान में छोड देवे एक मास पर्यन्त इस प्रयोग के करने से शत्रुकी अवश्य मृत्यु होगी। शत्रुमारण मंत्र मूल में है ॥ ६ ॥

तथाच ।

निम्बकाष्ठंसमादाय चतुरंगुलमानतः ॥
शत्रुकेशान्समालिप्य ततोनामसमालिखेत् ॥ १ ॥
चितांगारकतन्नाम धूपंदद्यात्सुरेश्वरी ॥
त्रिरात्रंसप्तरात्रंवा यस्यनामउदाहृतम् ॥ २ ॥
कृष्णाष्टम्यांचतुर्दश्यां चाष्टोत्तरशतंजपेत् ॥
प्रेतागृह्णातितच्छीघ्रं मंत्रेणानेनमंत्रवित् ॥ ३ ॥

अथ मंत्रः ।

ओं नमो भगवते भूतादिपतये विरुपाक्षाय घोर दंष्ट्रिणेविकरालिने ग्रह यक्ष भूते नानेन शंकर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण गृह्ण हूं फट् ठः ठः ।

अर्थ—नींब वृक्षके लकडीकी कील ४ अंगुल प्रमाणकी लेकर शत्रुकी चोटी के केश उसमें लपेट शत्रुका नाम लिखे हे पार्वति ! धूप देवे, तीन रात्रि वा सात रात्रि शत्रुका नाम लिखे, चिता के कोयले से, कृष्ण पक्षकी अष्टमीसे चतुर्दशी तक एकसौ आठ मन्त्र जपे तो इस मंत्र से शत्रुको शीघ्र प्रेत ग्रहण करता है ऐसा मंत्र ज्ञाताओं का वचन है मन्त्र मूलमें लिखा है अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लेना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

तथान्यच्च।

नरास्थिकीलकंपुष्ये गृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ॥
निखनेतुगृहेयावत्तावत्तस्यकुलक्षयः ॥ १ ॥

अथ मंत्रः।

ओं ह्रीं फट् स्वाहा। अयुत जपात्सिद्धिः।

अर्थ—पुष्य नक्षत्र के दिन मनुष्य के हाडकी चार अंगुलकी कील को जिस के घर में दाबकर रक्खी जावे, जब तक वह रक्खी रहै तब तक उसका कुलक्षय होता रहै। ओं ह्रीं फट् स्वाहा इस मंत्र का जप दश हजार करना यह सर्वत्र क्रम है कि जिस मंत्रका पुरश्चरण करै उसके जप की संख्या से दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन यह परमोत्तम क्रम सिद्धिदायक है॥

तथाच।

ओं सुरेश्वरायस्वाहा।
सर्पास्थ्यंगुलमात्रंतु चाश्लेषायां रिपोर्गृहे।
निखनेच्छतधाजप्तं मारयेद्रिपुसन्ततिम् ॥

अर्थ—ओं सुरेश्वराय स्वाहा। इस मंत्र से सर्प के हाडकी कील एक अंगुलमात्र लेके ऽश्लेषा नक्षत्रमें एक सौ आठवार मंत्र से अभिमंत्रित करके शत्रु के घरमें रखने से शत्रुकी सन्तति का नाश होवे है॥

अन्यच्च।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम्।

शत्रुगृहे निहन्त्याशु कुटम्बवैरिणां कुलम् ॥ १ ॥

मंत्रस्तु ।

हुं हुं फट् स्वाहा । सप्ताभिमंत्रितंकृत्वानिखनेत् ।

अर्थ—घोड़े के हाडकी कील चार अंगुल अश्वनी नक्षत्र में लेकर शत्रु के घर में दाब कर रखदेवे तो शीघ्र शत्रुओं का कुल नाश होता है। हुं हुं फट् स्वाहा । इस मंत्र से सातवार अभिमंत्रित करके कील कोरखे ॥

तथाच ।

आर्द्रायांनिम्बवन्दाकं शत्रोःशयनमन्दिरे ।
निखनेन्मृतवच्छत्रुरुद्धृते चपुनः सुखी ॥ १ ॥
तथाशिरीषवन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुनाहरेत् ।
शत्रोर्गेहेस्थापयित्वा रिपोर्नाशोभविष्यति ॥ २॥

अर्थ—आर्द्रा नक्षत्र में नींब के वृक्ष का बांदा लाकर शत्रु के शयन करने के स्थान में गाड देवे तो शत्रु मृत्यु समान होजावे और उखाडलेवे तो सुखी होजावे तथा सिरस वृक्ष का बांदा पूर्वोक्त आर्द्रानक्षत्र में लाकर शत्रुके गृहमें रखनेसे शत्रुनष्टहोवेहै १।२।

तथाचआर्द्रपटीविद्या ।

रहस्यातिरहस्यंच कौतुकंकथितंशृणु ।
आर्द्रपटेश्वरीविद्या कथितेशत्रुनिग्रहे ॥ १ ॥

अथमंत्रः ।

क्लीं नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरित नील

पटे कालि आर्द्रेजिह्वे चांडालिनी रुद्राणी कपा लिनी ज्वालामुखी सप्तजिह्वे सहस्त्रनयने एहि एहि अमुकं तेपशुंददामि अमुकस्यजीवं निकृन्तय एहि तज्जीवितापहारिणीं हुं फट् भूर्भुवः स्वफट् रुधिरार्द्रव साखादिनिमम शत्रुन छेदय छेदय शोणितं पिव २ हुं फट् स्वाहा ॥

ओं अस्य श्रीआर्द्रपटी महाविद्या मंत्रस्य दुर्वासाऋषिगायत्री छंदः हुं बीजं स्वाहा शक्तिः ममामुकशत्रुनिग्रह काम्यार्थे जपेविनियोगः ॥ केवलंजपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम् ।

ततः कृष्णाष्टमी यावत् तावत्कृष्णाचतुर्दशी॥१॥
शत्रुनामसमायुक्तं तावत्कालंजपेन्मनुम् ।
मृत्तिकारिपुपादेन पुत्तलिकांक्रियतेनरः ॥ २ ॥
अजापुत्रबलिंदत्वा तद्रक्तेनवस्त्रंसंलिपेत् ॥ ३ ॥
तद्वस्त्रंगृहीत्वापुत्तलिकोपरिनिदध्यात् मंत्रंजपेत् ।
यावद्वस्त्रं शुष्यातितावच्छत्रुर्यमालयंव्रजति ॥
मंत्रराजप्रभावेन नात्रकार्याविचारणा ।
यमालयेव्रजेच्छत्रुर्मुकन्दसदृशोपिवा ॥ ४ ॥

अर्थ—अब मारण प्रयोग विषय में आर्द्र पटी विद्या वर्णन करते हैं। हे पार्वती ! गुप्त से गुप्त कौतुक कहते हैं सो श्रवण

* मारण सावधानी से करना उलटा अपने ऊपरमी पड जाता है ।

करो यह आर्द्र पटेश्वरि विद्या शत्रुनाशार्थ वर्णन करी गई, ॐ नमोभगवती आर्द्र पटेश्वरि०, इत्यादि मंत्र है इस मंत्र का केवल जपमात्र करने से एक महीने में शत्रुमरण होवे है अर्थात् एक मास पर्य्यंत नित्य १०८ मंत्र जपे अनन्तर कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण चतुर्दशी पर्य्यंत ॥ १ ॥ २ ॥ शत्रुके नाम सहित सावधान मन होकर मंत्र को जपे १०८ मंत्र नित्य जपे अंत दिवस में यह विधिकरे कि शत्रुके चरण तले की मृतिका लेकर शत्रुकी पुतलीबनावे नील वस्त्र से लपेट मंत्र पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा कर काली का पूजन करके बकरे का बलिदान करके उस के रक्त में वस्त्र को भिगोय लेवे ॥ ३ ॥ फिर उस वस्त्र को पुतली के ऊपर उढाय मंत्र का जप करे जब तक वह वस्त्र सूखे तबतक शत्रुका प्राण यमपुर को गमन करे है इस आर्द्र पटेश्वरी विद्या के प्रभाव से मुकुन्द (कृष्ण) की समान भी शत्रुको होतो यम पुर को जाता है इस में संदेह नहीं है यह प्रयोग सत्य २ है॥४॥

॥ इति मारण प्रयोग ॥

तन्त्रविद्वेषणम्।

ईश्वरउवाच।

अथाग्रेकथयिष्यामियोगंविद्वेषणाभिधम् ।
महाकौतुकरूपंच पार्वतिशृणुयत्नतः ॥ १ ॥

अर्थ—श्री शिवजी कहते हैं कि अब आगे विद्वेषणा प्रयोग वर्णन करूगा जिस महा कौतुक रूप विद्वेषण योग से आपस में वैर भाव होजाता है सो हे पार्वति सावधान होकर श्रवणकरो॥१॥

गृहीत्वागजकेशंच तथाव्याघ्रकचंपुनः ।

मृत्तिकांपादयोऽरीणां पोटलींनिखनेद्भुवि॥ २॥
तस्योपरिस्थापयेऽग्निं मालतीपुष्पहोमयेत्।
विद्वेषंकुरुतेयस्य भवेतस्याहि नान्यथा॥ ३॥

मंत्रस्तु।

ओं नमो आदित्याय गजसिंहवदमुकस्य।
अमुकेनसहविद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा॥

अर्थ—हाथी के केश तथा व्याघ्र के केश लेकर फिर शत्रुओं के दोनों चरण तलों के नीचे की मृत्तिका लेकर पोटली में रख पृथवी में गाड़देवे॥ २॥

फिर उसके ऊपर अग्निस्थापन करके चमेलीके फूल व घी मिलाय मंत्र पूर्वक हवन करे तो जिन के नाम से हवन किया जाय उन दोनों में परस्पर वैर भाव होजावे॥ ३॥ अमुक की जगह दोनों का नाम उच्चारण करना॥

पुनश्च।

अश्वकेशंगृहीत्वाच महिषंकेशसंयुतम्।
सभायांदीयतेधूपोविद्वेपोजायतेत्क्षणात्॥ १॥

अर्थ—घोड़े के तथा भैंसा के केश मिलाय सभा में धूप देवे तो विद्वेषण होजावे॥ १॥ इति विद्वेषणम्॥

अथबुद्धिस्तम्भनम्।

उलूकस्यकपेर्वापि तांबूलेयस्यदापयेत्।

१—घुग्घू नेत्र तेलमें पीसे मरघटमें जा काजर पाड़े काजरको नैनन में आंजे होय अदृष्ट सत्तकरतारे॥

विष्टांप्रयत्नतस्तस्य बुद्धिः स्तम्भः प्रजायते ॥ १ ॥

अर्थ—उल्लू पक्षी और वानरकी विष्टा को लेकर पान मे रख-कर जिसको यत्न से खिलावे उसकी बुद्धिस्तम्भन होजाती है १॥

अथाग्निस्तम्भनम् ।

कुमारीरसलेपेन किंचिद्वस्तुनदह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोयं नान्यथाममभाषितम् ॥ १ ॥

अर्थ—घीग्वार के रस से लेपन करने से कोई भी वस्तु हो दग्ध नहींहोती है यह अग्निस्तम्भन प्रयोग हमारा कहाभया सत्यहै१

अथमेघस्तम्भनम् ।

इष्टकाद्वयमादाय संपुटंकरयेन्नरः ॥
स्मशानांगारसंलेख्य भूस्थंस्तंम्भनमेघकम् ॥१ ॥

अर्थ—दोईटों को लेकर स्मशान के कोयलेसे मेघ लिखकर संपुट बनाय पृथवी में गाड देवे तो मेघोंका स्तम्भन होवे गाडते समय ॐ मेघानां स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा यह मंत्र पढे ॥ २ ॥

अथगर्भस्तम्भनम् ।

पुष्यार्केणतुगृह्णीयात्कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कटयांबद्धागर्भिणीनां गर्भस्तम्भः प्रजायते ॥१॥

अर्थ—पुष्यार्क को काले धतूरे की जड लाके काले धागे में गर्भिणी स्त्रीके कमर में बांधे तो गर्भस्तम्भन होजाय ॥ १ ॥

१—लड़की ग्वांई ।
२—यहापर बहुत प्रयोग नहीं लिखे हैं ॥

अथ रसायनम् ॥

ईश्वर उवाच ।

अथतेकथयिष्यामि रसायनविधिंपरम् ।
कुबेरतुल्योभवति यस्यसिद्धोनरोभुवि ॥ १ ॥

अर्थ---ईश्वर बोले हे प्रिये ! अब हम रसायन प्रकार कहते हैं जिस के सिद्ध होने से मनुष्य पृथ्वी पर कुबेर की तुल्य होजाता है ॥ १ ॥

गोमूत्रंहरितालंच गंधकंचमनःशिला ।
समंसमंगृहीत्वातु यावच्छुष्कंतुपेषयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—गोमूत्र, हरताले, गंधक, मनशिल, इन सब को बरा बर लेकर जबतक न सूखे तबतक खरल करना ॥ २ ॥

गौमूत्ररक्तवर्णाया गंधकंरक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनंयावद्रक्ष्यंयत्नेनवैशुचि ॥ ३ ॥

अर्थ—लालवर्ण की गायका गोमूत्र और गंधक भी लालवर्ण की ग्यारह दिन पर्यन्त यत्न से सुरक्षित पवित्रता से खरल करना ॥ ३ ॥

गोलंकृत्वाद्वादशेह्नि रक्तवस्त्रेणवेष्टयेत् ।
चतुरंगुलमानेन मृदंलिप्त्वाविशोषयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—फिर बारहवें दिन गोला बनाय लाल वस्त्रसे लपेटकर चार अंगुल मोटी चारो तरफ धूल मट्टी लगाकर गोला सुखालेना ॥ ४ ॥

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौगर्तंतुकारयेत् ।

---

१ प्रारब्धकर्मबलवान मुनयोःवदन्ति । प्रारब्धस होतीहै अन्यथानहीं।

पलाशकाष्ठलोष्टैस्तु पूरयेद्गव्यमध्यगम् ॥ ५ ॥

अर्थ—पांच हाथ प्रमाण का चौरस गढा [खडा] करके पलाश के कोयले में गोला मध्य में रखकर भरदेवे ॥ ५ ॥

अग्निंदद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रेपुसंतप्ते तद्भस्मतुप्रदापयेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—फिर यत्न से अग्नि लगावे जब वह जलकर आपढदा [शीतल] होजाय तब गोले कूं बाहर निकाल लेवे फिर तांवे कापत्र शुद्ध तपाकर उस गोले की निकली हुई भस्म पत्र परडालै ६॥

गुंजैकंतत्क्षणात्स्वर्णं जायतेताम्रपत्रकम् ।
अरण्येनिर्जनेदेशे शिवालयसमीपतः ॥ ७ ॥

अर्थ—एक गुंजा प्रमाण तो उसी क्षणमात्र में सुवर्ण होजाय है यह कहां करना निर्जन वन में अथवा शिवालय स्थान में ॥७॥

शुक्लपक्षेसुचन्द्रेहि प्रयोगंसाधयेत्सुधीः ।
त्र्यंबकेतिचमंत्रस्य जपंदशसहस्रकम् ॥ ८ ॥

अर्थ—शुक्लपक्ष में चन्द्रबल युक्त दिन में बुद्धिमान पुरुष प्रयोग कू साधन करे (त्र्यम्बकंयजामहे०) इस मंत्र का दशहजार जप८

प्रत्यहंकारयेद्विप्रान्भोजयेद्रुद्रसंमितान् ॥
यावत्सिद्धिर्नजायेत् तावदेतत्समाचरेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—प्रतिदिन करावे और ग्यारह ब्राह्मण नित्य भोजन करावे और जबतलक सिद्ध न होवे तबतक इसी प्रकार से प्रयोग कू करता रहे ॥ ९ ॥

इतिरसायनप्रयोग ॥

अथ सुरसुन्दरी साधनम्।

ईश्वर उवाच।

अथतेकथयिष्यामि यक्षिणीसाधनंवरम् ॥
यस्यासिद्धौनराणांच सर्वेसंतिमनोरथा ॥ १ ॥

अथ मंत्र।

ओं ह्रीं आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा।

अर्थ—श्रीशिवजीबोले हेपार्वती! अबतुम्हारेसे यक्षणीसाधन कहता हूं जिसकी सिद्धि से मनुष्यों के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं ॐ ह्रीं इत्यादि मंत्र सरल करके ॥ १ ॥

पवित्रगृहंगत्वा पूजनंकृत्वा गुग्गुलधूपंदत्वात्रिसन्ध्यंपूजयेत्॥ सहस्रंनित्यंजपेन्। मासाभ्यन्तरेआगतायै चन्दनोदकेनार्घोदेयः। माताभगिनीभार्या कृत्यंकरोति। यदामाता भवति सिद्धद्रव्याणिददाति। यदिभार्याभवति तर्हि सर्वैश्वर्य्यं सर्वेषांपरिपूरयेत् ॥ वर्जयेदन्यस्त्री सहशयनम् अन्यथा विनश्यति ॥

अर्थ—पवित्र घरमें जाकर पूजन करके गुग्गुल की धूप देवे तीनों सध्याओं में सुर सुंदरीका पूजन करे और एकहजार मंत्र नित्य जपे तो एक महीने के अंतर में सुर सुन्दरी देवि आवेगी तब चन्दन जल से अर्घ देवे माता बहिन स्त्री का कृत्य करे जो माता होवे तो सिद्ध द्रव्य देती है जो बहिन होवे तो अपूर्व वस्त्र देती है जो

१—इस ग्रंथ में प्राय उन ? यक्षिणीयों का विधान लिखा है जो शीघ्र सिद्धि होजाती हैं ॥

भी हो तो सब ऐश्वर्य से पूर्ण करदेती है परन्तु दूसरी स्त्री के साथ शयन करना वर्जित करे इसके विरुद्ध वर्ताव करने से नाशको प्राप्त होजाता है ॥ इति सुर सुन्दरी साधनम् ॥

अथ मनोहारि साधनम् ।

नदीसंगमेगत्वा चन्दनेन मण्डलंकृत्वा अगरु धूपंदत्वामासैकोपरि आगतायैपूजयेत् । यदागच्छति तदाचंदनेनार्घोदीयते,पुष्पफलै रेकचित्ते नार्चनंकर्तव्यं ॥ अर्धरात्रेनियतमागच्छति । आगतायां सत्यामाज्ञां देहिसुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति ॥

मंत्रः ॥

ॐ आगच्छमनोहारिस्वाहा ॥

अर्थ—अब मनोहारि का साधन लिखते हैं ॥ नदी के संगम में जाकर चन्दन से मंडल करके अगरुकी धूनी देकर पूजनादि से यक्षिणी को प्रसन्न करे जब वह एक मास उपरान्त आवे तो उसका पूजन करे यक्षिणी के आनेपर चन्दनसे अर्घ देवे फूल और फल से सावधान मन होकर पूजन करे, आधीरात को नियत समय पर आवे है। आने से नित्यप्रति सौ संख्यक सुवर्ण अर्थात् मुहर देवे है ॥ इति मनोहारि साधनम् ॥

अथ कनकवती साधनम् ॥

वटवृक्षतलंगत्वा मद्यमासंचदापयेत् ॥ सहस्र मेकंचमंत्रंजपेत् ॥ एवंसप्तदिनंकुर्यात् अष्टमरा

त्रौसा सर्वालंकारसंयुता आगच्छति, साधकस्य भार्य्याभवति द्वादशजनानां वस्त्रालंकार भोज नानिददाति ॥

अथ मंत्रः।

ॐ कनकवति मैथुन प्रियेस्वाहा ॥

अर्थ—अब कनकवति का साधन लिखते हैं। बटके वृक्षके तले जाकर मद्यमांस को देवे, एक सहस्र संख्यक मन्त्रोंका जपकरे इस प्रकार सात दिन पर्यंत करे आठवें दिन रात्रीमें सब अलकार तथा वस्त्रों सहित देवि यक्षिणी आवे साधककी स्त्री होकर रहै बारह मनुष्योंको वस्त्र अलंकार तथा भोजन देवे ॥ इतिकनकवतीयक्षणीसाधनम् ॥

अथ कामेश्वरी साधनम् ॥

भूर्जपत्रे गोरोचनयाप्रतिमां विलिख्यतां देवि पूजयेत् ॥ शय्यामारुह्य एकाकीसहस्रंजपेत् मासान्ते वापूजयेत्। घृतदीपोदेयः। पश्चान्मौनी भूत्वापूजयेत्। ततोर्धरात्रे नियतमागच्छति। साधकस्य भार्याभवति। प्रतिदिनंशयने दिव्यालंकारपरित्यज्य गच्छतिपरस्त्रीपरिवर्जनीया इति॥

अथ मंत्रः ॥

ॐ आगच्छ कामेश्वरीस्वाहा ॥

अर्थ—अब कामेश्वरी का साधन लिखते हैं भोज पत्रपर गो

१—यदि यक्षणी साधक को अनेक २ रूपदिखावे तथा शब्द सुनावे तो साधक को उचित है कि दोनही एक चित्त होकर ध्यानलगाये रहे।

रावनमे कामेश्वरीकी प्रतिमा बना कर तिस देविका पूजन करे फिर शय्यापर सवार होकर एक हजार जप अकेलेमें करे। एक मास पर्यंत करे।

घी का दीपक जलावे पश्चात् मौन होकर पूजन करे अनन्तर अर्धरात्रि के समय देवि कामेश्वरी आवेगी साधक की स्त्री होवेगी प्रतिदिन शयन करके सुन्दर आभूषण छोड़कर चली जायगी इस में परस्त्री गमन त्याग देवे, इति कामेश्वरीदेवि साधना ॥

अथ रति प्रियासाधनम् ॥

पटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्र सर्वालंकारभूषितां उत्पलहस्तांकुमारीं जातीफलेनपूजयेत् । यदिभगिनीभवति तदायोजनमात्रा स्त्रीमानीयसमर्पयतिवस्त्रालंकारभोजनंददाति।

अथ मंत्रः ।

ॐ आगच्छरतिकरिस्वाहा ।

अर्थ—अब रतिप्रया साधन लिखते हैं । वस्त्रपर देवि का चित्र लिखकर सुनहले वस्त्र अलंकार आदि से भूषित करके कमल हाथ में लिये ऐसी कुमारी का पूजन जाय फल सहित करे जो भगनी होकर आवे तो एक योजन (४) कोस से स्त्री को लाकर देवे और वस्त्रालंकार तथा भोजन देवे ॥ इतिरातिप्रिया साधनम् ॥

अथ पद्मिनीनटी तथा अनुरागिनी साधनम् ।

कुंकुमेनभूर्जपत्रे प्रतिमांविलिख्य गंधाक्षतपुष्प

---

१ यहतीनों यक्षिणी एकही प्रकारसेसिद्ध होती हैं केवल मन्त्रन्यारा हैं।

धूप दीप विधिना सम्पूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत् ततः पौर्णिमायां विधिवत्पूजा कर्त्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् स कलरात्रि पर्यंतःजपेत् अत्र केवल मंत्रभेदाः। प्रभाते नियत समये आगच्छति दिव्य रसायनंददातिइति ॥

अर्थ—अब पद्मिनी, नटी,तथा अनुरागिनीका साधन लिखते हैं केशरसे भोजपत्रपर जिस देविकी आराधना करना चाहे उस की प्रतिमा बनाय चन्दनाक्षत फूल, धूप, दीप, आदि से विधि पूर्वक पूजन करे तीनों संध्याओं में तीन सहस्र जपकरे प्रतिदिन इसप्रकार मास पर्यंत तक करे अनन्तर पौर्णमासी के दिन बिधिवत् पूजा करे यहां केवल मंत्र का भेद है पद्मिनी, नटी, अनुरागिणी इन में से जिसको साधन करे उसका मंत्र जपे घी का दीपक जलावे प्रात समय में आवे दिव्य रसायनको देवे है नटी देविसुंदर आभूषणोंको देतीहै और नृत्य करतीहै अनुरागिणीदेवि वस्त्रालंकारोंको देकेप्रसन्न करनेवालीमधुरवाणीसे संतुष्टकरती है॥

अथ पद्मिनीमंत्रः ।

ओं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा ॥

अथ नटीमंत्रः ।

ओं ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा ॥

अथ अनुरागिणीमंत्रः ।

ओं ह्रीं आगच्छ अनुरागिणी स्वाहा ॥

इतियक्षिणीसाधनमन्त्राः ।

अथ भूतवादः ।

ईश्वरउवाच ।

भूतवादं प्रवक्ष्यामि यथारावण भाषितम् ।
येनैवज्ञातमात्रेण शत्रुर्वोयांतिवश्यताम् ॥ १ ॥
निर्यासं शाल्मलीचैव वीजानी कनकानिच ।
भावयेत्सततरावेण भक्ष्येपानेचदायिते ॥ २ ॥
ततोभक्षण मात्रेण ग्रहैःसंगृह्यते नरः ।
शर्कराटुग्धपानेन सुस्थोभवतिनान्यथा ॥ ३ ॥
निर्यासंसल्लकीनांच वीजानिकनकस्यच ॥
षष्टिकाचूर्णयुक्तानि भावयेत्सप्तवासरम् ॥ ४ ॥
खाद्यपानसमायोगाद् ग्रहोमाहेश्वरोभवेत् ॥
शर्कराटुग्धपानेन सुस्थोभवतिनान्यथा ॥ ५ ॥

अर्थ—अब भूतवाद कहते हैं । जो शिव जी की वाणी से निकला भया रावण करके वर्णन किया जाता है, जिस के जानने मात्र से सब शत्रु वश में होजाते हैं ॥ १ ॥ सेमल के बीज का काढा तथा धतूरे के बीज इनको उस काढे में सात दिन पर्यंत भावना देवे और खान पान में देवे ॥ २ ॥ तो भक्षणमात्र से उसको ग्रह ग्रहण करलेवेगा फिर शक्कर दूध पीने से शरीर आरोग्य होजावेगा ॥ ३ ॥ तथा सलाई वृक्षके काढे में धतूरे के बीज की भावना देके साठी के चूर्ण में मिलाय फिर सात दिवस भावना देवे ॥ ४ ॥ इसको खान पान में लाने से महेश्वर नाम ग्रह ग्रस्ता है, शक्कर और दूध के पीने से आनन्द चित होजाता है ॥ ५ ॥ इति भूतवादः ॥

अथ मन्त्रवादः।

ईश्वर उवाच।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामि मंत्रवादंसुदुर्लभम् ॥
येनविज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धिःप्रजायते ॥ १ ॥
ओं कालीकंकालीकिलकिले स्वाहा अनेन ॥
मंत्रेणमल्लिकापुष्पंसहस्रं जुहुयात् कंकाली व
रदा भवतिसुवर्ण माष चतुष्टयंददाति ॥ प्रत्य
हं सहस्रहवनेन ओंठिरिमिठठः। अनेन चतुः
पंकजचूर्णं घृतमधुभ्यां सहहोमयेत् सर्वदासुखी
भवेत् ॥ ओं नमोच्छिष्ट चांडालिनि कंकाल
मालाधारिणि साधु२ त्रैलोक्यमोहिनी प्रकांड
क्षोभिनी शत्रूणांक्षोभय२ हुंफट् स्वाहा ॥

इति क्षोभिनी मंत्र ॥

ओं नमोभगवति दुर्वचनी किलिकिलिवाचा
भंजनीमुखस्तम्भनी स्वाहा॥सर्वजन मुखस्त
म्भः ॥ ओं ह्रींधूंहू स्वाहा ॥ अनेन विल्वस
मिधंघृताक्तांजुहुयात् ॥ समस्तजानपदाः किं
करा भवन्ति। यदि वटन्य ग्रोधसमिधंघृता
क्तांहोमयेत् सहस्रैकाहुतिं नित्यंदद्यात् तदास्त्री

१-यह विषय यहां गूढ़ है। हमने सरल लिखदिये हैं।

वश्याभवति नाऽत्रसन्देहः ॥ ओं ऐं वद वद वाग्वादिनी वागीश्वरी नमः । कविस्त्वंजायते नसंदेहो नित्यंसहस्रैक जपेन ॥

अर्थ—अब मंत्र वाद लिखते हैं । अब दुर्लभ मन्त्रवाद को शिवजी वर्णन करते हैं जिस के जानने मात्र से सर्व सिद्धि प्राप्त होती हैं ॥ १ ॥ ओं काली इत्यादि मन्त्रसे एक हजार चमेली के फूलों का हवन एक सहस्र घी मिलाय करे तो काली वर देने वाली होती है । चार मासे सुवर्ण नित्य प्रति देती है ।

ओं ठिरिमिठठः । इस मन्त्र से चारों प्रकार के कमलों का चूर्ण घी, शहद मिलाय नित्य एक सहस्र १००० हवन करे तो सदैव सुखी होवे । ओं नमो भगवति० इत्यादि मंत्र जपने व हवन करने से सर्वजनों का मुख स्तम्भन होता है । ओं ह्रीं घू टू स्वाहा । इस मंत्र से विल्वपत्र की समिधा ले घी मिलाय हवन करे तो सब मनुष्य वश में होजाते हैं । ओं नमोच्छिष्ट चाण्डालिनी० इत्यादि मंत्र से क्षोभिनी देवी का है इसका जप करने से तथा हवन करने से शत्रुओं का क्षोभ होता है और जो पुरुष वट और शमी वृक्षकी समिधि घी में बोर एक हजार आहुति नित्य प्रति करे तो स्त्री वश होती है इस में सन्देह नहीं है ॥ ओं ए वद० इत्यादि मन्त्र नित्य प्रति एक हजार जपने से कविता करने की शक्ति उत्पन्न होती है अर्थात् कवि होजाताहै । इति मन्त्रवाद ॥

अथ स्थाननिर्णय ।

शम्भोरायतने चतुष्पथतटे नद्यां स्मशानेगिरौ ।

१—यह प्रथम खण्डमें होना चाहिये था परन्तु यहां लिखागया है ।

अर्थ--आंब के वृक्षपर चढकर सावधानमन होकर जपकरे तो पुत्र रहित मनुष्य को पुत्र प्राप्ति होवे है॥ उपरोक्त मंत्र का दशहजार जपकरना चाहिये यह शंकरजी का कहा प्रयोग सत्य सत्य है। इति पुत्रप्राप्तिप्रयोगः॥

अथ वाक्सिद्धिप्रयोग।

अपामार्गसमारूढं जपेदेकाग्रमानसः॥
वाचासिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथाशंकरोदितम्॥१॥

मन्त्रः।

ओं ह्रीं श्रीं भारत्यैनमः अयुतजपात्सिद्धिः॥
गुप्तेनविधिनाकार्य्यं प्रकाशंनैवकारयेत्॥
प्रकाशेवहुविघ्नानिजायंतेनात्रसंशयः॥ २॥
प्रयोगश्चाऽनुभूतोयंतस्माद्यत्नवदाचरेत्।
निर्विघ्नेनविधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमाम्॥३॥
गोप्यंचेदं महतंत्रं यस्मैकस्मै नदापयेत्।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफलायतः॥ ४॥

इतिवाक्सिद्धि प्रयोग।

अर्थ—अपामार्ग में बैठकर एकमन होकर इस उपरोक्त मंत्र का दशहजार जप करना चाहिये तब सिद्धि होवे यह महादेव का प्रयोग मिथ्या नहीं है सत्य २ है॥ १॥

यह प्रयोग गुप्तविधि से करना प्रकाश करके कदापि नहीं करना प्रकाशित करने से निस्संदेह बहुत विघ्न उत्पन्न होते हैं॥२॥

यह प्रयोग अनुभव कियाहुआ है इसकारण यत्नवान् होकर

करे निर्विघ्नता पूर्वक विधिसे करे तो उत्तम सिद्धि प्राप्त होवेगी यह महामन्त्र गुप्त रखने के योग्य है हरएक किसी को नहीं देना कारण यह की दुष्टके स्पर्श करनेसे विद्या अल्प फल दायक होजाती है ॥ ३ ॥ ४ ॥

इति वाक् सिद्धि प्रयोग ।

तत्र अनाहारः

ईश्वर उवाच ।

पद्मबीजं महाशालिं छागीदुग्धेन पेषयेत् ॥
साज्यंतत्पायसंकृत्वा भोजनंद्वादशंदिनम् ॥ १ ॥

अर्थ—कमलके बीज महीन चावल बकरीके दूधमें पकाय कर घी मिलाय उस खीरको बारह दिनतक खावे ॥ १ ॥

अपामार्गस्यबीजानि दुग्धाज्याभ्यांचपाचयेत् ॥
पायसोमहिषीक्षीरैर्भुक्तोमासक्षुधापहः ॥ २ ॥

अर्थ—तथा, ओंगाके बीज दूधघी मिलाय पचावे वह खीर भैंसके दुग्धकी हो, एक मास पर्यंत वह खीर खावे तो क्षुधा दूर हो जावे है ॥ २ ॥ इति अनाहारा ॥

तत्राहारम् ।

वन्धूकस्यचवृक्षस्य पिष्ट्वापुष्पफलैर्घृतम् ॥
योसौभुंक्तेघृतस्सार्द्धंभोजनंभीमसेनवत् ॥ १ ॥

अर्थ—दुपहरियाके वृक्षके फूल फलको पीसकर घीके साथ भक्षण करे तो भीमसेन समान भोजन करैहै ॥ १ ॥

शनौविभीतवृक्षस्य सन्ध्यायांमभिमंत्रितम् ।
प्रातःपत्राणिसंगृह्य भोजनंघ्रितलेन्यसेत् ॥ २ ॥

ह्येहि रुद्रआज्ञापयतिस्वाहा ॥ इतिमंत्राः ॥

अर्थ—नरसिंह जी का मंत्र पढ़कर बालक वासूतिका को अड़ादेने से जैसे सूर्य्य उदय होने से अंधकार नाश होजाता है तैसे सूतिका तथा बालक को डाकनी प्रेतभूतादि दूरहो जातेहैं॥

इति भूतनिवारणम् ॥

अथ सर्वोपरिमंत्रः ॥

ईश्वर उवाच ॥

अथातःसम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेयतथश्रृणु ॥
कलौसिद्धिर्महामंत्रं विनाकीलनकथ्यते ॥ १ ॥

अर्थ—शिवजी बोलेहे दत्तात्रेयजी! जैसे तुमने पूछा तैसे श्रवण करो कलियुग में सिद्धि के देनेवाले विनाकीले भये महा मंत्रोंको कहता हूं ॥ १ ॥

नतिथिर्नचनक्षत्रं नियमोनास्तिवासरः ॥
नव्रतंनियमंहोमं कालवेलाविवर्जितम् ॥ २ ॥

अर्थ—जिन मंत्रों के करनें में न तिथि और न नक्षत्र का नियम है न वारका नियम है न व्रतका नियम है न होम तथा समय का भी नियम नहीं है ॥ २ ॥

केवलंतंत्रमात्रेण ह्यौषधीसिद्धिरूपिणी ॥
यस्यसाधनमात्रेण क्षणेसिद्धिश्चजायते ॥ ३ ॥

अर्थ—केवल तंत्र मात्र से औषधी सिद्धस्वरूपिणी है जिस के साधन मात्र से क्षणमात्र में सिद्धि होवे है ॥ ३ ॥

अथ मंत्रः ॥

ॐ परब्रह्मपरमात्मनेनमः उत्पत्तिस्थितिप्रलय

कराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुका निदर्शयदर्शय दत्तात्रेयायनमः तंत्राणिसिद्धिं कुरुकुरुस्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतंजपेत्सिद्धिः ॥

अर्थ—ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः इत्यादि यह सर्वोपरिमंत्र है १०८ बार मंत्र जपे तो सिद्धि होवे है ॥ इति सर्वोपरि मंत्र. ॥

अथ इन्द्रजाल कौतुकम् ।

ईश्वरउवाच ।

इन्द्रजालंप्रवक्ष्यामि पार्वतिशृणुयत्नतः ।
येनविज्ञातमात्रेण ज्ञायतेसर्वकौतुकम् ॥ १ ॥

अर्थ--शिवजी बोले हे पार्वति ! अब इन्द्रजाल को वर्णन करताहूं जिस के जानने मात्र से सर्व कौतुक जानेजाते हैं ॥१॥

तत्रादौ भूतकरणम् ।

आदौभूतकरंवक्ष्ये तच्छृणुष्वसमासतः ।
भल्लातकरसेगुंजाविषचित्रकमेवच ॥ २ ॥

अर्थ--प्रथम भूतकरण कहताहूं सावधान होकर श्रवण करो भिलाये के रस में घुँघची, विष, चीता ॥ २ ॥

कपिकच्छुकरोमाणिचूर्णकृत्वाप्रयत्नतः ।
एतच्चूर्णप्रदानेन भूताकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥

अर्थ--किवांचके रोम इनको मिलाय पीसकर महीन चूर्ण

१—गुणाताउकपंचांग वेष्टितंकनकं तथा ।
दृष्टिबाणेनदृष्टिर्वधं नान्यथाशंकरोदितम् ॥

करे इस चूर्ण के देने से, भूत उसको पकड़लेता है॥ ३ ॥ इति भूतकरणम्॥

अथ भूतनिवारण चिकित्सा।

चिकित्सांतस्यवक्ष्यामि येनसंपद्यतेसुखम्॥
उशीरंचन्दनंचैव प्रियंगुतगरंतथा॥ ४ ॥
रक्तचन्दनकुष्टंचलेपो भूतविनाशक॥ ५ ॥
ॐ नमोभगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनीकुर्वती स्वाहा॥ शताऽभिमन्त्रितम् कृत्वाततोसुस्थो भविष्यति॥ ६ ॥

अर्थ—अब भूतकी चिकित्सा को कहता हूं जिस के करने से सुख होता है। खस, चन्दन, कागनी तगर तथा लाल चन्दन, कूट, इन औषधियों का लेप भूतबाधा को विनाशकरता है॥४।५॥ ॐ नमोभगवते॰ इत्यादि मन्त्र से सौवार अभिमन्त्रित करे तो इन के करने से, आनन्द चित्त होजाता है॥६॥ इति भूतचिकित्सा॥

अथ ज्वर नाशकमंत्र॥

ॐ नमोभगवतेरुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय२ कृष्णपिंगलफट्स्वाहा॥
अनेनज्वरमावेशयति, ॐ नमोभगवते रुद्राय छिंधि२ ज्वरस्यज्वराज्ज्वलित करालशूलपाणे हूंफट् स्वाहा॥
एषानिग्रहंकरोति॥ ॐ नमोभगवतेरुद्राय भूतादिपति हूंफट्स्वाहा। सर्वज्वरानुपशाम्यति

अर्थ—यह उक्त मंत्र लिखकर दाहनी भुजापर बांधनेसे सर्व प्रकार के ज्वर शान्त होजाते हैं ॥ इति ॥

अथ शरीररक्षा मन्त्र ।

इन्द्रजालंविनारक्षांनभवतीतिनिश्चितम् ॥
रक्षामंत्रोमहामंत्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥
ओंनमोपरब्रह्मपरमात्मनेममशरीररक्षांकुरुकुरु स्वाहा ॥ १०८ जपात्सिद्धिः ॥

अर्थ—इन्द्रजाल रक्षा बिना कुछ निश्चय नहीं होता है, इस हेतु सर्व सिद्धिके देनेवाला उपरोक्त रक्षा मंत्र महा मंत्र है ॥

तन्त्रकौतुकम् ।

भौमवारेसर्पमुखेक्षिसंकार्पासबीजकम् ।
उद्भवंबीजकार्पासं ज्वलयेरंडतैलके ॥ १ ॥
सद्वर्तिंज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद्भवतिध्रुवम् ।
वर्त्तिशांतिःप्रकर्त्तव्यामहाकौतुकशांम्यति ॥ २ ॥

अर्थ—मंगलवार के दिन सांप के मुख में कपास के बीज बोवे फिर उन बीजों में उत्पन्न कपास की बत्ती बनावे अंडी का तेल दीपक मे डाल देवे ॥ १ ॥
फिर उस पूर्वोक्त कपास की बत्ती को रात्रों के समय जलावे तो सब पदार्थ सर्प समान उस घर में दीख पड़ें जो बत्ती शांत कर देवे तो सर्व कौतुक शांत होजावे ॥ २ ॥

महाकौतुक ।

यानिकानिचजीवानि जगतस्थलमेवच ।

१—इसी प्रकार कपासके बीज बिच्छु तथा उल्लू तथा बिल्ली के मुख में बोने से फिर उसी प्रकारके जलाने से वही २ पशी दीख पड़ते हैं

अर्थ बिलाईकन्द और कटेली की जड को सरसों के तेल में भावे फिर जिसके मुख पर मंत्र पढ़ कर छोडे उसकी दृष्टि बन्द होजावे ॥

विक्षिप्तप्रयोग ॥

उल्लूविष्टांगृहीत्वारवेरंडतैलेनपेषयेत् ।
यस्यांगेनिक्षिपेद्बिन्दु विक्षिप्तोजायतेनरः ॥ १ ॥

अर्थ—उल्लू पक्षी की विष्ठा को लेके एरंड के तेल में डाल देवे फिर उसको जिसके अंग पर एक बिन्दुमात्र छिडक देवे तो वह मनुष्य विक्षिप्त होजाता है ॥

अथाग्निकौतुक ।

सिंदूरंगन्धकंतालं समंपिष्ट्वामनःशिलाम् ।
तल्लिप्तवस्त्रशिरसि अग्निश्चदृश्यतेध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ—सेंदुर, गन्धक, हरताल मनसिल इनको बराबर लेकर पीसलेवे फिर उसको कपडे पर लेपकरे फिर उसको शिरसे ओढे तो निश्चय अग्नि समान दीखे ॥ १ ॥

अद्भुतकौतुक ।

श्वेतांजनंसमादाय पुष्पागस्त्यरसेनच ।
पिष्ट्वासप्तदिनंयाव दष्टमेन्हियथाविधि ॥१॥
अंजनंचांजयेन्नेत्रे पश्यतेचाह्नितारकम् ॥२॥

अर्थ—सफेद सुरमाको लेकर अगस्तके फूलोंके रसमें सात दिन पर्यंत घोटे फिर आठवेंदिन यथा विधिसे उस सुरमेको नेत्रों में आंजे (अंजन) करे तो दिन में तारे दिखाई देवें ॥ १ ॥ २ ॥

अपूर्वकौतुक।

कुक्कुटस्यांडमादाय च्छिद्रेणपारदंक्षिपेत्।
सम्मुखेभास्करं कृत्वा आकाशंगच्छतिध्रुवम्॥१॥
विनामंत्रेणसिद्धिश्चनान्यथाशंकरोदितम्॥ २ ॥

अर्थ—मुर्गे के अंडे को लेके उस में पारा भरदो और सूर्य्य के सन्मुख रखदेवो तो वह अंडा निश्चय आकाश को उड़जावे अर्थात् उछलने लगेगा विना मंत्र का यह प्रयोग शिवजीका कहा भया सत्य है॥ १ ॥ २ ॥

अथ दुग्धकौतुक।

अर्कक्षीरंवटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरंतथा।
गृहीत्वापात्र के क्षिप्तं जलपूर्णंकरोतिच ॥ १ ॥
दुग्धं संजायतेतत्रमहाकौतुककौतुकम्।

अर्थ—आकका दूध, वटवृक्ष का दूध, गूलर का दूध इन को लेके पात्र में डाले फिर उस में जल भरदेवे तो दूधही प्रतीत होवेगा यह जलसे दूध बनाने का महा कौतुकखेल है॥ १ ॥ २ ॥

अथ वाक्यसिद्धिः।

कृतिकायांस्नुहीवृक्ष वन्दांचधारयेत्करे।
वाक्यसिद्धिर्भवेतस्यमहाश्चर्यमिदंजगत् ॥ १ ॥

अर्थ—कृतिका नक्षत्रमें निम्न लिखित मंत्र पढ़कर थूहर के

१—सरसों को कुतिया के दूध में भिगोय छाया में सुखाय जमीन पर रखे सब ऊिडके वृक्ष तत्काल उत्पन्न हो। दुद्धिके दूध में भी होता है इसीसे आम्रवृक्ष होता है। २१ बार मुत्तावे आम्र॥

वृक्ष का बांदा हाथ में बांधे तो वाक्य सिद्धि होवे यह महा आश्चर्य युक्त प्रयोग जगत् में शिवजीने कहा है ॥ १ ॥

अनेनग्राहयेत्स्वाति नक्षत्रेबदरीभवम् ।
वन्दाकंतत्करेधृत्वा यद्वस्तु प्राध्यतेजनैः ॥ २ ॥

अर्थ- -स्वाति नक्षत्र में निम्न लिखित मंत्रसे बदरी (बेरी) के वृक्षका बांदा लाकर हाथमें धारण करनेसे जिस जिसवस्तुकी कामनाकीजाय वहउसी समय सबकामनापूर्ण होजातीहै॥२॥इति।

परमाश्चर्य्य कौतुक ।

शिव उवाच ।

मातुलिंगस्य बीजेन तैलंग्राह्यंप्रयत्नतः ।
लेपयेताम्रपात्रेतन्मध्यान्हेचविलोकयेत् ॥ १ ॥

अर्थ---शिवजी बोले। कि हेप्रिय! बिजोरा नीबू (कठानीबू) के तेल को यत्न से निकाल कर ताम्रपत्र पर लेप करके मध्यान्ह समय ताम्रपात्र को सूर्य के सन्मुख करके देखे ॥ १ ॥

रथेनसहचाकारं दृश्यतेभास्करोध्रुवम् ।
विनामंत्रेणसिद्धिःस्यात् सिद्धियोगमुदाहृतम्॥२॥

अर्थ—तो रथ सहित सूर्य भगवान् पूर्ण आकार निश्चय दीखते हैं यह बिना मंत्र का प्रयोग सिद्ध होता है आश्चर्यहै॥२॥इति

विचित्रप्रयोग ।

भौमवारेग्रहीत्वातु मृत्तिकांरिपुमूत्रतः ॥
छुकलायामुखेक्षिप्ता कंकवृत्तंचबंधयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—मंगलवार के दिन शत्रुके मूत्रसे मिट्टी को ग्रहण करके

गिर्गिटके मुख में रखकर बंद करदेवे और धतूरेके वृक्षको लाकर बांधदेवे ॥ १ ॥

मूत्रबंधंभवेतस्य उद्धृतेतुपुनःसुखी ।
विनामंत्रेणसिद्धिःस्यात्सिद्धियोगमुदाहृतम् ॥२॥

अर्थ—तो उस शत्रु का मूत्र बंद होजावे फिर जब वह खोल लेवे तो मूत्र खुलजावे यह विना मंत्रका प्रयोग सिद्धहै ॥ इति

मृतसंजीवनीविद्या ।

गायत्रीप्रथमंपादं त्र्यम्बकपादेकंतथा ।
गायत्रीद्वितीयंपादं त्र्यम्बकंद्वितीयंतथा ॥ १ ॥
गायत्रीतृतीयंपादं त्र्यम्बकं शेषपादं ॥ २ ॥

मन्त्रोयथा ।

ओंतत्स वितुर्व्वरेण्यंत्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं भर्गो देवस्यधी महि उर्वारुकमिव गन्धनाथ धियोयोनः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥

अर्थ—शुक्राचार्य से उपासना करा हुआ मृत्युंजयका मन्त्र यथा। प्रथम गायत्रीका पहिला भाग फिर गायत्रीका दूसरा पाद और त्र्यम्बकका दूसरा पाद इसके उपरान्त गायत्रीका तीसरा पाद और त्र्यम्बक मंत्र का भी तीसरा पाद उच्चारण करने से शुक्रोपासित मृत्युञ्जय मंत्र होता है यह मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखा है इस मंत्र को विधि पूर्वक सेवन करने से सर्व कामना सिद्धि होती है ॥ इति मृतसंजीविनीविद्या ।

अथ मन्त्रसिद्धेरुपायः।

शिव उवाच।

सम्यगनुष्ठितोमंत्रो यदिसिद्धिर्नजायते।
पुनस्तेनैवकर्तव्यं ततःसिद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ—शिवजी बोले हे प्रियः! अब मंत्रसिद्धि का उपाय कहाजाता है कि भले प्रकार अनुष्ठान करनेपर भीजो मन्त्र सिद्धि न होवे तो फिर पहिले की तरह इस प्रकार पुन करने से निश्चय मन्त्र सिद्धि होजावे है ॥ १ ॥

पुनरनुष्ठितोमंत्रो यदिसिद्धोनजायते।
पुनस्तेनैवकर्तव्यं ततःसिद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥ २

अर्थ—यदि दूसरीवार के करने से सिद्धि नहोवे तो तीसरी वार फिर पहिले की भांति कार्य करे इस भांति करने से अवश्य मन्त्र सिद्ध होता है ॥ २ ॥

पुनःसोऽनुष्ठितोमंत्रो यदिसिद्धोनजायते।
उपायस्तत्रकर्तव्याः सप्तशंकरभाषिताः ॥ ३ ॥

अर्थ—तीनवार अनुष्ठान करने पर जो मन्त्र सिद्ध नहीं होवे तो महादेव के कहेहुए सात उपायों को करना चाहिये ॥ ३ ॥

भ्रामणंरोधनंवश्यं पीडनंशोषपोषणे।
दहनान्तंक्रमात्कुर्यात्ततःसिद्धोभवेत्पुनः ॥ ४ ॥

अर्थ—भ्रमण, रोधन, वशीकरन, पीडन, शोषण, पोषण, और दाहन क्रम पूर्वक इन सात उपायों को करने से निश्चय पूर्वक मन्त्र सिद्ध होता है ॥ ४ ॥ इतिमन्त्रसिद्धि रुपायः ॥

*— भरे मिले काट सो लाय नीछा योधा पीत मुलाय ॥

आश्चर्य कौतुक।

सद्यो मृतस्य प्रवार्क क्लिन्नवस्त्रं करीरके।
दृढीकृतन्तु कीलेन सुतेनारिनिधारयेत् ॥ १

अर्थ—मृतक पुरुष के कंठ का अर्क निकालकर उस में स्वच्छ वस्त्र भिगोवे उस वस्त्र को वांस में कीलसे ठोककर मैथुनकरनेवाले स्त्री पुरुष की शय्या के समीप रखदे ॥ १ ॥

सकृद्युक्तो प्रजायेतान्तदानारी नरौ भृशम्।
मोचोवस्त्रस्य वशाच्चेन्मुक्तिपूर्णांतदातयोः ॥ २ ॥

अर्थ—तो वह दोनों स्त्री पुरुष परस्पर जुड़े के जुड़े रहजांय किसी प्रकार अलग नहीं होसकें जब उसवांस की कील निकाली जाय और वस्त्र उस वांस से अलग होजाय तब वह दोनों मैथुन करनेवाले अलग होजाते हैं उस समय देखनेवालों को महा आश्चर्यकौतुक होता है ॥ २ ॥

समुद्रगामिनीनदी ततोयतीरमृत्तिके।
सुभेरवस्यवाहने रतौरतेतयोरपि ॥ ३ ॥

अर्थ—समुद्र में गिरनेवाली वडी नदी के किनारे की मट्टी और कुत्ते के वाल उसी स्वान के वालों को उसके विषय करने के समय जो वीर्य्य मूत्र रज टपकता है उस में रगकर ॥ ३ ॥

इमान्तुघटिकांयोऽसौ कीलयुक्तांकरोतिच।
सर्वासनानां वंधंतु मोचोकस्यास्य पानतः ॥ ४ ॥

अर्थ—वेरकी वरावर उसकी गोली वनाले वह गोली जिस किसी को देतो समस्त का वंधनहो किसी प्रकार नखुल सकें फिर उसी का अर्क पीने से छूटसक्ता है यह वडा आश्चर्य है ॥ ४ ॥

इति आश्चर्य कौतुक ॥

चोरभय निवारण कौतुक।

टंकलोहात्परम्भेद जातार्केण निषेचयेत्।
सहस्त्रधातु तत्पृष्ट मनुमेकं लिखेन्नरः ॥ १ ॥

अर्थ—सुहागा लोह चून, पाषाणभेद, इन का अर्क निकाल कर हजार बार आसन पर छिड़ककर उसको शुद्ध करे फिर उस आसन पर बैठ कर इस मंत्र को इन द्रव्यों के अर्क से रंगे हुए पत्रों पर सौ १०० मन्त्र लिखे ॥ १ ॥

पिशाचिनी गणेशान्ते चोरिणीति पदं तथा।
नलात्परोमनुरयंभितिकुड्याश्र मेदकम् ॥ २ ॥

अर्थ—" ओं नमस्ते चौरिणी पिशाचिनि शमय शमय स्वाहा" इस बीस अक्षर के मंत्रका जप करे तब सिद्ध होता है ॥ २ ॥

एतत्प्रभावतः कोपि मेघशब्दं शृणोतिन।
योगनिद्रेविष्णुमाये सर्वान्निद्रयनिद्रय ॥ ३ ॥

अर्थ—इस मन्त्रका ऐसा प्रभाव है कि महागम्भीर मेघका शब्द भी हो तौ भी वह पुरुष चैतन्य न होवै विष्णु माया से योग निद्रा होजाती है ॥ इति चौरभय ॥

रात्रि प्रदर्शक कौतुक।

आदौपित्वाद्विधार्कन्तु धत्तूरजलभावितम्।
मासंस्रोतोञ्जनं तेनां जिताक्षो निशिपश्यति॥१॥

अर्थ—प्रथम विधि नाय औषधिका अर्क पिये फिर पीछे धतूरे का भिगोया हुआ पानी लगातारहे अर्थात् आंजता रहे अजन

*—वरछे के अर्कसे घरमे छिड़के या रक्खे तो चोरभय नहीं होताहै।

की समान तो वह पुरुष एक महीने में जिताची अर्थात् एक महीने में नेत्रोकी ज्योतिको जीतले और रातको देखे स्वयं नही दीखे ॥ १ ॥

इति रात्रिप्रदर्शक कौतुक ॥

आवेशविधि कौतुक।

आसर्ष्य केतुपीत्वादौ पश्चात्तद्घ्राणमाचरेत्।
प्रेतास्यगंपुरंकृष्णा धूपितं चर्चितामिना ॥ १ ॥

अर्थ—भौंरी का अर्क निकालकर पहिले उसको पिये अथवा सूंघे फिर आवेश (मृगिरोग) का नाम लेवै और मृतक के मुख में रक्खा गूगल से चिताकी धूनी दे ॥ १ ॥

प्रेताहितस्य धूपेन जगदावेशितं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ—फिर पीछे रालकी धूप देने से संपूर्ण संसार अपस्मारकी समान रोग ग्रसितसा होजाता है ॥ २ ॥

इति आवेश विधि ॥

दूरदेश गमन कौतुक।

शरपुंखाकोकिलाक्षः काकजंघाच भृंगकः।
एतेश्वेताश्च ह्रींबीजं पुष्यर्के ज्येष्टयोद्धरेत् ॥ १ ॥

अर्थ—शरपुखा, कोकिलाक्ष (तालमखाना) कौआ ढोंटी, और भंगरा इनका अर्क चीतेके चूर्णके साथ जब पुष्य नक्षत्रपर सूर्य आवे वा जेष्ठा नक्षत्रमें निकाले ॥ १ ॥

पीत्वातदर्क मेतेषां मूलैस्तु कटिवन्धनम्।
वायुवद् भ्रमतेपृथ्वीं प्रयासा पासवर्जिताः ॥२॥

अर्थ—इस अर्कको पीकर इन औषधियोंकी जड़ोंको कमरसे बांधे तो पृथ्वीपर पवनकी वेगके सदृश सुखसे विचरताहै ॥१॥ इति दूरदेश गवन

पूर्वजन्मदर्शक कौतुक।

गोदुग्धार्केऽञ्जनं पुष्पे सेन्द्रजालिककज्जलैः।
दर्प्पणेदृश्यतेरूपं पूर्वजन्मसमुद्भवम् ॥ १ ॥

अर्थ—गायके दूधके अर्कमें सुगन्ध वाले फूलोंको भिगोकर इनके इन्द्रजाल रूपी कज्जलसे दर्पणको मांजकर देखैतो अपने पिछले जन्मका स्वरूप यथावत् दीखताहै ॥ १ ॥ इति पूर्वजन्मार्थक

योनिलिंग सुगन्ध कौतुक।

केतक्यर्को वहुशोगंधः पाषाण धूपितोदशधा।
अभ्यक्त लिंभोगाद्यो निर्लिंगसुगंधस्यात् ॥ १ ॥

अर्थ—केतकी के अर्क से बुझाया हुआ और दशधूपों से सुवासित कियाहुआ गन्धक * के ऊपर लेप करके भोग करने से स्त्री की योनि और पुरुष का * सुगन्धित होजाता है ॥ १ ॥ इति सुगन्धि कौतुक ॥

लिंगोत्थान कौतुक।

श्वेतार्कतूलवर्त्यावराहमेदःप्रदग्धिकांकृत्वा।
स्तब्धपुरुषवरांगंधारयतिचसर्वरसिकलाम् ॥ १ ॥

अर्थ—सफेद आककी रुई, सुअरकी चर्बीके द्वारा गीलीकर के *पर लेप करे, फिर रातभर स्त्री संगम करनेसे किसीप्रकार *शिथिल नहीं होताहै ॥ १ ॥ इति लिंगोत्थान ॥

१—मदिरमें बैठकर घीकुआरके पट्ठेका अर्क और मैनशिल खरल कर तिलक लगानेसे तत्काल अदृश्य होजाताहै।

अथ कालिकासिद्धिः।

ओं ह्रां ह्रीं कालिकरालिनि ह्रीं ह्रीं चींचांफट्।
इमंमंत्रं महेशानि जपेदष्टोत्तरंशतम्।
अजामांस वलिदद्या द्रक्त पुष्पै तथैवच ॥ १ ॥
सप्ताहाभ्यां ततःसिद्धि प्रसन्ना कालिका भवेत्।
यंयंप्रार्थयते वस्तु ददातिच दिनेदिने ॥ २ ॥

अर्थ—इस उपरोक्त मंत्रका १०८ बार जप करना तथा बकरेका मांस वालिमें देना लाल पुष्पोंसे पूजा करनी स्मशान के बीचमें एक दिनमें छः वलि देना चाहिये तव पंदरह दिनमें कालिकादेवि प्रसन्न होकर मन माना वरदान देवेगी॥ इति कालिका सिद्धिः॥

इतिश्री नजीबाबाद निवासी पंडित कुन्दनलालात्मज
पंडित गौरीशंकरशर्मा तंत्रशास्त्रीकृत सिद्धिदाता
भा०टी० सहित तृतीय खंड सम्पूर्णम्॥



श्रीगणेशायनमः ।

मन्त्रसिद्धि भाण्डागार ।

(चतुर्थखंड)

सर्वकार्य्य सिद्धिकरणयंत्र ।

शिवउवाच ।

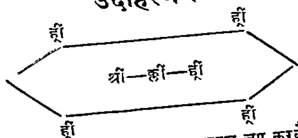
श्रींबीजंकामबीजंचलज्जाबीजंतथैवच ।
उद्धरेद्यत्नतोदेवि कार्य्यसिद्धि समुत्सुकः ॥ १ ॥

अर्थ—हे प्रिया ? यह गुप्तमंत्र तुमसे कहताहू पहिले श्रींबीज कामबीज, और लज्जाबीज यत्न पूर्वक उद्धार करै जैसेकि, श्रीं, ह्रीं, क्लीं, ततः त्रिपुर देवि अमुकं मिमतर कुरुकुरु स्वाहा इत्या दि मत्र विन्यस्त करै ॥

सहस्रेण दशैनेव जपस्य शृणुपार्वति ।

मृत्तिकायांताम्रपीठे भूर्ज्जपत्रेतथैवच ॥ २ ॥

उदाहरण ।

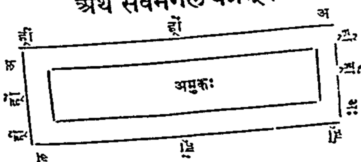


अर्थ—फिर इस उद्धृत मंत्रका दशसहस्र जप करके मृत्तिका का पात्र या ताम्रपीठ (तांबेका पत्र) अथवा भोजपत्र पर घिसे हुए चन्दनसे एक षटकोण यंत्र अंकित करके उसके मध्यमें वह बीज रखे ॥

चन्दनेन सुरक्तेन षट्कोणं यंत्रमावहेत् ॥ ३ ॥
मन्त्रेणानेन दिव्येन धृतेन कण्ठ देशतः ।
दूरतो धावतेनिष्टं प्रीताः स्युः सर्वदेवता ॥ ४ ॥

अर्थ—हे प्रिया ! इस दिव्य यंत्रको कंठमें धारण करनेसे अनेक अनिष्ट निकट नहीं आते दूरसे दूर भाग जातेहैं तथा सम्पूर्ण देवता प्रसन्न होतेहैं ॥ ४ ॥ इति सर्व कार्यसिद्धि यंत्रम ॥

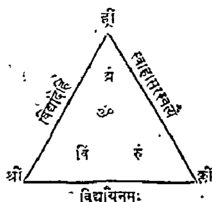
अथ सर्वमंगल यंत्रम् ।



गोरोचनायभूर्ज्जपत्रे लिखित्वा देवस्थाने स्थापिते स्मिनदेवि। ध्रुवमेवधनं शान्तिःसर्वेषां मनुग्रहो लभ्यते॥ १॥

अर्थ—इस यंत्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर देवता के स्थानमें इस को अस्थापित करे इस प्रकार विधि पूर्वक इस यंत्र की क्रिया करने से निश्चयधन, शान्ति, और सब का उस के ऊपर अनुग्रह होजाता है॥ १॥इतिसर्वमंगलयंत्र।

अथ विद्यायन्त्र।

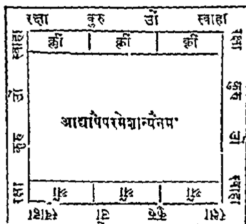


श्रीमहादेव उवाच।

श्रूयतामभिधास्यामिविद्यायंत्रमनुत्तमम्।
धारणद्यस्यवैदेवि विद्यावान्भवतिध्रुवम्॥ १॥
भूर्ज्जपत्रे लिखित्वेदं निजरक्तेनभामिनी।
धारयेत्कंठदेशेन बाहुमूलेच दक्षिणे॥ २॥

अर्थ—श्री शिवजी बोले हे प्रिय ! अब श्रेष्ठ विद्या यंत्र कहूंगा कि जिसके धारण करने से विद्या प्राप्त होजाती है ॥ १ ॥ हे देवि ! अपने रुधिर से यह यंत्र भोजपत्र परलिखकर कंठमें धारण करै बाहुमूल में ॥ २ ॥ इति विद्यायंत्र ।

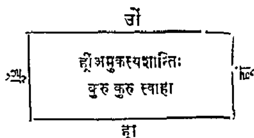
अथरक्षायन्त्र ।



भूर्जपत्रेलिखित्वेदं वक्षोरक्तेनपार्वति ॥
देवसन्मुखमागत्य धातवंधारयेतशुभम् ॥ १ ॥

अर्थ—हे पार्व्वति ! अपनी छाती के रुधिर से भोजपत्र पर यह यंत्र अंकित करके देवता के सन्मुख आयस्वर्णादि धातुद्रव्य के बीच में रखकर यथा विधि से धारण करै॥ १ ॥ इतिरक्षायंत्र ।

अथ शांतिःयंत्र।



भूर्जपत्रे गोरोचनया यन्त्रमध्ये यस्य नामानि लिखित्वा देवस्थाने कस्मिश्चिदपि संस्थापिते तस्यसर्वथैवकल्याणं भविष्यति ॥ १ ॥

अर्थ—इस यंत्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर यन्त्र के बीच में जिसकी शान्ति करनी हो उसका नाम लिखे इस प्रकार यंत्र को तैयारकर किसी देवता के स्थान में यंत्र को स्थापन करे ऐसा करने से सर्व प्रकार से कल्याण होताहै॥ १ ॥

इतिशांतिः यंत्रः।

अथ आपुदुद्धारयंत्र।

श्रीपार्वतीप्राह।

अधुनाब्रूहिमेनाथ आपदुद्धारनामकम्।
यन्त्रयन्त्रविदांश्रेष्ट श्रोतुंमेलालसावहु॥ १ ॥

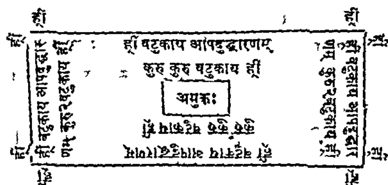
अर्थ—श्री पार्वतीजी प्रश्नकरती हैं कि हे नाथ! अबआप आपदुद्धार नामक यंत्र कीर्तन करो मेरी सुन्ने की बड़ी इच्छा करती है आप यंत्रों के सागर हैं॥ १॥

श्रीमहादेवउवाच ।

समाधिध्यानयोगेन परमेनमहेश्वरि॥
इदंवैयंत्रकंदिव्यं प्रादुर्भावितमुत्तमम् ॥ २ ॥

अर्थ—श्री महादेवजी बोले हे परमप्रिय महेश्वरी ! हमने यह यत्र बड़े समाधी और ध्यान के योग से उत्पन्न करा है ॥ २ ॥

यन्त्रस्य आकृति ।



स्वर्णेवारजतेन्यस्य धारयेत्कंठदेशतः ।
दक्षिणेवातथावाहौ आपदस्तस्यनश्यति ॥ ३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य उपरोक्त यंत्र को भोजपत्रके ऊपर खैंचकर सोने या चांदी में मढ़ाकर (तावीज) गलेमें अथवा दाहने हाथ में बांधते हैं वह पुरुष सम्पूर्ण आपत्तियों से छूटकर आनन्द भोगता है ॥ इतिआपदुद्धारयत्रम् ॥

तंत्रविद्या ।

सिद्धीश्वरंमहातन्त्रंकालीतन्त्रंकुलार्णवम् ।

तन्त्र विद्या बिलकुल धर्मके ऊपर जमीहुई है। द्रव्य के गुणसे कुछ बातें सिद्ध होतीं हैं अर्थात् सच्ची होती हैं परन्तु तन्त्र कहते हैं कि सिद्ध मनुष्यों के सिवाय दूसरे पुरुषों को उन औषधियों का व्यवहार करना फलीभूत नहीं होता है। इस कारण प्रथम हमने वहर तन्त्र लिखे हैं जो प्राणी मात्र सुगमता से करसके अब हम कुछ तन्त्रोंके नाम आपको सुनाते हैं तन्त्र अगणित (बे शुमार) हैं परन्तु प्रसिद्धर (६१) तन्त्रोंके नाम कहता हूं। औरर उपतंत्रभी अनेकर हैं परन्तु वह नहीं लिखे हैं॥

ज्ञानार्णवंनीलतंत्रंफेतकारीतंलमुत्तमम्॥ १॥
देव्यागमंउत्तराख्यं श्रीक्रमंसिद्धियामलम्।
मत्स्यसूक्तंसिद्धिसारं सिद्धिसारस्वतस्तथा॥२॥
वाराहीतंत्रंदेवेशि योगिनीतंलमुत्तमम्।
गणेशविमर्षिणीतंत्रं नित्यतंत्रंशिवागमम्॥ ३॥
चामुण्डाख्यंमहेशानि मुण्डमालाख्यतंत्रकम्।
हंसमाहेश्वरंतंत्रं निरूत्तरमनुत्तमम्॥ ४॥
कुलप्रकाशदंदेवि कल्पंगांधर्वकंशिवे।
क्रियासारंनिबन्धाख्यं स्वतंत्रंतंत्रमुत्तमम्॥ ५॥
सम्मोहनंतंत्रराजं ललिताख्यंतथाशिवे।
राधाख्यंमालिनीतंत्रं रुद्रयामलमुत्तमम्॥ ६॥
बृहत्श्रीक्रमतंत्रं गवाक्षंसुकुमादिनी।
विशुद्धेश्वरतंत्रंच मालिनीविजयंतथा॥ ७॥
समयाचारतंत्रंच भैरवीतंत्रमुत्तमम्।

योगिनीहृदयंतंत्रं भैरवंपरमेश्वरी ॥ ८ ॥
सनत्कुमारकंतंत्रं योनितंत्रंप्रकीर्तितम् ।
तंत्रान्तरञ्चदेवेशि नवरत्नेश्वरंतथा ॥ ९ ॥
कुलचूडामणितंत्रं भावचूडामणियकम् ।
तंत्रदेवप्रकाशञ्च कामाख्यानामकस्तथा ॥ १० ॥
कामधेनुःकुमारी च भूतडामरसंज्ञकम् ।
नालिनीविजयंतंत्रं श्यामलंब्रह्मयामलं ॥ ११ ॥
विश्वसारंमहातंत्रं महाकुलकुलामृतम् ।
कुलोऽडीशंकुब्जिकाख्यंयंत्रचिन्तामणीयकम् ॥ १२ ॥
एतानितंत्ररत्नानि सफलानियुगेयुगे ।
कालीविलासकादीनि तंत्राणिपरमेश्वरी ॥ १३ ॥
कालकल्पेसुसिद्धानि अश्वाक्रान्तासुभूमिषु ।
महाचीनादितंत्राणि अविकल्पेमहेश्वरि ॥ १४ ॥
सुसिद्धानिवरारोहे रथाक्रान्तासुभूमिषु ॥ इति ॥

अर्थ—यह उपरोक्त इकसठ (६१) तंत्र मुख्यर हैं हरएक तंत्रमें लिखा है कि जिस पुरुषने तांत्रिक धर्म ग्रहण नहीं कियाहै और जो मंत्रसे सिद्धि नहींहै वह किसी प्रकारभी कोई अद्भुत कार्य नहीं करसक्ता इसकारण तांत्रिक धर्मकी मूल बातें नीचे लिखतेहैं।

तांत्रिक धर्म का तात्पर्य शक्तिपूजा करना है शक्ति नाम पार्वती जीका है। पुराणों में अनेकर देवियों का जो वृतान्त लिखा है तांत्रिक लोग उनको ग्रहण करके देविकी उन पित्तर मूर्तियोंको पूजते हैं। विशेषकर पुराणों में लिखाहुआ देविकादश महाविद्या रूपही तांत्रिक लोगों को अत्यंत प्यारा है। इन मूर्तियों का अलगर समयमें ध्यान और पूजा करके तांत्रिक पुरुष सिद्ध होतेहैं

शक्तिपूजाके अनेक२ विधान हैं अर्थात् माता, भगिनि, स्त्री दासी समान समझकर भिन्न २ प्रकार से देविकी पूजा करते हैं। हरेक तंत्र में देविजी के अनेक सिद्धि चमत्कारी भरी पड़ी हैं। तंत्रों के बीचमें एकबात गुप्तभी है अर्थात् पूजा के सब प्रकार नहीं लिखे हैं गुरुलोगों ने चेले के सिवाय और किसी को कुछ नहीं बताया इस प्रकार चेलेही चेलों में यह बात गुप्त चली आती है पुस्तकोंमें प्रकाशित नहीं हुईथी परन्तु हमारा यह विश्वासनहीं है कि विना गुरुकी सहायताके इसकी सिद्धि नहीं होती। मन वचन कायसे परिश्रम करनेपर शीघ्र अथवा देरमें सिद्धि प्राप्त होई जातीहै। क्योंकि लिखाहै विद्या गुरुणांगुरु। इतितंत्रविद्या॥

इष्टदेवश्रीगंगादेविध्यानम्।

ओंचतुर्भुजांत्रिनेत्राञ्च सर्वावयवभूषिताम्।
रत्नकुम्भासिताम्भोजां वरदामभयप्रदाम्॥ १॥
श्वेतवस्त्रपरीधानां मुक्तामणि विभूषिताम्।
ततोध्यायेत्पुरुपाश्च चन्द्रायुतसमप्रभाम्॥ २॥
चामरैर्व्वीज्यमानाञ्च श्वेतच्छत्रोपशोभिताम्।
सुप्रसन्नांसुवदनां करुणार्द्रनिजान्तराम्।
सुधाप्लावितभूपृष्ठां स्वार्द्रगन्धानु लेपनाम्।
त्रैलोक्य नमितांगंगा देवादिभिरभिष्टुताम्॥४॥

इतिध्यात्वाम्बशिरसिपुष्पदत्वा। इतिगंगाध्यानम्॥

१—लज्जावन्तीकी पत्तीको दोनों हाथोंमे मले फिर स्त्रीको दिखलाकर मुट्ठी बांधले तोस्त्रीकी छाती गायबहो जायगी फिर मुट्ठी खोलने से उत्पन्न हो जायगी।

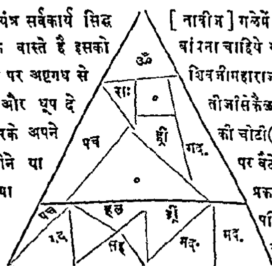
अथ स्वप्नसिद्धिः।

नमोजयत्रिनेत्राय पिंगलायमहात्मने।
रामायविश्वरूपाय स्वप्नाधिपतयेनमः॥ १॥
स्वप्नेकथयमेतत्थ्यं सर्वकार्यष्वशेषतः।
क्रियासिद्धिंविधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥२॥

अर्थ—ओंनमोजय० इत्यादि मंत्रसे देवताकी आराधना करके शिष्य शयन कियेरहे गुरु को उचित है कि दूसरे दिन शिष्य से स्वप्नका शुभांशभ पूछे कन्या, छत्र, रथ, दीपक, अटारी, कमल, नदी, हस्ती, वृषभ, माला, समुद्र सर्प वा पर्वत, घोड़ा, कच्चामांस मद्य, जो यह वस्तु स्वप्नमें दिखाई दें तो मन्त्रसिद्धि अवश्य होजायगी इसमें मिथ्या नहीं है॥ इतिस्वप्नसिद्धिः।

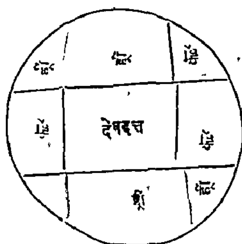
अथ सिद्ध यंत्र॥

यह यंत्र सर्वकार्य सिद्ध करने के वास्ते है इसको भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखे और धूप दे पूजा करके अपने पास सोने या चांदी या तांबे में मढ़ाकर



[तावीज] गलेमें बाहु में बांधना चाहिये यह यंत्र शिवजीमहाराजने पार्वतीजीसे कैलासपर्वत की चोटी (शिखर) पर बैठहुए इस प्रकार कहाहै परीक्षाकि याहुआहै

अथ दृष्टियंत्र।



यह यंत्र दृष्टि के (नजर) के वास्ते है इस यंत्रको कागजपर अष्टगंधसे लिखकर गले में बांधे वा तावीजमें रखकर पहिने तो नजर दूर होजाय तथा फिर कभी नहीं हो है इस दृष्टि यंत्र का बड़ा विलक्षण प्रभाव है॥ इति

अथ आधाशीशी यंत्र।

६२	४२
२११	७०

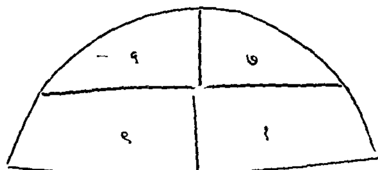
यह यंत्र स्याही से लिखकर कागजपर माथे से बांधे तो निश्चयपूर्वक आधाशीशीरोग नष्टहोजाय यह यंत्र गुप्त था। इतिआधाशीशीयंत्र॥

अथ कर्णपीडा यन्त्र।

म	ज	व
क	ग	जः
द	ज	दः

यह यंत्र कानपीडा के वास्ते रामबाण है इसको स्याहीसे लिखकर कागजपर कानमें बांधे तो निश्चय पूर्वक कानकी व्याधी झट से नष्ट होजाय। इतिकर्णपीडायंत्र॥

अथ वायगोला यंत्र ।



इस यत्र को कागजपर लिखकर रविवार के दिन और सूर्य्य के सन्मुख पानी में धोयकर पीवे तो तत्त्तणात् वायगोला जातारहै ॥

इति वायगोला यत्र ।

पुत्र उत्पन्नयंत्र ।

शंकरमातु — शकरपितु

कौरवारतलवपीपति (left side) — शंकररवेखवारादेप (right side)

४०	४२	४	९
१	३	४८	४२
४६	४९	५	८
२	७	४७	४४

पापी के,जारुदभि,

इस यत्रको गोरोचन से भोजपत्र पर लिख गुग्गुल की धूप देकर कंठ में बाधे ता जिस स्त्री के लडका न उत्पन्न होता हो या जीता नहीं हो तो निश्चय पूर्वक पुत्र उत्पन्न को करजीवे इस यत्र का वड़ा प्रभाव है यत्रको अच्छे नक्षत्रमें शुभमहूर्तमें लिखे सोने या चादी में मढाकर कठ में धारण करलेना ।

चुडैल पिशाचनी नाशक यंत्र ।

३७१००३ ७१३७१००
३७७००७७००३७००
३७७०० देवदत्त ३००

इस यंत्रको पीपलके पत्तेपर लिखके जिसस्त्रीको चुडैल पिशाचनी लगी होंय उसके कंठमें बांधना परंतु यंत्र को धूप देकर बांधे ॥

भूतप्रसन्न यन्त्र ।

त	त	त	तं
प	प	प	पं
दं	दं	द	दं
ल	ल	ल	ल

इस यन्त्र को सिरस के पेड के नीचे बैठ कर लिखे तो भूत देवि यक्ष अत्यन्त प्र-सन्न होंय ।

भूतनाशक यंत्र ।

८६	९६	२	८
७	३	९५	९२
९६	९१	९	१
४	६	९१	९४

इस यंत्रको दूधी के रस सूं लिखे भोजपत्र पर तावीज में मँढाकर कंठमें बांधे तो बालकको कभी भी भूतप्रेत बाधा नहीं होती है ।

अथ वचनसिद्धि यंत्र ।

६६	९३	२	८
७	३	६०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

यह यंत्र फुलीजन के रससूं लिख तावीज मँढाकर भोजपत्रपर लिखना फिर कंठमें पहिना तो शिवके प्रताप से वचन सिद्ध होय है ।

सर्वोपरि यंत्र।

ओं	ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यंत्रको भोजपत्र परलिख कर तावीज में कराकर कंठमें या वाहु में वांधे तो निर्भयहो जावे सुख में रहै ॥

भूतप्रदर्शकयंत्र।

	१४	२	८
[illegible]	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१७

इस यंत्र को गिलोय के रस से कागज पर या भोजपर लिखकर सिरहाने धर के सोवै तो स्वप्न में भूतही भूतदीखें ॥

हनुमान् सिद्धियंत्र।

न०	छं०	ज०	च०
दं०	दं०	च०	च०
ज०	छं०	जं०	धं०
छ०	न०	ज०	ह०

यह सिन्दूर से लिखकर सवालक्ष लिखै तो हनुमान् देव शीघ्र प्रसन्न होते हैं। कागज पर या भोज पत्र पर लिखै ॥

पक्षीबुलाने का यंत्र।

६	११,६८	२	७
६	३	१३	१४
७	१२	८	१
४	९	१६	१६

इस यंत्र को काठ के पाटापर लिखे आसन पर रखे तो अकस्मात सब पक्षी (जानवर) वहां आजावें ॥

व्यवहारवृद्धियंत्र।

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	९	५१	५५

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखे अनार की कलमसे तथा लाल चंदन से और अपने दर वाजे के बीच में गाडे तो अतिव्यवहारहोय॥

विच्छुसर्पादिनाशकयंत्र।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३२
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

इस यंत्र को भोजपत्रपर लिखकर मालकांगिनी रस से लिखे घट में शुद्ध जगह रखदेवे, सर्प विच्छु भागजायें॥

फलवृद्धि यंत्र।

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	९	८६	९७

यह यन्त्र जंभीरी के (नींबू) के रस से लिखे वृक्षको बांधे तो फल विशेष आवें विशेष कर अनारके वृक्ष में बांधे॥

दुष्ट स्वप्ननाशक यंत्र।

गं	छं	जं	चं
ह्रं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	चं
नं	छं	जं	टं

जिस पुरुष या स्त्रीको रात्रीको दुष्ट स्वप्न (जंजाल) दिखाई देते हों वह इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखके अष्ट गंध से गूगरकी धूप देवे तो निश्चय दुष्टस्वप्न नाश हों॥

इतिश्री नजीबाबाद निवासी पंडित कुन्दनलालात्मज पंडित गौरीशंकरशर्मा, संग्रहीतमन्त्रसिद्धिदाता भा०टी० सहित चतुर्थ खंड सम्पूर्णम्॥